सिंहासन बत्तीसी

बत्तीस पुतलियाँ

(सचित्र)



राजा विक्रमादित्य से संबंधित ३२ रोचक शिक्षाप्रद नीति कथाओं का सम्पूर्ण प्रकाशन ।

Yogesh Kumar Yada

भारतीय साहित्य अपने जन्मकाल से ही मानव मूल्यों का पोषक रहा है। ‘वृहत्कथा सरित सागर’ जातक कथाओं आदि के माध्यम से ऐसी रोचक कथाएं लिखी गयी हैं, जो इसका समर्थन करती हैं। ‘सिंहासन बत्तीसी’ भी इसी परम्परा की एक कड़ी है। विक्रमादित्य को माध्यम बनाकर राजा भोज को बत्तीस पुतलियों ने जो कहानियां सुनायी है, वह रोचक तो हैं ही पर अत्यन्त शिक्षाप्रद भी। मूल संस्कृत से इनका परिष्कृत रूपान्तर प्रस्तुत है।

मानव मूल्यों का आकलन करने वाली श्रेष्ठ कहानियां।

हमारा इसी परम्परा में सर्वोत्कृष्ट प्रकाशन

सरल रामायण 10
पंचतंत्र
हितोपदेश
विदुर नीति
चाणक्य नीति
चाणक्य सूत्र
विक्रम और बैताल
भर्तृहरि शतक
महाभारत
मनुस्मृति
भृगु संहिता
सुन्दर कांड
शिरडी के साईंबाबा

बड़ा सूचीपत्र मुफ्त मंगायें ।

सिंहासन बत्तीसी

[मूल संस्कृत से परिष्कृत रूप में प्रस्तुत]

प्रस्तुति
गोविन्दसिंह

साधना पॉकेट बुक्स

प्रकाशक : साधना पॉकेट बुक्स
39 यू० ए० बंग्लो रोड
दिल्ली-110007
दूरभाष : 2914161
2516715

संस्करण 1995

मूल्य . 20-00 रुपये

मुद्रक :
भाटिया ऑफसैट प्रिन्टैक्स
सी० 2/8, कृष्णा नगर, दिल्ली-51
फोन:- 2214246, 2224887



छोटा मुंह, बड़ी बात

छोटे मुंह, बड़ी बात शोभा नहीं देती है, पर जब लम्बू गडरिये का लड़का चन्द्रभान राजा भोज का सरे आम अपमान करने लगा, तो चतुरी चमार बरदाश्त न कर सका। उसने राजा के सिपाहियों से शिकायत कर दी।

सिपाही आये। चन्द्रभान की बातें सुन हैरान हो गये। उसे पकड़कर राजा भोज के सामने ले गये। भयभीत चन्द्रभान ने रो रोकर जब सब हाल कहा तो मंत्री और दरबारी चकित रह गये।

मंत्री बोला, "राजन् ! जहां आदमी उठता बैठता है, उसका प्रभाव पड़ता है। शायद उस जमीन में कुछ रहस्य है। पहले उसे देखा जाये।"

राजा ने मंत्री की बात मान ली। जगह का निरीक्षण किया गया तो कुछ रहस्य मालूम पड़ा। आखिर वह रहस्य क्या था ?

उज्जैन नगरी के आखिरी छोर पर कुम्हारों की बस्ती थी। कुम्हारों
बस्ती…मिट्टी के एक से एक पात्र बनाकर सुखपूर्वक अपना जी
यापन करते थे। बस्ती के आसपास मिट्टी के बड़े-बड़े ढूहे थे। मिट्टी
ही सुन्दर और चिकनी थी। इसके पात्र सरलता के साथ मजबूत
खूबसूरत बनते थे। साथ ही मिट्टी जल्दी पक भी जाया करती
सफलता के साथ व्यवसाय चलने के कारण कुम्हार सम्पन्न थे। उनके
गाय भैंसें, बकरियां थीं और उनको चराने के लिये चरवाहे गड़ेरिये
थे। बस्ती का गड़ेरिया लम्बू इस काम को कई पुश्त से करता आ रहा
उसका नाम बृजभान था, पर वह जरूरत से ज्यादा लम्बा था। लम्बा
कारण उसका नाम 'लम्बू' पड़ गया था। सब उसको इसी नाम से पु
करते थे।



चतुरी चमार के घर से लगा उसका अपना घर था। चतु
उसकी अनबन रहा करती थी। लम्बू को इसका गम न था
आराम से गांव के आसपास के क्षेत्र के लोगों के जानवरों को च
था। आसपास के क्षेत्र में मिट्टी के बड़े-बड़े ढूहे थे। कुम्हार
खोदते तो मजबूत ईंटें और मूर्तियां तथा घर गृहस्थी का सा

करता था। लोगों का कहना था कि पहले यहां राजा की बस्ती थी। भूकम्प के कारण पलक झपते तबाह हो गयी। बहुत सालों तक यहां कोई न आया। बाद में धीरे-धीरे कुम्हारों ने यहां बस्ती बनाना शुरू कर दी।

लम्बू गड़ेरिये का एक लड़का था। उसका नाम था चन्द्रभान।

चन्द्रभान देखने में अच्छा था, पर परले सिरे का भोंदू था। वह भी चराई का काम करता था, पर जानवरों को चराना छोड़कर वह किसी टीले पर चढ़कर सो जाया करता था। वहां जगह-जगह पर टीले थे। चन्द्रभान किसी पर भी चढ़कर सो जाता। उसकी ही तरह कुछ और लड़के भी यही काम करते थे, पर वह चन्द्रभान की तरह सोया न करते थे। खेल में लगे रहते और जानवरों की रखवाली किया करते थे।

चन्द्रभान हमेशा की आदत के अनुसार एक दोपहर एक टीले पर चढ़ गया और गहरी नींद में सो गया। सोकर उठा तो उसे बड़ा अजीब-सा लगा और उसने चिल्लाकर अपने हमपेशा लड़कों को पुकारा।

लड़के आ गये।

"क्या है रे ? क्यों चिल्ला रहा है ?"

चन्द्रभान बड़ी शान से बोला, "यहां का राजा कौन है ?"

सब लड़के एक दूसरे का मुंह ताकने लगे, पर एक लड़का बोल उठा, "हमारे राजा का नाम महाराजा भोज है।"

नाम सुनते ही चद्रभान का चेहरा तमतमा गया। वह चीख उठा, "उल्लू का पट्ठा है, राजा। गधा है। उसको न्याय करना नहीं आता। महामूर्ख है। प्रजा के साथ बड़ा अन्याय करता है। उसे पकड़कर हमारे दरबार में हाजिर करो।"

चन्द्रभान की कड़कती आवाज और उसका रोबीला स्वर सुनकर सब लड़के घबरा गये।

"पकड़कर हाजिर करो उस गधे को, हमारे सामने।"

लड़के डर गये।

एक बोला, "भागो यहां से। यह हमारे राजा को गालियां दे रहा है। अगर किसी ने सुन लिया तो इसके साथ-साथ हम सब भी मारे जायेंगे भागो।"

सब लड़के भाग गये। वह सब बेतरह डर गये थे, पर चन्द्रभान टी पर उसी शान से खड़ा धारावाहिक रूप में उज्जैन के राजा भोज के प्रति अपशब्दों का प्रयोग कर रहा था। ऊंचे टीले पर खड़े होकर चिल्ला-चिल्ल कर कह रहा था। उसका स्वर, उसकी आवाज दूर-दूर तक जा रही थी।

चन्द्रभान खूब बड़बड़ाता रहा। फिर वह टीले से उतर आया।

उतर आने पर सामान्य हो गया।

अपने सहयोगी लड़कों के पास गया। सब डरकर आंखें फाड़कर देख लगे।

"क्या बात है ? इस प्रकार क्यों देख रहे हो ?"

"तुम राजा को गालियां दे रहे थे। अगर किसी ने सुन लिया त राजा का सिपाही तुमको पकड़कर ले जायेगा।"

चन्द्रभान चुप रह गया। अपने होंठ काटने लगा। उसने लड़कों इस बात का कोई जवाब न दिया।

शाम को सब लौट आये। लड़कों ने चन्द्रभान की बातों की चर्चा शु कर दी। लम्बू के पड़ोसी चतुरी चमार ने सुना तो हैरान रह गया।

"ऐसा बक रहा था, चन्द्रभान।"

"हां।"

"अच्छा देखूंगा।"

चतुरी चमार को बदला लेने का मौका हाथ लगता दीखा।

अगली दोपहर वह उसी तरफ गया, जिस तरफ लड़के चरवाही क थे। चन्द्रभान फिर उसी टीले पर जाकर सो गया। सोकर उठा और उ चिल्लाना शुरू कर दिया। उसकी आवाज सुनकर कोई लड़का न आ तब चन्द्रभान टीले पर खड़ा होकर अनाप-शनाप राजा भोज के लिये लगा। चतुरी चमार हैरान रह गया। फिर वह बड़ा मगन होकर द हुआ चला गया।

उसे राजा का सिपाही मिल गया। सिपाही को उसने सब बतला

"क्या ? इस तरह बक रहा है ?"

"हां। चलकर सुन लो।"

चतुरी चमार सिपाही को अपने साथ लेकर टीले के पास

द्रभान टीले पर खड़ा बार-बार अपना कथन दुहरा रहा था। सिपाही ान रह गया, पर फिर उसका चेहरा तमतमा गया। वह लपक कर टीले चढ़ गया। चढ़ते समय बड़ा ही अजब-सा लगा पर कर्त्तव्य भावना से ित होने के कारण कोई ध्यान न दिया। टीले पर जाकर उसने चन्द्र-ा को एक थप्पड़ जड़ दिया और चिल्लाकर बोला, "चुप रह।"

फिर उसका हाथ पकड़कर घसीटता हुआ नीचे ले आया। चन्द्रभान चेहरे का रंग उड़ गया। वह गिड़गिड़ाने लगा।

"तू हमारे राजा को गालियां देता है।"

"नहीं, मालिक। मैं···मैं···मैं···तो···"

सिपाही उसे घसीटता हुआ राजमहल में ले आया। अपने प्रमुख ाकारी को उसने सूचना दी। सब हाल कहा। प्रमुख अधिकारी ने द्रभान को राजदरबार में पेश करने की आज्ञा दी।

ठीक समय पर चन्द्रभान को शाही कारागार से निकाल कर राज-ार में पेश किया गया। उस पर लगाया गया अभियोग सुनकर सभी ारी चकित रह गये।

आश्चर्य का विषय था। इतना छोटा लड़का और इतनी खतरनाक ं। छोटा मुंह, बड़ी बात।

स्वयं राजा भोज को बड़ा आश्चर्य लगा।

चन्द्रभान का बुरा हाल था। दोनों हाथ जोड़कर वह राजा के सामने ा था। थर-थर कांप रहा था। सब दरबारी हैरानी से देख रहे थे। ा छोटा और अबोध-सा लगने वाला अनपढ़ बालक इस प्रकार दुस्साहस कर गया?

"तुम टीले पर खड़े होकर क्या बक रहे थे?"

"सरकार-अन्नदाता। मैं नहीं जानता···।"

"क्या तुमको झूठमूठ फंसाया गया है···"

"अन्नदाता!" डरते-डरते चन्द्रभान बोला, "उस टीले पर जाते ही न जाने क्या हो जाता है?"

"क्या हो जाता है?"

"मैं नहीं जानता···महाराज।"

राजा भोज के पास बैठा मंत्री ध्यानपूर्वक सब देख सुन रहा था चन्द्रभान की हालत पर तरस आ रहा था। वह थर-थर कांप रहा था और बड़ी कठिनता के साथ उत्तर दे पा रहा था।

"चलो! हम उस टीले पर चलते हैं।--मंत्री ने कहा।

मंत्री चन्द्रभान को साथ लेकर अधिकारियों और सिपाहियों के साथ टीले के पास आया। चन्द्रभान कांपता-सा टीले पर गया। टीले पर चढ़ते ही उसका कांपना, डरना, थरथराना बंद हो गया। उसका शरीर तन गया। चेहरे पर अपूर्व तेज आ गया और हाथ उठाकर बोला, "कहां है राजा भोज। गधे को न्याय करना भी नहीं आता।

मंत्री हैरानी से होंठ काटने लगा। चन्द्रभान काफी देर तक बड़बड़ाता रहा। फिर नीचे आ गया। आते ही मंत्री के पैरों पर गिर पड़ा। मंत्री ने उसे क्षमा कर दिया।

मंत्री राजा भोज के पास आया। बोला, "महाराज! गड़ेरिये का बालक निर्दोष है। मैंने उसे क्षमा कर दिया।"

"क्या उस पर झूठा इलजाम लगाया गया था।"

"नहीं, महाराज! वह ठीक कहता था। जगह का मनुष्य पर प्रभाव पड़ता है। जहां वह उठता बैठता, सोता है, वहां का प्रभाव पड़ता है मेरे ख्याल से उस टीले के नीचे कुछ है!"

"खुदाई करके देखो।"

"मेरा यही विचार है, अन्नदाता।"

"तथास्तु।"

राजा भोज की आज्ञा पाकर मंत्री ने टीले की खुदाई शुरू कर दी रात दिन काम करने के बाद टीले की खुदाई करने पर एक बड़ा-सा सि सन निकला। जब वह साफ किया गया, तो उसकी कलात्मक बनावट चमक देखकर सब हैरान रह गये। बड़ी धूमधाम के साथ सिंहासन र भवन में लाया गया। उसकी बनावट और चमक देखकर राजा हैरान रह गये।

"बड़ा सुन्दर सिंहासन है।"

"महाराज! यह महाप्रतापी सम्राट विक्रमादित्य का सिंहासन प्र

ाता है।"

"तब तो मैं अवश्य इस पर बैठूंगा।"

"जो आज्ञा महाराज !"

मंत्री ने सिंहासन का शुद्धीकरण कर ब्राह्मणों से पूजन-अर्चन कराने के उपरान्त उसे राजदरबार में रखा। सिंहासन दमक रहा था। उस पर बत्तीस पुतलियां इन प्रकार बनी थीं, मानो सजीव हैं और अभी बोल उठेंगी। सिंहासन की कला, छटा देखते ही बनती थी।

शुभ मुहूर्त में राजा भोज सिंहासन पर बैठने के लिये आगे बढ़े।

ब्राह्मणों ने स्वतिवाचन शुरू कर दिया। अचानक सिंहासन हिला और यकायक एक पुतली साकार रूप में सामने आ गयी। उसने राजा भोज को रोक दिया।

"ठहरो राजा भोज। क्या तुम इस सिंहासन पर बैठने योग्य हो?"

राजा भोज और सारा दरबार इस पर आश्चर्य चकित रह गया।

"राजा भोज। क्या तुममें राजा विक्रमादित्य के समान गुण हैं। सुनो, मैं तुम्हें सुनाती हूं।" मेरी बात सुनकर तुम निर्णय करना कि क्या तुम इस योग्य से। मेरा नाम रत्नमंजरी है।"

पुतली बोलने लगी। राजा भोज और सारा दरबार स्तब्ध रहकर सुनने लगा।



रत्नमंजरी

! मेरा नाम रत्नमंजरी है। मैं तुम्हें बतलाती हूं कि विक्रमादित्य कौन थे और यह बत्तीस पुतलियों वाल सिंहासन उनको किस प्रकार मिला? राजा भोज, वीर पुरुष इस दुनिया में सब कुछ पा सकते हैं, कायर और आलसी, भा भरोसे रहने वाला आदमी कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता।"

सुनो राजा भोज।' रत्नमंजरी ने कहा। अम्बावती नगरी का राजा बड़ा योग्य शासक था। उसका नाम स्वामभुव था। धर्म का पालन ने और निष्ठावान राजा होने के कारण प्रजा उसे 'धर्मसेन' के नाम से ारती थी। उसने चार विवाह किये थे। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र या से। उसकी चारों रानियां अत्यन्त रूपवती थीं। चारों के एक-एक था। ब्राह्मण रानी का पुत्र शंख, क्षत्रिय रानी का विक्रम, वैश्य रानी चन्द्र और शूद्र रानी का धन्वन्तरी था। चारों राजकुमार अत्यन्त ावी और होनहार थे। ब्राह्मणी का बेटा शंख अत्यन्त धूर्त और स्वार्थी । वह कुछ ज्यादा ही पराक्रमी और महत्वाकांक्षा रखने वाला था। ा धर्मसेन विक्रम पर अधिक स्नेह रखता था। इस स्नेह के कारण यह णा बलवती होने लगी कि राजा धर्मसेन शायद विक्रम को अपना राधिकारी घोषित कर दे। शंख इस संभावना के कारण बड़ा चिंतित ता था।

शंख की यह धारणा दिन पर दिन बलवती होती गयी।

उससे न रहा गया। वह अपना षड्यंत्र करने लगा। कुछ ही समय में ने अपना षडयंत्र मजबूत कर लिया और एक रात्रि उसने निद्रामग्न ने पिता राजा धर्मसेन की हत्या कर दी। अपने को उसने राजा घोषित दिया। हत्या की खबर पाकर शेष तीनों भाई विक्रम, चन्द्र और न्तरी भाग निकले। शंख ने उनका पीछा करवाकर चन्द्र और धन्वन्तरी मरवा डाल।, पर विक्रम का पता न चला। वह जंगल की ओर भाग ा।

शंख राजा तो बन गया, पर विक्रम का भय मन से न निकाल पा रहा । हर समय उसका मन शंकित रहता था कि किसी पड़ोसी राजा से ायता लेकर वह राज्य पर आक्रमण कर अपने प्रिय पिता की हत्या का शोध न ले ले। इस चिन्ता के कारण उसकी नींद हराम हो गयी। चर बराबर विक्रम की तलाश में लगे थे, पर विक्रम का कुछ पता न रहा था। अन्त में हारकर शंख ने अपने राज्य के सभी विद्वान ज्योति- ों को बुलाया।

"आप लोग गणना कर बतलाएं कि विक्रम कहां हैं ?"

पंडितों ने एक राय से निर्णय दिया कि विक्रम जीवित है।

"कहां हो सकता है ?"

"वह किसी घने जंगल में तपस्या कर रहा है।

"क्या उससे मुझे खतरा है ?"

एक ज्योतिषी बोला, "अन्नदाता, क्षमादान मिले तो कहूं कुछ।"

"बेखटक कहो।"

"राजन् !"—ज्योतिषी बोला, "विक्रम में राजयोग है। वह राज्य प्राप्त कर अत्यन्त यशस्वी सम्राट बनेगा। उसका यश दूर-दूर तक फैलेगा और इतिहास में नाम रहेगा।"

"क्या वह मेरा राज्य छीनेगा ?"—राजा शंख ने घबराकर पूछा।

"लक्षण और योग के अनुसार संभावना है।"

शंख और चिंता में पड़ गया। सबको भरपूर दक्षिणा देकर विदा करने के बाद वह अपने अधिकारियों से विचारविमर्श करने लगा। उसके सामने एक ही उपाय था कि समय रहते विक्रम की हत्या कर दी जाये। उसने घने जंगल छान मारने का आदेश दिया।

गुप्तचर निकल पड़े।

प्रत्येक घना जंगल देखा जाने लगा।

कई सप्ताह की भाग दौड़ उपरान्त गुप्तचरों को एक घनघोर वन में एक तपस्वी कठोर तपस्या करता दीखा। उसने वहीं एक सरोवर तीरे अपनी पर्णकुटी बना रखी थी। कंदभूल खाकर वह बराबर तपस्या करने में लग जाया करता था। उसे देखकर गुप्तचर चुपचाप वापस आ गये तपस्वी को कुछ पता न चला।

गुप्तचरों ने वापस आकर सूचना दी।

राजा शंख बोल उठा, "शाबाश ! वह अवश्य ही विक्रम होगा।"

इतना विश्वास कर राजा शंख अपने चुने हुए अधिकारियों के सा उस घोर वन को रवाना हो गया। लंबा सफर पार करने के बाद वह घ जंगल में आया। सचमुच विक्रम को वहां तपस्या करते देखा। गुप्त रूप उसे देखकर वापस लौट गया। राजा शंख को इस बात का पूरा विश्व हो गया कि विक्रम अपनी तपस्या पूरी कर उस पर आक्रमण अव

।

उसने विकम को मार डालने की योजना बनायी।

इस काम के लिये उसने एक तांत्रिक का सहारा लिया। वह तांत्रिक के पास गया। अपने को भी काली का भक्त बताकर उसने विक्रम ने काली मंदिर में आने का निमंत्रण दिया। योजना यह बनी कि क्रम मां काली के सामने आने पर उन्हें साष्टांग प्रणाम करने के सर झुकायेगा तो उसी समय वहां पर छिपा राजा शंख अपनी तलवार से उसकी गरदन धड़ से अलग कर देगा। बस। सारा खेल मां काली पर एक बलि चढ़ जायेगी। इस प्रकार वह तांत्रिक अपनी र सिद्धि पूरी कर लेगा।

क्रम ने तांत्रिक का निमंत्रण स्वीकर कर लिया। वह निश्चित र मां काली के मंदिर में आया पर अपनी तपस्या और ध्यान योग पर उसे आने वाले संकट का आभास हो गया था। इस कारण वह से सतर्क था।

ां कार्ल. की प्रतिमा अंधकारपूर्ण स्थान में, मंदिर के तलगृह में थी। क्रम ने पुजारी का हाथ पकड़कर कहा कि चलो एक नयी तांत्रिक मां का अभिनंदन करते हैं। साष्टांग दंडवत् करते समय उसने को अपनी दायीं ओर खड़ा कर दिया। फिर प्रणाम से पूर्व परे । बाहर छिपा शंख तेजी से दौड़कर आया और नंगी तलवार का कार कर दिया। तांत्रिक की गरदन धड़ से अलग। पलक झपते ही हो गया। ठीक इसी समय विक्रम ने राजा शंख पर छलांग मार तवार छीन, उसका सिर अलग कर दिया।

ब विक्रम राजा शंख का कटा सिर लेकर वापस राजमहल आया। रौद्र रूप देखकर शंख के समर्थकों में भगदड़ मच गयी, पर जनता जय जयकार कर उठी।

जा भोज! इस प्रकार विक्रम ने अपना खोया राज्य प्राप्त कर और पिता की हत्या का भी प्रतिशोध ले लिया? अगर तुमने भी ई कार्य किया हो? पिता के किसी अपमान का प्रतिशोध लिया हो न अपनी शक्ति से राज्य प्राप्त किया हो, तो इस सिंहासन पर बैठ

सकते हो ?

रत्नमंजरी की बात सुनकर राजा भोज चुप रह गया।

उसके पास इसका जवाब न था।

रत्नमंजरी हंसकर बोली, "और सुनो राजा भोज, राजा विक्रमादित के पास में यह सिहासन कैसे आया ? वह विक्रम से विक्रमादित्य कै बना ? मैं तुमको बतलाती हूं।"

रत्नमंजरी कह चली। राजा भोज और उपस्थित दरबारी आश्च और ध्यान से रत्नमंजरी की बात सुनने लगे।

वह कहने लगी।

"राजा विक्रम न्यायपूर्वक अपना राज संचालन करने लगे। प्रजा सुख के लिए उसने कुछ भी न उठा रखा। लोग राजा विक्रम की भूरी-भू प्रशंसा करने लगे। राज्य में सुख शांति और धन की वृद्धि होने लगी।

विक्रम प्रायः शिकार खेलने जाया करता था।

एक दिन प्रातःकाल वह शिकार पर निकला। राज्य के अधिकारीग साथ थे, पर अचानक एक हिरण के पीछा करते समय राजा विक्रम स आगे निकल गया। तमाम लोग पीछे छूट गये।

राजा विक्रम बराबर पीछा करता गया।

देखते-देखते बहुत-बहुत आगे निकल गया। उसके तमाम साथी गये। वह हिरन भी गायब हो गया। उसका कुछ भी पता न लगा। र विक्रम निराश हो गया। थकावट के कारण मन्द गति से वापिस लौटने पर राह का पता न था। अनुमान से वापस लौट रहा था। अचानक पर उसे एक बड़ा सुन्दर राजमहल के समान भवन दीख पड़ा। वह रु देखने लगा और मन ही मन कल्पना करने लगा, यह राजभवन उ होता···फिर उस पर अपना अधिकार करने की भावना मन में आ काश ! इस पर अपना झंडा लहरा पाता। इसी बात को वह बुदबु बोल उठा।

तभी उसके सिर पर कौए की बीट आ गिरी।

विक्रम चौंक गया।

वह काक भाषा का ज्ञाता था। उसने काक भाषा का प्रयो

कौओं को बुलाया। ढेर सारे कौए आ गये।
ब राजा विक्रम ने पूछा, "किस कौए ने मुझ पर बीट की है ?"
क सयाना कौआ बोला, "राजा विक्रम···आप पर बीट करने वाला
राजा सुवर्णमंगल का मंत्री लूतवर्ण है। वह काक रूप धारण कर
ता रहता है।
यह सुवर्णमंगल कौन है ?"
सामने जो राज भवन देख रहे हैं, उसी राजा का है···
ओह···तब लूतवर्ण कहाँ मिलेगा ?"
आप उसे पुकारें। वह आयेगा।"
क्रम ने काक रूपी लूतवर्ण का आह्वान किया। वह सामने आया।
को काकशास्त्र का विद्वान जानकर उसे प्रसन्नता हुई।
तुमने मुझ पर बीट क्यों की ?"—राजा ने पूछा।
खो राजा विक्रम ! मैं महाराज सुवर्णमंगल का मंत्री हूं। तुमने
ल पर अपना अधिकार करने की बात की। भला कैसे बर्दाश्त कर
गा।
बहुत स्वामिभक्त हो ?"
यह मेरा कर्तव्य है।"
वर्ण पर राजा विक्रम के स्वभाव, व्यवहार का अच्छा प्रभाव पड़ा
राजा विक्रम को अपने राजमहल में ले गया। बड़े आदर सत्कार
ठहराया।
विक्रम ने राजा सुवर्णमंगल से मिलने की इच्छा प्रकट की।
वण मान गया। उसने राजा सुवर्णमंगल को सूचना दी। वह
के पुत्र से मिलने के लिये उत्सुक हो गये।
हर में एक काक सामने आया।
क्रम उससे वार्ता करने लगा। काक बड़ा प्रसन्न हुआ। फिर बोला,
! तुम्हारे व्यवहार पर मैं प्रसन्न हूं। तुमको एक राज की बात
हूं। राजा सुवर्णमंगल अत्यन्त दानी और अतिथियों का परम
करने वाला है। अतिथि को विदा करते समय पूछता है कि क्या
उस समय राजन् ! तुम सिंहासन मांग लेना।"

"सिंहासन ?"

"हां। बत्तीस पुतलियां वाला सिंहासन। भगवान शंकर ने इसे
को दिया था। इन्द्र ने प्रसन्न होकर सुवर्ण मंगल को दिया है। इस सिंह
पर बैठने वाला राजा महा न्यायवादी और विश्वकीर्ति वाला होता है

विक्रम को बात जम गयी।

राजा सुवर्णमंगल से भेंटकर उनका आतिथ्य स्वीकार कर लि
दो-चार दिन के बाद जाने लगा।

"अतिथि देवता! आपकी क्या इच्छा पूरी की जाये?"

"मुझे आपका बत्तीस पुतलियों वाला सिंहासन चाहिए है?"

राजा सुवर्णमंगल चौंक गया, पर वह वचनबद्ध था। उसने पूछा,
अभी तक अविवाहित भी हो?"

"हां।"

"तो मेरी कन्या से शुभ विवाह कर यह राज्य, राजमहल और
सब ले लो। अब मैं वानप्रस्थी बनूंगा।"

विक्रम सहर्ष मान गया।

राजा भोज, उचित समय पर राजा विक्रम का शुभ विवाह हो
पत्नी, राज्य के साथ-साथ देवताओं का सिंहासन भी मिल गया
जय-जयकार कर उठी। राज्य का और विस्तार हो गया। तब
विक्रमादित्य ने उज्जयनी को अपनी राजधानी बनाया और महा
शंकर रूप में स्थापना की। ऐसा था राजा विक्रमादित्य। वीर
सब पाते हैं। कायर और भाग्यवादी कुछ नहीं पाते हैं।"—रत्न
कहा। सब चुप रह गये।

"अगर तुममें इतने गुण हैं, तो इस सिंहासन पर बैठो। मैं तो

और, रत्नमंजरी आकाश में जाकर विलीन हो गयी। राजा
सारा दरबार ठगा-सा खड़ा रह गया। राज दरबार में रखा राजा
दित्य का खाली सिंहासन पूरी आभा के साथ दमक-चमक रहा थ



चित्रलेखा

ा राजा भोज !"—अचानक दूसरी पुतली सिंहासन से
आकर बोली, "क्या तुममें विक्रमादित्य के समान शक्ति
इस बात को न भूलो कि संकट में पड़े मनुष्य की सहायता
ा सबसे बड़ा धर्म है। क्या तुम इस प्रकार किसी की आज
हायता कर सके हो'''तब तो तुम जरूर इस सिंहासन पर
"

भोज और तमाम दरबारी आश्चर्य से चित्रलेखा को देख
।

यों का करिश्मा देखकर वह सब चकित थे।

अगले दिन जब राजा भोज ने पुनः सिंहासन पर बैठने का निश्चय कि
तो ब्राह्मणगण स्वति वाचन करने लगे। राजाभोज ने जैसे ही सिंह
पर बैठने के लिये कदम उठाया कि बड़ी तीव्र गति से एक पुतली सिंह
से निकलकर साकार रूप में सामने आ गयी। खिलखिलाकर हंसने ल
उसकी मधुर मुस्कान के साथ उसकी मीठी खिलखिलाहट गूंज ग
उसकी मीठी हंसी पर सभी मुग्ध होकर देखने लगे। पुतली हंसती
बोली, "राजा भोज! तुम इस सिंहासन पर तभी बैठ सकते हो,
विक्रमादित्य के समान एक भी काम किया हो?

राजा भोज खामोश रह गये।

"मेरा नाम चित्रलेखा है। मैं तुमको राजा विक्रमादित्य की एक
बतलाती हूं। मैंने स्वयं इसे देखा है। यह सिंहासन प्राप्त करने के
राजा विक्रमादित्य सुखपूर्वक अपना राज करने लगे। प्रजा के दुःख-सुख
वह बहुत ख्याल रखते थे। एक दिन वह आखेट के लिये गये। आखेट क
करते वह एक ऊंचे पहाड़ पर चले गये। वहां जाकर एक साधु को तप
करते देखा। बड़ी श्रद्धा के साथ प्रणाम कर लौटने लगे। कुछ बोल
उसकी तपस्या में बाधा डालना उचित न समझा।

जैसे ही वह वापस जाने लगे, अचानक साधु ने पुकारा।

"सुनो राजा विक्रमादित्य! रुको।"

राजा रुक गया।

"तुम्हारी शिष्टता पर हम प्रसन्न हैं। लो यह फल। इसे खाने
पुत्रवान् बनेगा। तेजस्वी यशस्वी पुत्र होगा।"

राजा ने सहर्ष फल ग्रहण कर लिया। साधु का आशीर्वाद प्राप
वह वापस लौट पड़े। अचानक देखा कि एक स्त्री भागी जा रही
परेशान लगती है। विक्रम उसके पीछे दौड़ा। वह स्त्री एक कुएं
रुक गयी। झांककर देखा और शायद वह छलांग मारने वाली
यकायक विक्रम ने उसे पकड़ लिया।

"क्यों मरना चाहती है?"

राजा उसे दूर खींच लाया।

"मुझे मर जाने दो। मुझे मर जाने दो—।" वह स्त्री रोने लग

क्या बात हो गयी ?"
मेरा पति बेतरह मारपीट करता है। जीना मुश्किल कर दिया

क्यों ? बात क्या है ?"
मेरी सभी सन्तानें लड़कियां है। लड़का, पुत्र न होने के कारण मेरी
हो रही है।"
यह बात है।"
ाजा विक्रम ने वह फल उस युवती को दे दिया। युवती राजा का
द कर चली गयी। अब चमत्कार की बात सुनो राजा भोज ! एक
जदरबार में एक ब्राह्मण आया। बोला—"राजा को वह एक
न भेंट देना चाहता है।"
जा उससे एकांत में मिला। अत्यन्त श्रद्धापूर्वक उसने राजा को वही
या और पुत्र कामना की चाहत की—"आप हमारे राजा है।
तेजस्वी यशस्वी पुत्र होगा। इसमें हमारा कल्याण है।"
क्रम ने आश्चर्य से पूछा, "तुम्हारे पास आया कहां से ?"
ह्मण चुप रह गया।
सच-सच बतलाना।"
ब उस ब्राह्मण ने कहा, उसकी प्रेमिका से उसे फल मिला है। उसे
ति से घृणा है।
जा खामोश रह गया। स्त्री की बेवफाई पर बड़ा दुःखी हुआ। तब
ह फल अपनी पत्नी को दिया। पत्नी ने रख लिया।
छ समय बाद राजा के पास राज नर्तकी आयी। बोली, "महाराज !
ापिन हूं। आपके राज में बड़े सुख से रही हूं। आपका वंश चले।
: यह फल आपको दे रही हूं।"
ाजा फल देखकर चौंक गया।
तुम्हारे पास कैसे आया ?"—उसने आश्चर्य से पूछा।
मुझे महामंत्री का पुत्र दे गया है। उनको अपनी प्रेमिका से मिला

जा का माथा ठनका। महामंत्री के पुत्र को बुलाया। उसने बतला

दिया, फल महारानी ने दिया है। वह और महारानी···कहते-कहते रुक गया।

राजा विक्रम का मन एकदम टूट गया। उनका मन वैराग्य से गया। वह सब राजपाट छोड़कर चला गया और जंगल में जाकर तप करने लगा।

राजा विक्रम चला गया, तो भगवान इन्द्र ने अपना विशेष दूत अ बैताल भेज दिया। वह राजा विक्रम का रूप धरकर राजकाज च लगा। इस प्रकार किसी को कुछ भी पता न चला।

कई वर्ष तक तपस्या करने के बाद राजा विक्रम के मन में आया एक बार अपने राज्य में वापस जाकर अपनी प्रजा का हाल तो देखें। का प्यार मन में उमड़ने लगा। वह अपनी राजधानी की ओर वापस लौ जब राजधानी उज्जैन आया, तो रात हो गयी।

रात को उसने नगर प्रवेश किया। अचानक अगिया···बैताल ने रोक लिया।

"कौन है तू ?"

"मैं विक्रमादित्य हूं। तू कौन है ?"

"मैं राजा के राज का रखवाला हूं। मेरा नाम अगिया बैताल है

"मैं यहां का राजा हूं।"

"मगर तू राजा विक्रमादित्य है, तो आ लड़! मुझे परास्त कर

हे राजा भोज! इस प्रकार राजा विक्रमादित्य ने अगिया बैत चुनौती स्वीकार कर ली और युद्ध करने लगा। थोड़ी ही देर विक्रमादित्य ने अपने अपूर्व पराक्रम का प्रदर्शन कर अगिया बै परास्त कर दिया। अगिया बैताल पराजय स्वीकार कर बोला, "म तुम्हीं राजा विक्रमादित्य हो, पर सुनो, तुम्हारे प्राणों पर संकट योगी तुम्हें मारकर राजकाज करने की योजना में लगा है। उस सिद्ध करना शुरू कर दिया है। उसे फौरन मार डालो।"

"वह योगी है कहां ?"

"गंधमादन पर्वत के नीचे।"

राजा विक्रम गंधमादन की ओर चल पड़ा। वहां पर

रत था। विक्रम को वह पहिचान न सका। राजा विक्रम उसका
न गया। कुछ समय बाद योगी ने राजा विक्रम को बैताल को आने
ज्ञा दी। राजा विक्रम बैताल लाने चल पड़ा।
ड़ पर उल्टे लटके बैताल को वह बड़ी कठिनाई से अपने काबू में कर
ौर योगी के पास चल पड़ा।
ास्ते में बैताल बोला, "राजा विक्रम! क्या तुमको विश्वास है कि
तुम्हें नहीं जानता।"
हां।"
यह तुम्हारा भ्रम है। वह तुमको खूब पहिचान चुका है। वह तुमको
म मुझे ले जाओगे, तो बलि चढ़ा देगा।" —बैताल ने कहा।
ाजा विक्रम चुप रह गया।
तुम सावधान रहना। मैं तुम्हारी वीरता पर प्रसन्न हूं। तुम मेरी
ानो। अगर योगी को मार डालोगे तो तुम्हारा काम बन जायेगा।
री भी रक्षा होगी। अगर तुम मेरी जगह इसको बलि चढ़ा दोगे तो
ीवन अगिया बैताल की तरह तुम्हारी भी सेवा कर दूंगा।"
ाजा विक्रम बैताल की बात सुनकर चुप रह गया।
ब वह योगी के पास आया, तो वह बैताल को देखकर खुश हो गया।
—"शाबाश इसे झुककर उतारो। मैं इसकी बलि दूंगा।"
ाजा विक्रम समझ गया कि अगर वह झुका तो योगी उसकी बलि
ेगा। फौरन गरदन काट डालेगा। तब राजा विक्रम ने योगी से
—"मैं बहुत थक गया हूं। झुक नहीं सकता। इसे तुम खींच लो।"
ोगी मान गया। जैसे ही उसने सिर उठाया, राजा विक्रम ने अपनी
र निकाल कर उसका काम तमाम कर दिया।
ताल राजा विक्रम की जयजयकार कर उठा। योगी के हाथों उसकी
बच गयी। उसने राजा विक्रम से कहा, "राजा मैं तुम्हारा साथ
दूंगा। तुमने मेरी जान बचाकर बड़ा एहसान किया है।"
भी अगिया बैताल आ गया।
ला, "राजन्! अपना राजकाज संभालो। मुझे आज्ञा दो कि मैं
करूं। जब तुम याद करोगे मैं तुम्हारी सहायता के लिये आ जाया

करूंगा।"

हे राजा भोज ! इस प्रकार अगिया बैताल और बैताल राजा वि
के गोपनीय रक्षक बन गये और उसका साथ देने लगे।

क्या इस प्रकार के गुण तुममें है ? क्या तुम राजा विक्रम से स
दानी और वीर हो ? अगर ऐसा है, तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो

अपनी बात कहकर चित्रलेखा आकाश में उड़ गयी। राजा भोज
दरबार के लोग आश्चर्य से यह सारा दृश्य देखते रह गये। राजा भो
पास चित्रलेखा की बात का उत्तर न था।

राजा भोज तब बड़े असमंजस में पड़ गया। अब क्या करना चाहि
इस सिंहासन पर बैठने को किस प्रकार मिले ? वह उस पर बैठने के
बहुत ही लालायित था। उसने पंडितों से सलाह ली। सबने मिलकर र
भोज को सलाह दी कि राजा आप प्रयत्न करते रहते रहिए। शायद
इसमें सफल हो जायें।

अतएव राजा भोज ने अपना प्रयत्न प्रारंभ ही रखा।

वह फिर उस सिंहासन पर बैठने का उपाय सोचने लगा।



रतिबाला

भोज ने जैसे ही सिंहासन पर बैठने के लिये पैर बढ़ाया कि
ाक एक पुतली ने रास्ता रोक लिया। बोली, "रुको, राजा
! क्या तुमने कभी किसी संकट में पड़े व्यक्ति के लिये अपने
संकट में डाले हैं। अगर ऐसा किया है, तो इस सिंहासन पर
कते हो…।"
भोज के पास इस प्रश्न का उत्तर न था।
ह बोली, "मेरा नाम रतिबाला है, राजा भोज, सुनो मैं
बतलाती हूं।"

रतिबाला बोली, "राजा भोज, हमारा राजा विक्रमादित्य राजमहल
सुखों की परवाह न कर हमेशा अपनी प्रजा के दुःख-सुख का ख्या
रखता था। प्रायः वेश बदल कर वह प्रजा के बीच जा पहुंचता था। गां
गांव घूमता था। लोगों के दुःख दूर करता था। इस कारण प्रजा उसक
बड़ा मान करती थी और राज्य के अधिकारी डरा करते थे।

एक दिन की बात है। राजा विक्रम अपने राजमहल से गायब ह
गया। भिखारी का वेश बनाकर वह गांव-गांव घूमने लगा। अनेक गांव
अपनी प्रजा को सुखी पाकर उसका मन प्रसन्न हो गया, पर एक दिन ज
वह एक गांव में आया तो एक स्त्री के रोने की आवाज आयी।

राजा विक्रम उसके पास गया।

"तुम्हें क्या दुःख है, बहिन।"

उस स्त्री ने आश्चर्य से देखा, बोली, "तुम एक भिखारी हो। भल
मेरी क्या सहायता कर सकते हो।"

"शायद कुछ काम आ सकूं।"

"तुम क्या मदद करोगे। फिर भी बताती हूं। आज महाजन क
आखिरी दिन है। उसका कर्जा हम नहीं दे पाये। आज वह मेरे पति क
हंटरों से मारेगा। कर्जा न चुका पाने का यही दंड पंचायत ने दिया है।"

"तुम्हारा पति कहां है?"

"वह खेत पर है। वहीं से महाजन पकड़ कर ले जायेगा।"

"कितने हंटर की सजा दी है, पंचायत ने।"

"पन्द्रह हंटर।"

"क्या दूसरा आदमी उसके बदले इस सजा को नहीं भोग सकता है

"भोग तो सकता है, पर हमारी मदद कौन करेगा।"

"तुम्हारे पति के स्थान पर मैं तैयार हूं।"

स्त्री आश्चर्य से देखती रह गयी। उसे विश्वास न आया। ब
'क्या तुम सच कह रहे हो?"

"हां, बहिन।"

तभी महाजन अपने नौकरों के साथ आगया। राजा विक्रम ने
को पेश कर दिया। महाजन बोला, "क्यों मरता है! हंटरों से तेरी

जायेगी ?"
"मैं तैयार हूं।"—राजा शान्त भाव से बोला।
"चल। तू ही चल।"
महाजन के नौकर राजा को घसीट कर ले गये। स्त्री दौड़कर अपने
को बुला लायी। फिर पति-पत्नी दोनों जय-जयकार करते वहां पहुंचे
पर राजा विक्रम को हंटर लगने वाले थे।
महाजन ने विक्रम को पंचायत के सामने पेश किया।
"एवजी हंटर खाने के लिये तैयार है।"
पंच आश्चर्य में पड़ गये। एक पंच ने राजा विक्रम को समझाया,
बेकार में चमड़ी निकलवाता है। महीनों तड़फेगा।"
"कोई बात नहीं।"—राजा शान्त भाव से बोला, "पंचायत का दंड
मंजूर है।"
बात मान ली गयी।
भिखारी वेशधारी राजा विक्रम को टीले पर खड़ा किया। उसके
खोले गये, पर यकायक गले में पड़ा हीरों का हार देखकर सब चौंक
वह हार गंदे कपड़ों के पीछे छिपा था। जल्लाद चीख उठा, "अरे
खारी तो हीरों का हार पहिने है।"
इस पर सारे पंच चौंक गये। सचमुच वह हार हीरों का था।
"कौन हो तुम ?" एक पंच ने पूछा।
"अरे। हीरों का हार है गले में। कोड़े खा रहा है। कोड़े न मारकर
को बेचकर रुपया चुकता पा लो।"—एक पंच बोला।
"ऐसा ही करो।"
राजा विक्रम ने हीरों का हार उतार कर दे दिया।
"लो। अपना रुपया लेकर बाकी वापस कर दो।"
हीरों का हार देखकर सब चौंक गये। वह अत्यन्त मूल्यवान था। पंच
में पड़ गये। सबके मन में एक ही सवाल आया। यह हार कैसे आया
री के पास ?
"यह हार तो किसी राजा महाराजा का मालूम पड़ता है। इसके पास
कैसे ? यह जरूर चोरी का माल है।"

राजा विक्रम से पूछताछ शुरू हुई। राजा विक्रम ने कोई जवाब न दिया। पंचों ने नगर कोतवाल को खबर दी। नगर कोतवाल दौड़कर आ गया। वह हार देखकर चौंक गया। बोला, यह हार तो हमारे राजा विक्रमादित्य का है।"

"इस भिखारी के पास था—।"

"यह भिखारी···"—शहर कोतवाल ने भिखारी को देखा तो देखता ही रह गया। उसकी आंखें फटी की फटी रह गयीं। भिखारी के वेश में उसने राजा विक्रमादित्य को पहिचान लिया।

पंच हैरान थे। एक पंच चीखा, "देख क्या रहे हो ? इस भिखारी को पकड़कर राजदरबार में पेश करो।"

शहर कोतवाल राजा विक्रमादित्य के पैरों पर गिर पड़ा।

"अन्नदाता ? अन्नदाता···क्षमा करें···"

पंच आसमान से गिरे। तभी नगर कोतवाल चिलाया, "यह भिखारी नहीं, हमारे राजा विक्रमादित्य हैं।"

बस क्या था, राजा भोज, सब राजा विक्रम के चरणों पर लोटने लगे और उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। एक गरीब आदमी की सहायता के लिये और पंचायत का सम्मान रखने के लिये हंटर खाने के लिये भी तैयार हो गये।

सब राजा की जय-जयकार करने लगे।

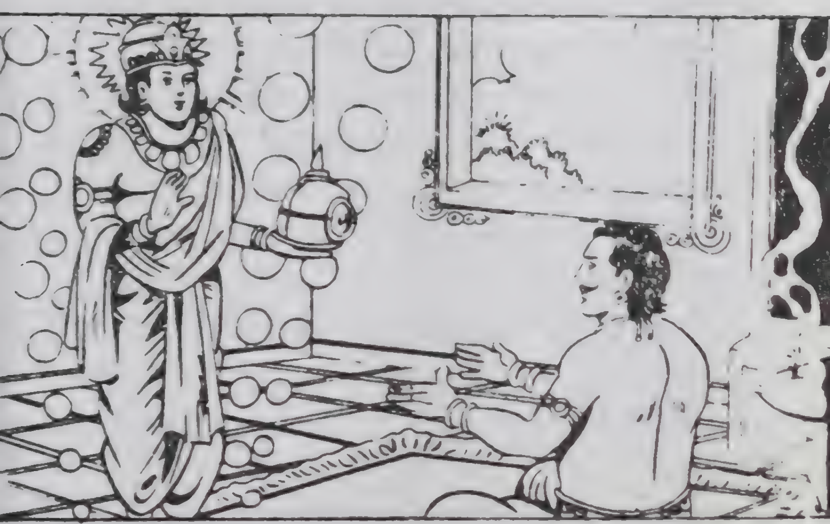
अपनी प्रजा का इतना प्रेम देखकर राजा विक्रमादित्य गद्‌गद् हो गये।

उन्होंने पंचों तथा नगर कोतवाल को कर्तव्यपालन के लिये पुरस्कृत किया।

राजा भोज, हमारा राजा विक्रमादित्य इस प्रकार का दयालु और प्रजावत्सल था। क्या तुम्हारे पास ऐसा एक भी उदाहरण है। अगर है तो तुम इस सिंहासन पर बैठ सकते हो ?"

राजा भोज खामोश खड़ा रह गया।

रतिबाला अपनी बात कहकर खिलखिलाकर हंसती हुई आकाश की ओर उड़कर अन्तर्ध्यान हो गयी। राजा भोज सिंहासन के पास से लौट गया।



चन्द्रकला

भोज ने सिंहासन पर बैठने का विचार किया तो यकायक
एक पुतली सिंहासन के बाहर आ गयी। उसने राजा भोज
मने खड़े होकर पूछा, "राजा भोज क्या तुमने कभी किसी
ण को राजमहल दान दिया है और अगर लक्ष्मी प्रसन्न हुई
तुमने क्या मांगा है, उससे ? जो राजा दानी और सदा
प्रजा के सुख का ध्यान रखने वाला हो, वही राजा
ाता है और वही राजा इस सिंहासन पर बैठ सकता है ?"
वह कहने लगी, "मेरा नाम चन्द्रकला है। मैं आंखों देखी
विक्रमादित्य की एक कथा सुनाती हूं।"

चन्द्रकला बोली, "सुनो राजा भोज। राजा विक्रमादित्य अपने दान के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। कोई भी उनके दरबार से वापस खाली हाथ न जाता था। राजा की इस दानशीलता की चर्चा दूर-दूर तक के देशों में फैल गयी थी। अमरपुरी नगरी में एक गरीब ब्राह्मण रहता था। उसकी झोपड़ी थी एक। अचानक एक दिन उसमें आग लग गयी।

झोपड़ी में उस गरीब ब्राह्मण का सब कुछ जलकर स्वाहा हो गया।

वह गरीब बेचारा फूट-फूटकर रोने लगा। तभी एक स्त्री ने ब्राह्मणी को सांत्वना दी। कहा, "रो मत। तुम अपने पति को राजा विक्रमादित्य के पास भेज दो। वह बहुत दानी है। उनसे एक छोटे से भवन का दान मांग लो। तुम्हारे दुःख दूर हो जायेंगे।"

ब्राह्मणी को बात जम गयी। उसने ब्राह्मण से इसकी चर्चा की।

ब्राह्मण बोला, "तुम ठीक कहती हो। हमने राजा विक्रमादित्य क दान लीला की बड़ी प्रसंसा सुन रखी है। चलो, इस बहाने सचाई का पत चल जायेगा।"

ब्राह्मण ब्राह्मणी की बात मानकर राजा विक्रमादित्य की नग उज्जैन आया। उसे उज्जैन आकर लोगों की बातें सुनकर इस बात पूरा विश्वास हो गया कि राजा विक्रमादित्य से उसकी आशा अवश्य होगी।

वह राजा के दरबार में गया। द्वारपाल ने आने का कारण पू ब्राह्मण ने साफ-साफ बतला दिया। द्वारपाल के पास एक मसखरा था। उसने ब्राह्मण की बात सुनकर हंसना शुरू कर दिया।

ब्राह्मण ने पूछा, "भाई, तुम क्यों हंस रहे हो?"

मसखरा बोला, "समुद्र में से एक चुल्लू पानी निकलना कह बुद्धिमानी है। राजा विक्रमादित्य के समान दानी राजा से एक छोट मकान क्या मांगता है, अरे एक महल मांग महल।"

ब्राह्मण कुछ न बोला पर उसको बात जम गयी। उसने राजा से मांगना ठीक समझा। महल लेने से उसके और दुःख मिट जायेंगे।

वह राजदरबार में आया। उसने राजा विक्रमादित्य से अपन कहा, "राजन्। मेरी झोपड़ी जल गयी है। सिर छुपाने की भ

है।"

"क्या चाहते हो ब्राह्मण देवता।"

"सर छुपाने की जगह।"

"कैसी ?"

"अन्नदाता···एक···झो···झोप···नहीं···एक महल चाहता हूं।"

"महल। क्या तुम मेरा महल लेना चाहोगे ?"

"जैसी आपकी कृपा अन्नदाता।"

"ठीक है दिया।"

और राजा विक्रमादित्य ने अपना स्वयं का राजमहल ब्राह्मण को दान दिया। ब्राह्मण हैरान रह गया। महल मांगने पर राजा स्वयं अपना महल दान कर देगा, इसकी उसे आशा न थी। वह हक्का-बक्का सा गया।

राजा के इस दान का समाचार सर्वत्र फैल गया। लोग आश्चर्य करने । ब्राह्मण को कुछ लोग भला बुरा कहने लगे, पर सब राजा की प्रशंसा रहे थे कि राजा के समान दानी पुरुष का मिलना कठिन है। वह राजा के समान दानी है।

राजा विक्रमादित्य राजमहल खाली कर चले गये।

ब्राह्मण राजा का महल पाकर चकित रह गया। ब्राह्मणी सहित वह ल राजमहल में आ गया, पर इतना बड़ा सूना महल पाकर उसकी काम न कर रही थी कि वह क्या करे, क्या न करे ? ब्राह्मणी भी थी। उसने ब्राह्मण पर अपना क्रोध भी दिखलाया और कहा— ा से इतना बड़ा महल मांगने की क्या जरूरत थी। छोटा-सा मकान ा था।"

"मैंने महल मांगा था। राजमहल नहीं।"

"तो राजा ने राजमहल कैसे दे दिया ?"

"अपनी मर्जी से।"

'अब इतना बड़ा महल लेकर हम क्या करेंगे ?"—ब्राह्मणी हैरान थी। ाह्मण चुप रह गया।

राजा के शानदार महल के एक कोने में उन्होंने अपनी थोड़ी-सी

गृहस्थी जमा ली। वहीं कोने में पंडितानी ने खाना भी बना लिया।

खा पीकर ब्राह्मण ब्राह्मणी महल के फर्श पर लेट गये। सारा सूना महल सांय-साय कर रहा था। रात के सन्नाटे के साथ-साथ महल का वातावरण और डरावना होता गया। दोनों को नींद न आ रही थी। दोनों चुपचाप एक ओर पड़े थे। रह-रहकर करवटें ले रहे थे। ब्राह्मण परेशान था। इतना बड़ा महल मुफ्त में लेकर उसने परेशानी मोल ले ली। ऐसा सन्नाटा। इस विशाल महल का आखिर करेगा वह क्या ? इस महल के स्थान पर उसने एक झोपड़ी मांग ली होती तो ज्यादा अच्छा था।

रात तेजी से सन्नाटे से भरती गयी।

अज्ञात भय के कारण दोनों को नींद न आ रही थी। दोनों एक दूसरे की ओर देखकर चुप हो जाया करते थे। अचानक आधी रात के बाद महल में कुछ आहट-सी लगी। देखते-देखते ब्राह्मण ब्राह्मणी फर्श पर से उठकर एक सुन्दर शैय्या पर आ गये। महल का वह भाग अनेक प्रकार के सामान से भर गया।

"अरे···यह क्या···?" ब्राह्मणी घबरा गयी।

ब्राह्मण भी घबराकर उठ बैठा।

"हे भगवान ! यह क्या चमत्कार है।"

ब्राह्मणी भय से थर-थर कांप रही थी। वह घबराकर बोली, "इ घर में भूत-प्रेत की माया लगती है। यह सब क्या हो गया ?"

ब्राह्मण बेहद डर गया। तभी कुछ आहट हुई।

ब्राह्मण डरते-डरते बोला, "कौन···कौन···कौन है···?"

"मैं !" आवाज आयी।

"अरे बाप रे ! भूतप्रेत !"

आवाज सुनते ही ब्राह्मणी भागी और पीछे-पीछे ब्राह्मण भी। दो महल से भागकर बाहर आ गये।

महल के बाहर जमीन पर बैठकर बाकी रात रामराम का नाम ले गुजारी। प्रातःकाल होते ही ब्राह्मण ने कान पकड़े। बोला, "इस मह रहना अपने वश में नहीं है। मैं राजा से कहकर वापस कर देता हूं।"

ब्राह्मणी बोली, "मैंने तुमसे पहले ही कहा था···।"

ह्मण कुछ देर रुका रहा। जब दिन का प्रकाश फैल गया, तो वह
पास अपनी फरियाद लेकर गया। उसने साष्टांग दंडवत् कर
महाराज ! आपका महल मुझे नहीं चाहिए।"
यों ?"
अन्नदाता। उस महल में प्रेतों का निवास है।"
तों का निवास।"
ां, राजन्।"
भी तुम मुझे साष्टांग दंडवत् कर रहे हो। ब्राह्मण देवता आप
वश्य हैं, पर मेरे पूज्नीय हैं। आपको दिया गया महल भला मैं
सकता हूं। दान दी गयी वस्तु वापस लेकर मैं पाप का भागी नहीं
ता !"
ह्मण चुप रह गया।
मंत्री ने तब उठकर कहा। "राजन्। आप इस महल का मूल्य
पस ले सकते हैं।
ह हो सकता है।"
जा विक्रमादित्य ने स्वीकार कर लिया। ब्राह्मण को उसका मूल्य
आदेश देकर चले गये।
सारा धन पाकर ब्राह्मण की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। वह
ह्मणी के साथ देखते-देखते राजा विक्रमादित्य के राज्य से बाहर
।
ा को ब्राह्मण से यह जानकर बड़ा आश्चर्य लगा कि राजमहल में
निवास है। अतएव उस रात उसने स्वयं राजमहल में सोने का
किया।
महल में विक्रमादित्य का बिस्तर लगा दिया। राजा अकेला सो
ानक रात में कुछ आहट मिली। राजा विक्रम उठकर बैठ गया।
दिखलायी न पड़ा। आहट फिर लगी। तब राजा विक्रम ने
।
न है ?"
.." उत्तर आया।

"मैं कौन…?"

"मैं…लक्ष्मी…तुम्हारे राज्य की लक्ष्मी। राजा विक्रम तुम ध
चरण करते हो। इस कारण मेरा वास तुम्हारे राजमहल में है।"

राजा विक्रम गद्गद हो गया। उसने प्रणाम कर कहा, "मां तुम्ह
बड़ी कृपा है।"

लक्ष्मी राजा विक्रम के सामने आ गयी। राजा विक्रम ने उ
साष्टांग प्रणाम किया। वह प्रसन्न हो गयीं।

"राजा विक्रम! हम तुम पर बहुत प्रसन्न हैं। क्या चाहिए?
लो।"

राजा विक्रम हाथ जोड़े खड़ा रह गया।

"जो इच्छा हो सो मांग लो राजा विक्रम!" लक्ष्मी ने पुनः कहा

राजा विक्रमादित्य कुछ देर मौन रहे।

फिर बोले, "आपकी यही आज्ञा है, देवी। तो मेरा महल छोड़क
प्रजा के घर-घर में धन वर्षा कर दो।"

"तथास्तु।"

लक्ष्मी ऐसा कहकर अन्तर्ध्यान हो गयीं।

राजा भोज, उस रात उज्जैन नगरी के घर-घर में धन की वर्ष
राजा विक्रमादित्य की प्रजा धन से परिपूर्ण हो गयी। गरीबी क
मिट गया।

देखा, राजा ने लक्ष्मी के प्रसन्न होने पर अपने लिये नहीं,
प्रजा के लिये धन मांगा। क्या तुम इतने उदार विशाल हो? क्या
गरीब ब्राह्मण को अपना राजमहल दान में दे सकते हो? क्या तु
तक एक भी इस प्रकार का कार्य किया है?

अगर किया है, तो इस सिंहासन पर बैठो, वरना नहीं।

और चन्द्रकला अपनी बात पूरी कर खिल-खिलाकर हंसती
गयी। आकाश में जाकर वह विलीन हो गयी।

राजा भोज और दरबार के तमाम लोग स्तब्ध खड़े रह गये
सन्नाटा खिंच गया। कोई एक शब्द भी न बोल पा रहा था।



लीलावती

ोज सिंहासन पर बैठने वाला ही था कि अचानक एक
ाहर आ गयी और बोली, "राजन् ! सिंहासन पर बैठने
इस बात का जवाब दो कि भाग्य और कर्म में दोनों में
ड़ा है ? क्या तुम्हारे पास इसका उत्तर है ?"
ोज इस प्रश्न का उत्तर न दे सका ।
श्न का उत्तर राजा विक्रमादित्य ने दिया है। सुनो ! मैं
तलाती हूं ।"

सुनो राजा भोज ! मेरा नाम लीलावती है। मैं तुमको राजा विक्रमा
जी एक कथा सुनाती हूं। राजा विक्रम आनन्द से राज्य कर रहे
उनके राज्य में प्रजा सर्वत्र सुखी थी। किसी को किसी प्रकार का क
था। सर्वत्र राजा की जय-जयकार होती थी और उनका यश फैल रहा
राजा विक्रम अपनी प्रजा के हर दुःख का ध्यान रखता था। उनका द
हर समय साधारण जन के लिये खुला रहता था।

राजा विक्रम के दरबार में हर आदमी अपनी हर समस्या को
उपस्थित हो सकता था।

एक दिन दरबार लगा था।

दो व्यक्ति राजा के दरबार में आये।

दोनों ने फरियाद की, "राजन् ! हम दोनों में एक बहस हो रह
हम दोनों अपनी-अपनी बात पर अड़े है। आप ही इसका निर्णय करें

"बहस क्या है ?"

"कर्म और भाग्य में कौन बड़ा है ?"

"तुम्हारा क्या कहना है ?"

"कर्म बड़ा है।"

"तुम्हारा साथी क्या कहता है ?"

"वह भाग्य को मानता है। उसका कहना है कि भाग्य न
आदमी कुछ भी नहीं कर सकता। मेरा कहना है कि कर्म करो, भा
देगा।"

प्रश्न सुनकर राजा विक्रम सोच में पड़ गया।

उसने दरबारियों की ओर देखा। पूछा, "बतलाइए। कर्म अ
में बड़ा कौन है ?"

इस प्रश्न पर दरबारी चुप रह गये। अन्त में राजा ने अ
विचार प्रकट करने के लिये कहा। दरबारियों में भी बहस वि
कोई भाग्य को प्रबल बतला रहा था और कोई कर्म को। कुछ नि
सका। स्वयं राजा विक्रम भी निर्णय न कर पा रहा था।

अन्त में उसने दोनों आदमियों से कहा, "राजा विक्रम के
आज तक कोई निराश नहीं गया है। तुम्हारे प्रश्न का उत्तर दि

ह बाद।"
जो आज्ञा अन्नदाता।"
नों चले गये।
जा भोज, विक्रमादित्य चिंता में पड़ गया। कर्म और भाग्य, भाग्य कर्म ? वह भी फैसला न कर पा रहा था। अतएव वह स्वयं इसका करने के लिए अपने मंत्री को राज भार सौंप कर निकल गया। ाये कि भाग्य बड़ा है या कर्म ? वह एक दूसरे राज्य में गया। की तलाश करने लगा। एक सेठ से मिला।
ुम क्या काम कर सकते हो ?"
ं संकट में सहायता कर सकता हूं।"—विक्रम बोला।
क्या लोगे ?"
ज़ार रुपया वेतन लूंगा।"
ं दो हजार दूंगा, पर संकट में सहायता करना।"
अवश्य।"
जा विक्रम नौकरी करने लगा। काम कुछ न था। चुपचाप पड़ा ा, पर अपना आधा वेतन दान कर दिया करता था। एक चौथाई को खिलाने में लगा देता था। सिर्फ एक चौथाई से अपना गुजारा था।
माह बीत गये।
ठ कभी-कभी राजा विक्रम को पूछ लिया करता था।
क दिन सेठ राजा विक्रम के पास आया। बोला, "तुमने संकट के ाम आने की बात कही है।"
ां, मैं तैयार हूं। क्या संकट है ?"
कल रात देवी ने मुझे स्वप्न दिया है कि एक बलि चढ़ा दें। ऐसा न र मेरा सब कुछ बरबाद हो जायेगा। मैं भिखारी बन जाऊंगा।"
मुझे क्या करना है ?" विक्रम ने पूछा।
तुम्हारे सिवाय दूसरा कोई बलि के लिये नहीं मिल सकता है। मैं देवी को तुम्हारी बलि चढ़ाकर अपना संकट टालना चाहता हूं।"
ठ विक्रम की ओर देखने लगा। उसे इस बात का विश्वास था कि

शायद विक्रम इस काम के लिए तैयार न होगा।

"बोलो!" सेठ ने पूछा।

"मैं एकदम तैयार हूं—। विक्रम ने कहा, "आप बलि की तैयारी क
"आप मेरी बलि चढ़ाकर अपना संकट दूर करें।"

सेठ हैरान रह गया। उसने बलि की तैयारियां पूरी कर लीं। धार
फरसा मंगाया। विक्रम को टीका लगाकर वेदी की परिक्रमा की
कहा, "देवी के आगे गरदन झुका दो। मैं बलि दूंगा।"

विक्रम ने गरदन झुका दी। तभी सेठ ने धारदार फरसा दूर फें
राजा विक्रम को गले लगा लिया। कहा, "मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा
तुम इसमें एकदम खरे उतरे हो।"

विक्रम अवाक् रह गया। सेठ सम्मानपूर्वक उसे वापस ले अ
बड़ा स्वागत किया। राजा विक्रम को लगा कि उसने अपने कर्म का
किया। भाग्य ने उसकी रक्षा की। अगर वह अपना कर्म न करता तो
भी उसका साथ न देता। अगर वह अपनी बलि की बात सुनकर ड
होता तो कैसा होता? ···राजा विक्रमादित्य इस पर विचार करता

सेठ बिक्रम पर अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला, "तुम कहां के रह
हो? तुम्हारा घर कहां है।

"मैं उज्जैन का रहने वाला हूं।"

"ओह! महाप्रतापी राजा विक्रमादित्य। जब वहां का
इतना कर्तव्य परायण है, तो राजा का क्या कहना। मैं तुम पर बहु
हूं। क्या चाहते हो?"

"मैं अपने घर वापस जाना चाहता हूं।"

"जरूर जाओ।" सेठ बोला, "पर मेरे दामाद बनकर ज
अपनी अत्यन्त रूपवती कन्या तुमको देता हूं और बहुत सा धन
आनंद से अपने घर रहना। तुम्हारे जैसे कर्तव्य परायण के घर र
पुत्री सदा सुखी रहेगी।"

सेठ ने बड़ी धूमधाम के साथ अपनी कन्या का विवाह वि
कर दिया और खूब धन देकर रवाना कर दिया। बिक्रम वापस

सेठ की पुत्री पर उसकी सुन्दरता के कारण राजकुमार की

इसका पता लगा तो उसने आक्रमण कर दिया और सेठ की पुत्री
रण कर चला गया। राजा विक्रम ने उसका मुकाबला न किया।
गयी। राजा विक्रम ने माना कि उसके भाग्य में सेठ की पुत्री न
अगर वह कर्म करता अर्थात् राजकुमार से युद्ध करता तो निश्चय
प्राप्त करता। सेठ की पुत्री तब न जाती। अपने कर्म के द्वारा
सकता था।

ता विक्रम खाली हाथ वापस आ गया, पर उसे अपने अनुभव के
र प्रश्न का समाधान मिल गया था।

ते-देखते छह माह बीत गये।

दोनों आदमी राजदरबार में आये।

न्नदाता! आपकी आज्ञानुसार हम उपस्थित है। आपका क्या
?"

। जवाब मेरे पास है।" राजा ने कहा, "कर्म और भाग्य साथ-
लते हैं। भाग्य प्रबल है, पर इंसान कर्म न करे तो भाग्य डूब
कर्म मनुष्य करता रहे। अगर भाग्य साथ न देगा तो कर्म का
जायेगा। कर्म और भाग्य का यही संबंध है।

ता विक्रमादित्य का यह उत्तर सुनकर सभी दरबारी जयजयकार
।

दोनों भी प्रसन्न हो गये।

ोषजनक उत्तर मिल गया।

राजा विक्रम ने अपने सारे अनुभव सुना दिये और एक-एक बात
वन किया। सारा दरबार सुनता रहा।

प्रकार हे राजा भोज! विक्रम ने कर्म और भाग्य का संबंध
? क्या तुम्हारे पास इतनी बुद्धि है? तब तो तुम इस सिंहासन पर
ठो।

नी बात कहकर वह सुन्दरी आकाश में उड़ गयी। सारा दरबार
ा रह गया।

ता भोज फिर निराश हो गया। दरबार में सन्नाटा छा गया।
पर बैठने से उस दिन राजा भोज को फिर रुक जाना पड़ा।



कामकन्दला

राजा भोज, तुम इस सिंहासन पर अवश्य बैठो। मेरा नाम क
कन्दला है, पर बैठने से पहले तुम यह देख लो कि क्या तु
अपने जीवन में अत्यन्त परिश्रम से प्राप्त वस्तु का सरलता
दान कर दिया है। जो संसार के ऐश्वर्य को तृण के समान मान
है, वही सबसे बड़ा योगी, तपस्वी है। क्या तुम इस यो
हो ?"—काम कन्दला ने राजा भोज का हाथ पकड़ लिया अ
बोली, "सुनो। राजा विक्रमादित्य का एक करिश्मा। मैंने
देखा है।"

[रा]जा विक्रमादित्य राजदरबार में बैठे थे। उनका दरबार जनता के लिये खुला था। देखते-देखते एक ब्राह्मण ने प्रवेश किया।

"महाराज की जय हो"—वह बोला।

"कृपया आशीर्वाद दें।"

"चिरायु रहो। यश कीर्ति फहराये।"

"आप प्रयोजन कहें?"

"राजन्! मैं ब्राह्मण हूं पर कोई लालसा लेकर आपके दरबार में हीं आया हूं। मैं कैलाश मानसरोवर से चला आ रहा हूं।"

"आपके दर्शन···हमारा अहोभाग्य।"

"राजन! मानसरोवर में मैंने एक चमत्कार देखा। उसी का वर्णन रने आया हूं। आप कृपया सुनें।"

"कहिए।"

उस ब्राह्मण ने बतलाया, "राजन्! मानसरोवर में सूर्योदय के समय क खंभ निकलता है और वह बराबर बढ़ता जाता है। आकाश को छूने गता है। फिर शाम होते छोटा हो जाता है। अंधकार होते ही वह मान-रोवर के जल में लुप्त हो जाया करता है। मैंने लगातार कई दिन वह श्य देखा है।"

राजा विक्रम आश्चर्य करने लगे दरबारी भी चकित रह गये। इतना श्वास तो सबको था कि राजा विक्रमादित्य के दरबार में आकर कोई ठ नहीं बोल सकता है। ब्राह्मण ने अपनी बात समाप्त कर कहा, राजन्! आप कृपया यह चमत्कार स्वयं देखें।"

"मैं अवश्य ···ऊंगा।"—राजा विक्रम ने कहा।

ब्राह्मण जाने लगा तो राजा ने उसे बहुत पुरस्कार देकर सम्मान से दा किया।

उसके जाने के बाद राजा ब्राह्मण की बात पर विचार करने लगा। सने सचमुच एक बड़ा अजूबा बयान किया था।

रात को राजा विक्रम अपने शयनागार में इसी सब पर सोच रहा था। भी उसे अगिया बैताल और बैताल का ख्याल आया।

उन दोनों को बुलाया उसने। दोनों तत्काल आ गये।

"क्या आज्ञा है, राजन् !"

"हमें कल सुबह मानसरोवर पहुंचा देना।"

"अवश्य।"

दोनों चले गये।

प्रातःकाल राजा विक्रम महामंत्री को राजभार सौंप अगिया वैताल और बैताल की सहायता से मानसरोवर पहुंच गये। मानसरोवर का दृश्य बड़ा प्यारा था। मानसरोवर के मध्य में एक खंभ दीख रहा था। वह स्वयं आकाश की ओर बराबर बढ़ता जा रहा था। देखते-देखते वह आकाश की ऊंचाई को इस प्रकार छूने लगा कि उसका दीख पाना कठिन हो गया।

राजा विक्रम देखता रहा।

शाम के साथ-साथ खंभ छोटा होने लगा। अंधकार होते-होते वह मानसरोवर में गायब हो गया।

राजा विक्रम हैरान था।

दो तीन दिन तक वह इस दृश्य को देखता रह गया।

यकायक उसके मन में आया कि वह इस बात को देखें कि खंभ आकाश में कहां तक जाता है? अतएव उसने अगिया वैताल से कहा कि अगली सुबह उसे खंभ के सिरे पर बैठा दें।

अगली सुबह दोनों ने राजा विक्रम को खंभ के सिरे पर बैठा दिया।

खंभ आकाश की ओर बढ़ने लगा। उसके साथ-साथ राजा विक्रम झुलसने लगा। खंभ सूर्य की ओर बराबर बढ़ता जा रहा था। यकायक राजा विक्रम भस्म हो गया।

खंभ जब सूर्य के पास आया, तो सूर्य देवता उस पर राख देखकर चौंक गये।

अवश्य ही कोई जीव मर गया है।

सूर्य को बड़ा दुःख लगा। एक प्रकार से यह हत्या करना है। अतएव सूर्य देवता ने अमृत छिड़कर राजा विक्रम को पुनर्जीवित कर दिया।

राजा विक्रम ने उनको अपना परिचय दिया। सूर्य देवता ने प्रसन्न होकर अपना एक कुण्डल राजा विक्रम को दे दिया। कहा, "यह तुम्हारी प्रत्येक मनोकामना पूरी करेगा।"

राजा विक्रम खंभ पर बैठ कर शाम को नीचे आ गये। सूर्य भगवान के दर्शन पाकर वह धन्य हो गये थे···अत्यन्त प्रसन्नता के साथ वह सूर्य का गुणगान करते हुए वापस लौट पड़ें।

वह वापस आ रहे थे तो एक साधु मिल गया।

"तुम्हारी जय हो।-- यह साधु बोला।

राजा विक्रम ने उसे प्रणाम कर पूछा, "आज्ञा करें, ब्राह्मण देवता।"

"तुम्हारे पास एक कुण्डल है, वह मुझे दे दो।"

"आपको कैसे पता ?"

"योग के द्वारा···।"

"वह मुझे भगवान सूर्य द्वारा मिला है।"

"पता है। आप उसे मुझे दे दें। आगे तुम्हारी इच्छा···वैसे तुम्हारा बड़ा नाम सुना है।"—साधु जाने लगा तभी विक्रम ने वह कुण्डल निकाल कर साधु को दे दिया। ब्राह्मण राजा विक्रम को आशीर्वाद देता हुआ चला गया।

राजा विक्रम खाली हाथ वापस आ गये।

कामकन्दला बोली, "क्या कभी तुमने इस प्रकार का व्रत लिया है, राजन्! अगर किया हो तो इस सिंहासन पर जरूर बैठो।"

राजा भोज के पास कोई उत्तर न था। कामकन्दला हंसती हुई आकाश में उड़कर अन्तर्ध्यान हो गयी।



कुमुद

राजा भोज ! परोपकार करना सबसे बड़ी पूजा, सबसे बड़ा धर्म है। परोपकारी भगवान का सबसे प्यारा भक्त माना गया है। है। क्या तुमने कोई परोपकार किया है ? निःस्वार्थ भाव से परोपकार किया हो तो आओ, इस सिंहासन पर तुमको बैठा दूं। राजा भोज कुमुद की बात सुनकर सिर झुकाए रह गया। उसके पास इसका कोई जवाब न था।

कुमुद उसका रास्ता रोककर कहने लगी, "सुनो, राजा भोज ! हमारे विक्रमादित्य की एक कथा। यह मेरी आंखों देखी है।"

पंडितों ने फिर मुहूर्त निकाला। राजा भोज सिंहासन पर बैठने के लिये आया। उसका मन न मान रहा था। उस सिंहासन पर बैठकर वह अपना गौरव बढ़ाना चाहता था, पर हर बार बाधा पड़ जाया करती थी। इस बार भी मन में शंका थी, पर वह अपने को रोक न पा रहा था। इस बार भी जब वह सिंहासन की ओर बढ़ने लगा, तो अचानक एक पुतली निकलकर सामने आ गयी।

उसने रास्ता रोक लिया और कहने लगी।

राजा विक्रम प्रायः रात के सन्नाटे में चुपचाप राजमहल के शयनागार से निकल जाया करता था और नगर भ्रमण कर अपनी प्रजा की खोज खबर लिया करता था। वह चाहे जिस ओर निकल जाया करता था। इस प्रकार उसे सब पता रहता था कि कहां क्या हो रहा है?

राजा विक्रम रात गहराते ही निकल पड़ा।

चारों तरफ सन्नाटा था। राजा विक्रम चुपचाप चलता गया। अचानक एक स्त्री के रोने की आवाज आयी। राजा विक्रम ठिठक गया।

इतनी रात गये कौन स्त्री रो रही है?

रोने की आवाज की दिशा की ओर बढ़ता गया वह। कुछ दूरी पर एक स्त्री घर के बाहर बैठी रो रही थी। राजा विक्रम उसके सामने जाकर खड़ा हो गया।

"क्या बात है, बहिन? क्यों रो रही हो?"

स्त्री ने उसे सिपाही समझा और बोली, "सिपाही जी, मेरा आदमी मर गया है।"

"अरे···कहां है···?"

"वह तो सबेरे मरा है। उसे अगले चौराहे पर शूली पर लटका दिया गया है। सुबह लाश उतारी जायेगी। वह अभी लटका है।"

"क्या तुम्हारा पति अपराधी था?"

"हां, सिपाही जी। चोर था। राजा ने उसे फांसी की सजा दी।"

"तब तुम्हारा रोना व्यर्थ है। तुमको पता है। राजा विक्रम के राज्य में थोड़ा-सा अपराध करने पर भी बड़ा कठोर दंड मिलता है।"

"यह तो ठीक है कि उसने अपराध किया था। उसकी सजा मिली।"

"तब्र क्यों रो रही हो ?"

"मैं उसकी मौत पर नहीं रो रही हूं।"

"फिर क्या बात हो गयी ?—राजा विक्रम को उसकी बात बड़ी रहस्यमय लगी।

"मैं इसलिए रो रही थी कि रात को मैं उसे अपने हाथ से खाना खिलाया करती थी। काश ! एक बार उसे खाना दे सकती।"

राजा विक्रम आश्चर्य से बोला, "अब तो यह मर चुका है।"

"फिर भी एक बार उसे खाना खिलाने के लिये रो रही हूं।"

राजा ने कहा—"तुम तो समझदार हो। भला मुर्दा खाना खा सकता है। हां, अगर तुम्हें कोई सहारा चाहिए तो मैं राजा से कहकर व्यवस्था करा सकता हूं।"

"नहीं। इसकी जरूरत नहीं है। एक बार खाना खिलाने का मन था। वह शूली पर ऊंचाई पर लटका है, इस कारण खिला नहीं पा रही। कोई मुझे सहारा नहीं दे रहा। इसी कारण रो रही हूं।

"ऐसा करना क्या अच्छा है ?"

"एक बार मेरी इच्छा थी। तुम मदद कर दो न। अपने पति के लिए एक बार खाना खिला दूं। इसके बाद मैं उसकी याद में बाकी जीवन बिता लूंगी।"

राजा विक्रम को उस पर दया आ गयी। बोला, "चलो मेरे साथ। मैं तुम्हारी सहायता कर दूंगा अपने मृत पति को खाना खिला देना तुम। फिर देखो और जिद्द न करना।"

"ठीक है।"—वह मान गयी।

राजा विक्रम उसे अपने साथ लेकर चौराहे की ओर बढ़ गया। चौराहे का दृश्य बड़ा डरावना था। बीचोंबीच लाश लटक रही थी। लटकती लाश अपराधियों के लिए चेतावनी थी।

विक्रम लाश के पास रुक गया।

वह स्त्री भी रुक गयी। उससे खाना हाथ में ले रखा था।

"देखो। मैं तुमको अपने कंधों पर खड़ा कर लूंगा। आसानी से तुम खाना दे सकती हो। तुम्हारा हाथ सरलता से मुंह तक चला जायेगा।"

स्त्री प्रसन्न हो गयी। उसका रोना रुक गया। देखो राजा भोज, रात ां सन्नाटे में राजा विक्रम ने उसे अपने कंधों पर खड़ा कर लिया। अपनी जा के सुख और प्रसन्नता का वह कितना ख्याल रखता था।

स्त्री के हाथ मृत पति तक पहुंच गये। उसने भोजन का ग्रास मुंह में डाला।

यकायक खाना नीचे गिर गया। भला मुर्दा कैसे खा सकता था? राजा विक्रम ने देखा। गिरे हुए खाने के स्थान पर हीरे जवाहरात पड़े दमक रहे थे। स्त्री ने पुनः दूसरा कौर डाला? वह यकायक सुवर्ण मुद्राओं ों बदल कर नीचे गिर गया। राजा विक्रम चौंक गया।

हीरे जवाहरात गिरते देखकर उसने फौरन उस स्त्री को कंधे से नीचे उतार दिया।

बोला—"कौन हो तुम? सच-सच बतलाना। योगिनी, डाकनी, ांखनी···जादूगरनी···सच-सच कहो। मेरा नाम विक्रमादित्य है। झूठ मत बोलना।"

उस युवती ने मुस्कराकर कहा, "मैं तुम्हारे राज्य की लक्ष्मी हूं। तुम्हारी परीक्षा ले रही थी। एक गरीब दुखिया की तुम इस तरह सहायता करते हो। मैं प्रसन्न हूं।"

राजा विक्रम ने हाथ जोड़कर लक्ष्मी को प्रणाम किया।

"मांग लो···क्या मांगना है।"

"आपका दिया सब कुछ मेरे पास है। मुझे कुछ नहीं चाहिए।" विक्रम ने कहा।

"फिर भी···अच्छा···हीरे जवाहरात अपने पास रखो"—लक्ष्मी ने कहा।

राजा विक्रम ने हीरे जवाहरात न लिये। कहा, "मां भूख लगने पर हीरे जवाहरात खाकर पेट नहीं भर सकता। मुझे अन्न चाहिए।"

"अन्न?"

"हां, मां। अन्न से ही आदमी जीवित रह सकता है।"

"तब मेरी बहिन अन्नपूर्णा के पास चलो।"

तब लक्ष्मी राजा विक्रम को अपने साथ लेकर गंगातट पर आयी।

अन्नपूर्णा को पुकारा। अपनी बहिन की पुकार पर अन्नपूर्णा आ गयी। लक्ष्मी ने सब कुछ बतलाया। अन्नपूर्णा प्रसन्न हो गयीं।

बोली, "ठीक है।"

अन्नपूर्णा ने एक हांडी राजा को दी। कहा, "इस हांडी से मन चाहा अन्न बराबर मिलता रहेगा। जो इच्छा करो वही इससे निकलेगा। हजारों लाखों आदमी खा सकते हैं। हांडी खाली न होगी। यह मेरा भंडार है।"

राजा विक्रमादित्य ने प्रसन्नतापूर्वक हांडी ले ली। लक्ष्मी और अन्नपूर्णा अन्तर्ध्यान हो गयीं। राजा वापस लौट पड़ा।

थोड़ी दूर पर एक ब्राह्मण मिला। राजा विक्रम के हाथ में हांडी देखकर बोला, "भाई। बड़ी भूख लगी है। इसमें कुछ है क्या ? दे दो।"

राजा विक्रम ने पूछा, "क्या खाओगे ?"

"मिठाई पूरी—अगर हो तो···"

"मिठाई पूरी ही मिलेगी।"—विक्रम ने कहा।

उसने हांडी से मिठाई पूरी निकालकर ब्राह्मण को दी। ब्राह्मण ने भरपेट भोजन किया। जब वह तृप्त हो गया तो बोला, "खाना खिला दिया। अब दक्षिणा दो।"

"क्या दूं दक्षिणा में ?" राजा ने पूछा।

"तुम यह हांडी दे दो।"

सुनो राजा भोज। विक्रमादित्य ने वह हांडी उस ब्राह्मण को दे दी। खाली हाथ वह वापस राजमहल आ गया। अब बोलो, क्या तुम इस प्रकार कर सकते हो या तुमने अपने जीवन में कभी भी इस प्रकार का कार्य किया है। अगर किया है, तो इस पर बैठो।"

राजा भोज पुतली की इस बात का जवाब न दे सका। वह पुतली अपनी बात पूरी कर आकाश में जाकर अन्तर्ध्यान हो गयी।

राजा भोज सिर झुकाए खड़ा रह गया। सिंहासन पर बैठने का मुहुर्त फिर समाप्त हो गया। उसने सचमुच इस प्रकार का कोई परोपकार न किया था। दरबारी भी खामोश खड़े थे। उनको पता था कि राजा भोज ने ऐसा कुछ भी नहीं किया।

इस दिन भी सिंहासन रीता ही रखा रह गया।



पुष्पावती

को राजा भोज…अभी नहीं। मैं पुष्पावती तुमको रोक रही हूं। स सिंहासन पर वही बैठ सकता है, जिसका चरित्र ऊंचा हो। जा भोज, जिसका चरित्र नहीं है, उसके पास कुछ नहीं है। रित्र ही सब कुछ है…क्या तुम्हारा चरित्र विक्रमादित्य के मान है। अगर है, तो इस पर बैठो…?

जा भोज को रोककर पुष्पावती कहने लगी, मैं तुमको राजा क्रमादित्य की एक कथा सुनाती हूं, सुनो!

एक दिन की बात है।

राजा विक्रमादित्य अपने दरबार में बैठे थे। एक बढ़ई काष्ठ का बना घोड़ा लेकर आया। उसने राजा से कहा, "अन्नदाता, आपकी जय हो। मैं यह घोड़ा आपके लिये लाया हूं।"

"धन्यवाद···पर यह काष्ठ का बना है।"

"हां, श्रीमन्! यह घोड़ा मेरी कला और ज्ञान का सर्वोत्कृष्ट नमूना है। यह घोड़ा आकाश में पवनवेग से उड़ सकता है। आपको सादर समर्पित है।"

"तुम्हारी कला की हम प्रशंसा करते हैं।

राजा विक्रमादित्य ने बढ़ई को बहुमूल्य उपहार देकर घोड़ा अस्तबल में रखवा दिया।

बढ़ई बोला, "अन्नदाता! मैं जा रहा हूं एक बात का ध्यान रखें कि इस घोड़े पर वार बिलकुल न करें, वरना यह बेकाबू हो जायेगा और सवार को उठाकर फेंक देगा।'

"ठीक है।"

काठ का वह घोड़ा काफी समय तक राजा विक्रमादित्य के अस्तबल में पड़ा रहा। एक दिन राजा को उसका ध्यान आया। उस पर सैर करने का मन हो गया।

वह काठ का घोड़ा अस्तबल से बाहर लाया गया। रत्न जडित जीन रख दी गयी और राजा विक्रम उस पर सवार हो गया।

पलक झपकते ही घोड़ा आसमान में उड़ गया और पवनवेग से उड़ने लगा। उसकी गति पर राजा को बड़ा ही आनंद आया। वह कितना तेज और उड़ सकता है? यह जानने के लिये राजा ने एक ऐड़ लगाकर चाबुक जड़ दिया। चाबुक लगते ही घोड़ा हिनहिनाया। उसकी भयानक हिन-हिनाहट से आकाश कांप गया। उसका वेग और बढ़ गया। तब राजा ने एक चाबुक और मार दिया। अब क्या था। घोड़े का वेग इतना तेज हो गया कि राजा अपने को संभाल न पा रहा था।

यकायक ख्याल आया कि बढ़ई ने चाबुक मारने से मना किया था··· अब क्या हो सकता था···घोड़ा अचानक पलट गया। उसका पलटना थ

ाजा उसकी पीठ पर से लुढ़क गया। घोड़ा गायब हो गया। राजा
ाश से नीचे ब़े वेग से गिरने लगा।

राजा ने तत्काल अगिया बैंताल और बैंताल का स्मरण किया।

दोनों आ गये।

राजा को संभालकर सकुशल जमीन पर उतार दिया।

जहां राजा उतरा था, वहां पर घना जंगल था। घना जंगल देखकर
का मन घूमने का हो गया कि देखा जाये···क्या है? उसने दोनों को
कर दिया।

अगिया बैंताल और बैंताल चले गये। राजा विक्रम अकेला घने जंगल
हलने लगा। दूर-दूर तक आदमजाद का निशान न था।

यकायक एक स्थान पर राजा रुक गया। एकटक देखता रह गया।
ो एक पेड़ में एक बंदरिया बंधी थी। राजा आश्चर्य करने लगा। इस
ान घने जंगल में बंदरिया को इस तरह आदमी के सिवाय दूसरा नहीं
सकता है।

अवश्य ही कोई मनुष्य यहां पर है।

आखिर कौन है वह।

राजा विक्रम छिप गया।

आड़ में पड़ा रहा। यह देखने के लिये कि कौन इस बंदरिया के पास
है?

ाम हो गयी।

ुछ देर बाद एक साधु आता दीखा। वह एक पेड़ के पास गया।
पत्तियां तोड़ीं और उनका रस बंदरिया के शरीर पर टपका दिया।

ह बंदरिया रस टपकते ही एक सुन्दर युवती बन गयी।

ाधु उसका हाथ पकड़कर भीतर ले गया।

ारी रात वह बाहर न आया।

वह उसने एक दूसरे पेड़ के पत्तों का रस निकालते देखा उस साधु
इस रस को निचोड़कर उसने युवती पर छिड़क दिया। वह फिर
ा बन गयी। तब साधु उसको बांधकर चलता बना।

ारा चमत्कार विक्रम देखता रह गया।

साधु के जाने के बाद विक्रम ने वैसा ही कर बंदरिया को सुन्दर यु
बना दिया तो वह घबराकर भागने लगी, पर विक्रम ने उसका हाथ प
लिया।

"डरो मत। मेरा नाम विक्रम है। मैं तुम्हारी मदद कर सकता
क्या तुम संकट में हो ?"

युवती ठिठक गयी। बोली, "आपने मुझे बंदरिया से ऐसा कैसे ब
दिया ?"

"मैं कल से छिपा पड़ा हूं। साधु की सब करामात देख रहा हूं। क
तो तुमको फिर बंदरिया बना दूं।"

"नहीं-नहीं।" युवती घबराकर बोली, "इस नरक से मुझे निकाल
मेरे माता-पिता के पास पहुंचा दो।"

"तुम कौन हो ?" राजा ने पूछा।

युवती बोली, "मैं अनंग देश की राजकुमारी हूं। दुष्ट साधु म
अपहरण कर लाया है। रात दिन नर्क में डाल रखा है। मेरा जीवन बर
कर दिया है। हर रोज मुझे सताता है। बंदरिया बनाकर बांधकर च
जाता है।"

"डरो मत। मैं तुमको अनंग देश पहुंचा दूंगा।"

"पर खतरा है, साधु बहुत भयानक है। वह तुमको जिंदा
छोड़ेगा।"

"इसकी चिंता मत करो।"—राजा विक्रम ने कहा। "मैं उससे नि
लूंगा। तुम मेरे साथ चलो।"

राजा विक्रम उसे साथ लेकर चल पड़ा। कुछ ही दूर गया था
यकायक एक धमाका हुआ और धुआं निकला। राजा और वह सु
ठिठक गये।

धुएं के बीच से वह साधु निकला। उसने गरजकर विक्रम का र
रोक लिया।

"तू कोन है ? इसको कहां लिये जाता है।"

"यह अपने घर जायेगी।"—विक्रम ने जवाब दिया।

"तू इसको घर पहुंचाने वाला कौन होता है ?"—साधु गरज उ

"मुसीबत में पड़े हर आदमी की मदद करना मेरा धर्म है।"
"तू नहीं जा सकता। छोड़ दे इसको।"
"हरगिज नहीं।"
"देख। बेमौत मारा जायेगा।"
"परवाह नहीं है।" विक्रम बोला—"मैं अपना कर्त्तव्य पालन ...गा।"
"अच्छा। देख···इसका नतीजा।"
साधु राजा पर झपटा, पर विक्रम ने तलवार उसे रोक दिया। अचा- वह साधु भयंकर शेर के रूप में गर्जना करने लगा और राजा विक्रम ... निगल जाने लपका, पर तभी राजा ने अपनी चमत्कारी तलवार से ...का सिर काट गिराया। साधु मर गया, पर अपने रूप में आ गया। वह ...व में एक राक्षस था।
साधु का इस प्रकार अन्त देखकर सुन्दर राजकुमारी ने संतोष की सांस ...
"पापी मारा गया। आप सचमुच बहादुर हैं। अब कोई डर नहीं ...।"
राजा मुस्कुराया, "अब चलो।"
"रुको।"
युवती ने कहा और वह वापस लौट गयी। राजा विक्रम देखता रह ...।
"मैं अभी आती हूं।"
वह चली गयी। ओझल हो गयी। कुछ देर बाद लौटी तो उसके हाथ ...ल रंग का कमल का एक फूल था।
"मैं यह फूल लेने गयी थी।"
"इसमें क्या है?"—राजा ने पूछा।
"इस फूल से प्रतिदिन एक लाल निकलता है। साधु ने यह मुझे दिया ...क मैं खुश रहा करूं। आप इसे अपने पास रखिए।"
राजा ने वह फूल अपने हाथ में ले लिया। दोनों चल पड़े। वह राज- ...ी अत्यन्त सुन्दर थी। उसकी सुन्दरता का जवाब न था, पर राजा

विक्रम अविचलित रहा। उसे अपने साथ लेकर अनंगपुर आया। रा
कुमारी जब राजमहल में आयी तो खुशियां बिखर गयीं। खूब स्वाग
किया गया। राजकुमारी ने सब कुछ बतला दिया। अनंग नरेश विक्रम प
अत्यन्त प्रसन्न हो गये। सम्मानपूर्वक राजभवन में ठहराया पर रा
विक्रम ने अपना परिचय न देकर अपने को एक साधारण सिपाही बतलाय

अगले दिन राजा अनंगपुर ने विक्रम से कहा, "तुम मेरी लड़की
विवाह कर लो। तुम्हारे समान वीर को मैं अपनी पुत्री सहर्ष दे रहा हूं
विवाहोपरान्त तुम यहां के राजा बनोगे।"

अनंगपुर नरेश की यह बात सुनकर राजा विक्रमादित्य ने नम्रतापूर्व
कहा—राजन्। कृपया क्षमा करें। प्रत्येक स्त्री को पत्नी नहीं बनाया
सकता। वह मां और बहिन भी है।"

अनंगराज आश्चर्य कर उठे।

"हमारी इतनी सुन्दर राजकुमारी देखकर और राजपाट पाकर
क्या तुम यह मौका छोड़ दोगे?"

"आपकी कृपा के लिये धन्यवाद।" राजा विक्रम ने कहा—"मैं
कर्त्तव्य का पालन किया है। इसका मूल्य मैं नहीं लूंगा।"

अनंग नरेश को बड़ा आश्चर्य लगा।

राजा विक्रम अनंग देश से वापस लौट पड़े। एक साधारण सैनिक
समान उन्होंने अपना वेश बना रखा था। कई दिन की यात्रा समाप्त क
वह वापस अपने राज्य उज्जैन में आये।

नगर प्रवेश करते समय एक बालक की नजर कमल के फूल पर पड़ी
वह राजा विक्रम से मांगने लगा।

"तुम क्या करोगे?"

"मैं खेलूंगा।"

राजा विक्रम ने वह फूल बालक को दे दिया। गरीब बालक
पाकर प्रसन्न हो गया।

राजा विक्रम राजमहल में आ गये। अपने राज का शासन
संभाल लिया। आनंद से राज्य करने लगे। देखा राजा भोज विक्रमा
किस प्रकार चरित्रवान थे। वह स्त्री जाति का बड़ा सम्मान करते

क्या तुम भी ऐसा करते हो तो बोलो।"

राजा भोज चुप था। उसके पास कोई जवाब न था।

"इसके बाद और सुनो राजा भोज। एक दिन सिपाही एक गरीब आदमी को पकड़कर राजदरबार में ले आय।

"महाराज! इसके पास चोरी के लाल हैं। यह निहायत गरीब है। यह जौहरी के पास ठाल बेचने गया था।"

राजा विक्रम ने पूछा, "क्या तुम्हारे लड़के के पास कमल का लाल फूल है?"

"हां। अन्नदाता। एक राहगीर उसे दे गया था।"

"तुम जा सकते हो।"

राजा विक्रम ने उसे छोड़ दिया। वह गरीब राजा विक्रम की जय-जयकार करता चला गया। वह हैरान था कि राजा को सारा रहस्य मालूम है, पर इसके बाद भी अपना खजाना भरने के लिये राजा ने उससे कमल का लाल फूल नहीं मांगा। उनका यह त्याग देखकर वह चकित था।

राजा भोज क्या तुम इस प्रकार कर सकते हो? अगर हो तो इस सिंहासन पर बैठो, वरना नहीं।

और यह पुतली भी अपनी रामकथा समाप्त कर आकाश में उड़ गयी। राजा भोज और उसका सारा दरबार यह सब चमत्कार देखकर आश्चर्य चकित था। राजा भोज उस दिन भी सिंहासन पर न बैठ सका।



मधु मालती

रुको राजा भोज ! क्या तुमने कभी किसी ब्राह्मण का ऐसा सत्कार किया है, जैसा कि राजा विक्रमादित्य ने किया था। अतिथि सत्कार भगवान की पूजा के बराबर होता है।
राजा भोज ! विक्रमादित्य का मुकाबला करने वाला ही इस सिंहासन पर बैठ सकता है···दूसरा कोई नहीं।
हम सब पुतलियां इस सिंहासन पर केवल उसीको बैठने देंगी··· जिसमें राजा विक्रम का कोई गुण हो। बोली—है कोई तुम्हारा काम ऐसा !

जैसे ही राजा भोज सिंहासन की ओर बढ़ा, वैसे ही एक युवती बाहर आ गयी। उसने राजा भोज को रोक लिया। "राजा भोज। मेरा ाम मधुमालती है। तुम इस सिंहासन पर बैठना चाहते हो, पर क्या तुममें ाजा विक्रम के समान कोई गुण है ? मैं तुमको अपनी आंखों देखी एक कथा सुनाती हूं। राजा विक्रम जैसा राजा न हुआ है और न होगा।"

मधुमालती ने कहना शुरू किया, "राजा विक्रम आनंदपूर्वक अपना ासन कर रहे थे। एक बार वह यज्ञ करने बैठे। जब यज्ञ चल रहा था ौर राजा विक्रम हविष्य डाल रहे थे, तो एक ब्राह्मण अत्यन्त गंदा, मैला ुचैला आया और बोला, मैं ब्राह्मण हूं। राजा से बात करना है।

राजा विक्रम ने आंखों में प्रणाम के भाव लाकर उसको नमस्कार कया। हविष्य देने के कारण उनके हाथ खाली न थे।

ब्राह्मण वहीं खड़ा रहा।

राजा विक्रम यज्ञ समाप्त कर खड़े हो गये।

कहा, "क्या आज्ञा है, ब्राह्मण देवता।"

ब्राह्मण बोला, "राजन् ! मैं ब्राह्मण हूं। तुमने मेरा सत्कार नहीं कया।"

"भगवन् ! मैंने आपको आंखों से प्रणाम किया था। हविष्य रोककर ाथ कैसे जोड़ सकता था।"

"जाओ क्षमा किया पर सुनो, आज मैं तुम्हारा अतिथि बनना चाहता ।"

"यह मेरा सौभाग्य है। पधारिये।"

राजा विक्रम ने उसे अपना अतिथि मानकर ठहरा लिया। वह ब्राह्मण ाजमहल में ठहर गया पर जगह-जगह थूकने लगा। मूत्रत्याग करने लगा ौर विष्ठा भी कर चला। सर्वत्र दुर्गन्ध फैलने लगी। राजा विक्रम के माथे र शिकन तक न पड़ी। वह बराबर सेवा में हाजिर था।

कुछ देर बाद सारा राजमहल भयानक दुर्गन्ध से भर गया। राजमहल सेवक भाग गये। ब्राह्मण की फरमाइशें कोई पूरी न कर रहा था।

"जल लाओ प्यास लगी है।"—ब्राह्मण चीखा।

राजा विक्रम स्वयं जल लाया।

"तुम्हारे सेवक कहां चले गये ?" ब्राह्मण ने पूछा।

"सेवकों की आप चिंता न करें। आपका सबसे बड़ा सेवक हाजिर है : आज्ञा करते रहें।"

राजा विक्रम ने दुर्गंध की शिकायत न की और न ही कहा कि दुर्गन्ध के कारण सब भाग गये हैं। वैसे भयानक दुर्गन्ध के कारण स्वयं राजा विक्रमादित्य का सर फट रहा था। ब्राह्मण राजा के शयनागार में विष्ठा कर देता था। अपने कपड़ों और शरीर पर भी उसने विष्ठा लगा रखी थी।

"राजन् ! बहुत दूर से पैदल आने के कारण पैरों में दर्द हो रहा है। पैर दबाओ।"

"जो आज्ञा।"

राजा विक्रम पैर दबाने लगा। भयानक दुर्गन्ध से बेहोशी भी आ रही थी, पर राजा विक्रम अपने को किसी प्रकार संयमित किए हुए था।

राजा विक्रम बड़ी देर तक उसके पैर दबाता रहा।

ब्राह्मण सो गया।

राजा विक्रम उसके पास बैठा रहा। बिना ब्राह्मण की आज्ञा के वह हट नहीं सकता था। उसका सिर चकराता रहा। आंसू बहने लगे। फिर भी वह बैठा रह गया।

ब्राह्मण की नींद टूट गयी।

"भोजन लाओ।"

राजा विक्रम स्वयं भोजन ले गये। राजमहल के सभी निवासी भयानक दुर्गन्ध के कारण भाग गये थे। राजा भोजन लेकर आया।

"स्वीकार करें महाराज।"—वह नम्रतापूर्वक बोला।

भोजन के पास ही ब्राह्मण ने विष्ठा कर दी। फिर वहीं बैठकर सोने की थाली में लाया राजा का भोजन चपर-चपर खाने लगा। राजा विक्रम हाथ जोड़े सामने खड़ा रहा।

ब्राह्मण ने भोजन करने के बाद फिर भयानक विष्ठा कर दी। राजा विक्रम के माथे पर शिकन तक न पड़ी। ब्राह्मण बोला, "अब मैं विश्राम करूंगा। तुम यहीं बैठो।"

"जो आज्ञा अतिथिदेव।"

वह ब्राह्मण विश्राम करने लगा। भयंकरतम गंध भरी थी, पर राजा विक्रम अविचल बैठा था। उसे लग रहा था कि अब वह मूर्च्छित हो जायेगा।

अचानक ब्राह्मण उठकर बैठ गया। उसने राजा विक्रम को गले लगा लिया। जैसे ही वह गले लगा कि वह दीन-दरिद्र फटे हाल ब्राह्मण एक देवता में बदल गया। साथ ही साथ सारा राजमहल अद्‌भुत सौंधी सुगन्ध से भर गया। जहां गन्दगी और विष्ठा थी, वहां-वहां एक से एक सुगंधित रंग-बिरंगे फूल खिल गये। सारा वातावरण सुगंधमय हो गया।

"अतिथि सत्कार में तुम खरे उतरे, राजा विक्रम"—वह बोला, "मेरे लिये तुम यज्ञ कर रहे थे। मैं वरुण हूं। तुम्हारे राज्य में कभी सूखा न पड़ेगा। यह मेरा वचन है।"

वरुणदेव राजा विक्रम को आशीर्वाद देकर चले गये। महल से सुगंध निकलते ही सब वापस आ गये और राजमहल रौनक से भर गया। सर्वत्र खुशियां बिखर गयीं।

देखा राजा भोज! क्या तुम इतने धैर्य और विश्वास के साथ किसी अतिथि का जो ऐसा हो, स्वागत कर सकते हो। फटे हाल आदमी को तो तुम अपने पास फटकने भी न दोगे। यह भूल जाया करते हो कि हर में भगवान है। तुम किसी सजीव या निर्जीव का अपमान करते हो तो उसका नहीं भगवान का अपमान करते हो।"

मधुमालती हंसने लगी। बोली, "अगर तुममें ऐसा कोई गुण है, तो जरूर इस सिंहासन पर बैठ सकते हो।"

अपनी बात कहकर मधुमालती आकाश में उड़ गयी। अन्तर्ध्यान हो गयी। राजा भोज और उसका सारा दरबार सिर झुकाए खड़ा रह गया। मधुमालती की बात का किसी के पास उत्तर न था। राजदरबार में गहरा सन्नाटा बना रहा।



प्रभावती

राजा भोज के आगे बढ़ते ही एक और पुतली बाहर आ गयी।
"मेरा नाम प्रभावती है, राजा भोज ! क्या तुमने कभी किसी का दुःख दूर करने के लिये अपने प्राणों की बाजी लगायी है ? संसार के दुःखी प्राणियों का दुःख दूर करना भगवान की सबसे बड़ी उपासना है। बोलो, क्या तुमने ऐसा किया है ? किया है, तो सिंहासन पर बैठो। सुनो, मैं राजा विक्रम का एक उदाहरण देती हूं। यह घटना मेरे सामने घटी है।"

प्रातः काल का सुहाना मौसम था। राजा विक्रमादित्य आनंदपूर्वक अपने महल के उद्यान में हिडोले पर बैठा प्रकृति का आनंद ले रहा था। राजा का नियम था कि कोई भी व्यक्ति कभी भी उसके पास आ सकता है। किसी को भी रोका न जाये। विक्रम से कभी भी लोग मिल सकते थे। वह आधी रात के समय भी तैयार रहता था। राजा अधिक देर तक बैठ न पाया क्योंकि द्वारपाल ने सूचना दी, एक नवयुवक मिलना चाहता है।

"आने दो"—राजा विक्रम ने कहा।

वह नवयुवक आ गया। वेशभूषा से वह अच्छे कुल का प्रतीत हो रहा पर उसका शरीर कृश पड़ गया था और चेहरा एकदम कुम्हला गया था। आंखों में आंसू थे। वह चुपचाप राजा विक्रमादित्य के सामने आकर खड़ा हो गया।

"कौन हो तुम ? क्या काम है ?"—राजा विक्रम ने पूछा।

"मैंने आपको किसी प्रकार का अभिवादन नहीं किया। आप समझ सकते हैं। मैं कौन हूं ?"

विक्रम ने ध्यान से देख कहा, "शायद किसी देश के राजकुमार हो।"

"हां। मैं जलबंध नगरी का राजकुमार हूं। आपके पास सहायता के लिये आया हूं।

"बोलो।"

"राजन्।"—राजकुमार बोला, "मेरे पड़ोस में जल सागर राज्य है। वहां की राजकुमारी वसुन्धरा है। वह अद्वितीय रूपवती है। उसके समान सुन्दर युवती इस भूलोक में और नहीं है। बचपन से हमारा साथ रहा है। अब हम दोनों में प्रेम हो गया है।"

राजा विक्रम चुपचाप सुनता जा रहा था।

"मैं उससे विवाह करना चाहता हूं। मगर उसके पिता ने स्वयंवर रचा रखा है और एक भयानक शर्त लगा रखी है। दुनिया का शायद ही कोई आदमी इस शर्त को पूरा कर सके।"

"क्या है वह शर्त ?"—राजा विक्रम ने पूछा।

"वसुन्धरा के पिता ने तेल से खौलता एक कड़ाहा रख छोड़ा है। उसकी शर्त है कि जो भी व्यक्ति तेल के उस खौलते कड़ाहे में डुबकी

लगाकर बाहर आ जायेगा, वही राजकुमारी वसुन्धरा का पति होगा। एक से एक राजा इस शर्त के कारण डरकर वापस जा रहे है।"

"तुम क्या चाहते हो?"

"मैं राजकुमारी का वरण करना चाहता हूं। आपके नाम को सुनकर आया हूं। आपके पास सभी बातों का हल है। आप लोगों का कष्ट दूर करते हैं।"

राजा विक्रम चुप रह गया। तेल के खोलते कड़ाहे में डुबकी लगाकर भला कौन जीवित निकल सकता है! स्वयंवर की शर्त पूरी किए बिना राजकुमारी का वरण नहीं होगा।

"कृपया आप मेरी सहायता करें।"

"ठीक है। कल आना।"—राजा ने कहा।

राजकुमार वापस चला गया। उसके जाने के बाद राजा विक्रम चिंता में पड़ गया। समस्या का हल क्या है? उसको कुछ न सूझ रहा था। रात को अपने शयनागार में भी राजा विक्रम चिंतन करता रहा। यकायक उसको अगिया बैताल और बैताल का ख्याल आया। उसने दोनों का स्मरण किया।

दोनों सामने आ गये—"क्या आज्ञा है राजन्!"

राजा विक्रम ने अपनी समस्या सामने रखी। दोनों कुछ देर सोचते रहे। फिर अगिया बैताल बोला, "मैं उपाय करता हूं।"

वह चला गया।

कुछ देर बाद आया और कुछ विचित्र से छोटे-छोटे दाने राजा विक्रम के हाथ पर रखकर कहा, "राजकुमार जैसे ही कढ़ाई में कूदे यह बीज डाल देना। कढ़ाहे का सारा ताप उसी क्षण समाप्त हो जायगा। खोलता तेल बर्फ के समान शीतल पड़ जायेगा। आपका काम बन जायेगा।"

"राजकुमार खुद इन बीजों को लेकर कूदे तो...!"

"नहीं बीज कोई और छोड़े।"

"इसका मतलब है। मुझे स्वयं जाना होगा।"

"काम बनाना है, तो ऐसा ही करना होगा।"—अगिया बैताल बोला।

"अच्छा, ठीक है।"

दोनों चले गये। राजा विक्रम निश्चित होकर सो गया। उसने राज-मार की सहायता करने का निश्चय कर लिया। राजकुमार का दुःख टाकर रहेगा।

अगले दिन सुबह राजकुमार आया। राजा विक्रम ने कहा, "चलो। तुम्हारे साथ स्वयं स्वयंवर स्थल पर चलता हूं।"

राजा विक्रम उसके साथ चल पड़ा। कई दिन की अपनी यात्रा समाप्त र यह दोनों स्वयंवर स्थल पर आये। वहां पर बाकयदा एक बहुत भारी ढ़ाहा, बहुत बड़ी भट्टी पर रखा था। उसमें लबालब तेल भरा था। तेल तरह खौल रहा था। अनेक युवक आ रहे थे पर राजा की शर्त और ल का खौलता भयानक कढ़ाहा देखकर वापस चले जाते थे। भला कौन ीवित निकल सकता था!

कोई जिन्न, राक्षस या देवता ही इस शर्त को पूरी कर सकता है। तब क राजकुमारी क्वाँरी ही बैठी रहेगी। राजा विक्रम ने राजकुमारी ुन्धरा को देखा। वास्तव में वह अद्वितीय सुन्दरी थी। उसका रूप यौवन लोक में भी दुर्लभ था। राजा विक्रम चकित रह गया।

उसने राजकुमार से कहा—कढ़ाई में कूद जाना।"

"पर···पर···" राजकुमार घबरा गया।

"तुमको जीवित करने का जिम्मा मुझ पर है। अविश्वास मत करो। ा विश्वास कर कूद पड़ना।"—राजा ने साहस बंधाया।

राजकुमार डर रहा था पर उसने राजकुमारी का वियोग बर्दाश्त रने के स्थान पर जल कर मर जाना ठीक समझा। वह कढ़ाई के पास ा। ईश्वर का नाम लेकर कूद पड़ा। तभी राजा विक्रम ने वह बीज डाल ो। बीज पड़ते ही खौलती कढ़ाही क्षण मात्र में शान्त हो गयी और बर्फ के समान शीतल पड़ गया। राजकुमार उस कढ़ाही से सकुशल वित आ गया।

राजकुमार को बाहर निकलते देखकर लोग जयजयकार कर उठे। कुमारी व्रसुन्धरा ने उसके गले में जयमाला डाल दी। राजा ने वसुंधरा विवाह राजकुमार से कर दिया।

राजा ने पूछा, "राजकुमार, तुमने यह विद्या कहां से सीखी ?"

"मैं इस विषय में कुछ नहीं जातता। राजा विक्रमादित्य ने मेरी सहायता की है। उन्हीं के कारण मैं बसुंधरा को पा सका हूं।"

"राजा विक्रमादित्य…"

"हां। वह सामने खड़े हैं।"

राजा दौड़कर उनसे लिपट गया। उनकी भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। बसुधरा जैसी सुन्दर युवती स्वयं न अपना कर राजकुमार की इच्छा पूरी कर उसका दुःख दूर कर दिया। वह गद्गद् हो गया।

राजा विक्रमादित्य वापस आ गये।

राजा भोज! क्या तुमने कभी किसी का कष्ट दूर किया है? क्या कभी किसी की इस प्रकार सहायता की है? अगर ऐसा है, तो इस सिंहासन पर बैठो, वरना नहीं।

प्रभावती अपनी बात कहकर आकाश में उड़ गयी। राजा भोज मौन खड़ा रह गया। सर्वत्र गहरा सन्नाटा बना ही था।



पदमावती

संकट में पड़ी अबला का जो उद्धार नहीं करते हैं या किसी
ा पर अत्याचार होते देखकर मौन रह जाते हैं, ऐसे पुरुष
के भागी बनते हैं।

ुमने कभी किसी जरूरग्रस्त अबला की सहायता की है,
भोज ?

ो तुम इस सिंहासन पर अवश्य बैठो, अन्यथा नहीं। मेरा
दमावती है। सुनो, विक्रम की एक कथा सुनो।

पदमावती राजा भोज का रास्ता रोककर खड़ी हो गयी।

बोली, "राजा भोज, एक समय की बात है···राजा विक्रमादित्य सद की तरह रात में नगर भ्रमण के लिये निकला।

रात का गहरा सन्नाटा फैला था। नगर रक्षक अपने-अपने स्थान पर सजग थे। वह सदा सजग रहा करते थे, क्योंकि उन सबको राजा क भय बना रहता था कि न जाने कब राजा निकल आये और कहां चल पड़े सबको इस बात का पता था कि राजा रात को नाना प्रकार के वेश बनाक भ्रमण करता है। किस रूप में कहां प्रगट हो जायेगा, क्या पता?

राजा साधारण नागरिक के वेश में निकल पड़ा था।

सारा नगर निद्रामग्न था।

सब तरफ सुख और शांति ही दिखलायी पड़ रही थी।

यकायक एक संकरी सड़क पर आते ही राजा विक्रम ने किसी महिल की चीख सुनी। वह आवाज की दिशा में लपक गया। देखता क्या है, ए स्त्री के साथ एक तगड़ा लम्बा सा आदमी बलात्कार करने की कोशिश लगा था। उसने स्त्री को बेतरह दबोच रखा था, पर वह काबू में न अ रही थी। पूरी शक्ति के साथ उसका विरोध कर रही थी। साथ ही चीर भी रही थी।

राजा विक्रम ने फौरन तलवार निकाल ली।

ललकार उठा, ठहर जा पापी, नालायक। कौन है तू। राजा विक्रम राज में एक नारी के साथ ऐसा दुस्साहस कर रहा है:···।"

नंगी तलवार लेकर राजा विक्रम ने उसका सिर काट डालना चा कि यकायक वह काला-कलूटा पहलवान छिपकर गायब हो गया।

"कौन है तू?"—राजा ने ललकारा, "अबला पर अत्याचार कर है।"

वह फिर सामने तनकर खड़ा था। घूरकर राजा विक्रम को देख र था। उसकी सूरत-शक्ल, रंगरूप बड़ा ही डरावना था। उसकी आंखों अंगारे बरस रहे थे। उस डरावने मनुष्य पर विक्रम की धमकी का क प्रभाव न पड़ा।

स्त्री भय से थरथर कांपती एक तरफ खड़ी थी।

विक्रम तलवार का भरपूर वार करने के लिये छलांग लगायी थी वह
ादमी भयानक अट्टहास करने लगा।

"तू मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता है।"

विक्रम हैरत में पड़ गया।

घबरायी डरी और सिसकती युवती ने विक्रम का हाथ पकड़ लिया।
ंपते स्वर में बोली, "तुम उससे जीत नहीं सकते हो।"

"क्यों ? क्या बात है ?"

"यह आदमी नहीं।"—उसने कहा, "राक्षस है। कई दिनों से मेरे
छे पड़ा है। जबर्दस्ती अपनी पत्नी बनाना चाहता है। भगवान की कृपा
अब तक बचती आ रही हूं। कोई न कोई बाधा इसकी राह में पड़ जाती
इसके आने का यही समय है। थोड़ी देर में चला जायेगा।"

विक्रम बोला, "आखिर कब तक बचती रहोगी। इस तरह एक दिन
बरबाद करके रख देगा।"

युवती फूट-फूटकर रो पड़ी।

देखते-देखते वह भयानक शक्ल वाला आदमी गायब हो गया।

राजा विक्रम ने युवती को शान्त कराया। उसका हाल पूछा।

युवती बोली, वह साहूकार की बेटी है। यह मकान उसके पिता का
कुछ दिनों से यह दानव पीछे लगा है। आते समय वह सबको बेहोशी
ाल देता है। उसके परिवार के सभी सदस्य बेहोश पड़े हैं। सुबह तक
श रहेंगे। ऐसा करने के बाद वह उसे तंग करना शुरू कर देता है।

"क्या यह रोज आता है ?"

"हां।"—युवती बोली, "उसके आने जाने का समय निश्चित है।"

"वह दानव है। तुमको कैसे पता ?"

"उसका व्यवहार बतला रहा है। यकायक गायब हो जाता है और
हो जाता है।"

"अब आयेगा ?"

"नहीं। कल रात फिर आयेगा ?"

"ठीक है। मैं कल रात आऊंगा।"

युवती बोली, "मेरे कारण तुम अपने प्राण क्यों गंवाते हो। वह आदमी

को चीरकर उसका खून पी जाता है। कल रात नगर-रक्षक का खून पी गया था। उसको पकड़कर चीर डाला था। वह बेचारा मेरी पुकार सुनकर मदद को आया था!"

"तुम चिंता मत करो।"—विक्रम बोला। "मैं आऊंगा राजा विक्रमादित्य के राज्य में अबला की इज्जत पर हाथ डालने वाला जिंदा नहीं रह सकता है।"

राजा विक्रम लौट आया।

सुनो राजा भोज। अगली रात राजा विक्रम समय से पहले साहूकार के मकान में आकर बैठ गया। कुछ देर बाद एक धमाके की आवाज के साथ शैतान दानव प्रकट हो गया। उसने युवती का हाथ पकड़ लिया। उसे खींचकर छत पर ले गया।

"आज तू बच न सकेगी। आज बरबाद करके छोड़ूंगा।" दानव ने धमकी दी—"आज तेरे को कोई नहीं बचा सकता। आज अपनी बनाकर छोड़ूंगा।"

युवती चीखने लगी। पूरी ताकत से लड़ रही थी, पर दानव ने बेतरह दबोच रखा था।

"ठहर पापी—नीच।"

विक्रमादित्य अपनी तलवार लेकर झपटा, पर उस दानव ने विक्रम की तलवार छीनकर फेंक दी। विक्रम क्षण के लिये घबरा गया पर फिर निहत्था वह दानव पर टूट पड़ा। दानव बड़ा शक्तिशाली था। विक्रम को लगा। शायद वह चीरकर खून पी लेगा।

दोनों में भयानक द्वंद्व युद्ध होने लगा। अचानक विक्रम को लगा। दानव उसका शरीर फाड़ने जा रहा है। तब विक्रम ने अगिया बैताल का स्मरण किया। अगिया बैताल ने तुरन्त आकर दानव को उछालकर फेंक दिया। दानव गायब हो गया।

"इससे आपकी लड़ाई कैसे हो गयी?"—अगिया बैताल ने कहा।

विक्रम ने सब बतला दिया। फिर पूछा, "क्या तुम इसको जानते हो?"

"हां। यह वन भैरव है। महाशक्तिशाली दानव है।"—वह बोला।

"इसका अन्त कैसे होगा?"

"इसके प्राण एक वन में खजूर के पेड़ में है। उस पर हमला करने से ही यह मारा जा सकता है।"

"क्या वह तुमको पहिचानता है ?"

"नहीं।"

"तब ऐसा करना। उसके प्राण खत्म कर देना।"

"ठीक। कल तुम उससे युद्ध करना। मैं प्राण खत्म कर दूंगा।"—अगिया बैताल बोला।

कार्यक्रम बन गया।

अगली रात दानव आया। सबको बेहोश कर युवती को घसीटकर छत पर ले गया। तभी विक्रम टूट पड़ा।

"तू फिर आ गया। तेरी मौत आज अवश्य होगी।"—दानव ललकार उठा।

"तुझे अभी पता लग जायेगा कि कौन मरने वाला है ?"

विक्रम उसके साथ युद्ध करने लगा। दानव विक्रम का गला घोंटकर उसका खून पीना चाहता ही था कि यकायक छटपटा गया।

"हाय मरा। हाय मरा।"

वह छटपटाने लगा।

"क्या हो रहा है !"

"कोई मेरे प्राण ले रहा है···हाय हाय हाय।"—वह अपना सिर पकड़ने लगा। बिलकुल असहाय शक्तिहीन सा वह विलाप करने लगा।

"तेरे पाप का फल है। किसी अबला की इज्जत बरबाद करना महापाप है, दानवराज ! कम से कम मेरे राज्य में ऐसा नहीं हो सकता है।"

दानव आश्चर्य से कह उठा, "क्या तुम राजा विक्रमादित्य हो।"

"हां।"

"तब मेरी मौत धन्य हो गयी। जैसे सुना था, वैसा तुमको पाया राजन्।"—वह बोला—"मेरा अपराध क्षमा करना।" और दानव ने दम तोड़ दिया।

इस प्रकार राजा भोज, वह दानव मर गया। युवती का संकट टल गया। अब तुम कहो, तुम्हारे राज्य में ऐसा है। तुम्हारे शासन में गुंडे

बदमाश महिलाओं को छेड़ते हैं। बलात्कार कर भाग जाते हैं अपहरण होता है। अबलाओं की इज्जत सरे आम लूटती है और लोग खड़े-खड़े तमाशा देखते हैं। विक्रमादित्य के राज्य में ऐसा व्यक्ति तुरन्त मौत के घाट उतार दिया जाता था।

राजा भोज, स्त्री का अपमान जिस घर में होता है, वहां लक्ष्मी का वास नहीं होता है। स्त्री केवल भोग विलास की वस्तु नहीं है। उसका रूप गृहलक्ष्मी और जननी का भी है। जिस राज्य में स्त्री के साथ दुर्व्यवहार होता है, उसे दबाकर रखा जाता है, वहां पर कभी भी राज्य में सुख शांति नहीं रह सकती है। क्या तुम्हारा राज्य इस प्रकार का है ? यह सिंहासन तुम तभी पा सकते हो, जब तुम्हारा शासन ऐसा होगा।

पदमावती बोली, "राजा भोज, अब तुम स्वयं इस बात का फैसला करो कि तुम इस सिंहासन पर बैठने योग्य हो या नहीं ?"

अपनी बात कहकर पद्ममावती ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और वह आकाश में उड़ गयी। देखते-देखते गायब हो गयी। सब आश्चर्य से यह दृश्य देखते रह गये।



कीर्तिवती

जाओ राजा भोज ! पहले मुझ कीर्तिवती की बात का
ब दो । नौकर का मालिक के प्रति वफादार ईमानदार होना
री है । जिस राजा के शासन में ऐसे स्वामीभक्त सेवक हैं,
का राज अक्षय रहता है । क्या तुम्हारे राज में ऐसे लोग हैं ?
विक्रम भी नौकर बनने पर अपूर्व स्वामीभक्ति का प्रदर्शन
ा था । जब राजा स्वयं ऐसा हो तो प्रजा भी भला वैसी क्यों
?
तुम्हारा शासन इस योग्य है, तो बैठो सिंहासन पर, वरना
खड़े रहो ।

ब्राह्मणों का स्वतिवाचन समाप्त होते ही जैसे ही राजा भोज सिंहासन की ओर बढ़ता तो सबकी आशंका के अनुसार तत्काल एक युवती र रोककर खड़ी हो गयी और उसने पूछा, राजा भोज। क्या तेरे राज स्वामिभक्त नौकर इस प्रकार के हैं कि वह अपने स्वामी के हित के लि अपना बलिदान कर सकें। अगर ऐसा है, तो तू इस सिंहासन पर बै सकता है।

सुन ? राजा विक्रम के राज में कैसे स्वामिभक्त सेवक थे।

दुनिया की छोड़ !

स्वयं राजा विक्रम ने सेवक के रूप में स्वामिभक्त का ऐसा उदाहर पेश किया है कि शायद तू अपने जीवन में आज तक न कर सका होगा।

एक बार की बात है। राजा विक्रम अपना वेश बदलकर नगर भ्रम पर था। वह दिन में भी ऐसा करता था।

घूमते-घूमते राजा विक्रम एक चौपाल पर आया। यहां कुछ लोग बै हुक्का पी रहे थे। विक्रम भी उनके बीच बैठ गया। यकायक उसके मन आया कि इन लोगों कैसे पूछा जाये कि राजा विक्रम कैसा है ? इसी मतल से उसने बात छेड़ दी।

"कुछ भी कहो ! अपना राजा है बड़ा दयालु और दानी।"

"और···प्रजा का रखवाला भी।"

चौपाल पर एक ब्राह्मण भी बैठा था। वह बोल उठा। "कौन—रा विक्रम ?"

"अपना राजा···यहां का राजा !"

ब्राह्मण खिलखिलाकर हंस पड़ा।

"क्या बात है। तुम हंस रहे हो।"

"हां।"

"भला क्यों ?"

"मेंढक कुएं को ही सारी दुनिया समझता है। यहां के लोग विक्रम बड़ा दानी मानते हैं।"

"उसके बराबर दानी दूसरा नहीं है।" विक्रम स्वयं बोला।

"क्या बात कहते हो तुम"—ब्राह्मण ललकार कर बोला, "र

विक्रम से भी बड़े दानी हैं।

"कैसे···मैं भी सुनूं।"

"देखो। मैं राजा समुद्रसेन के राज में रहकर यहां आया हूं। वह राजा विक्रम से भी बड़ा दानी है। उनके आगे राजा विक्रम क्या है ?"

"कैसा दानी है वह। सुनूं तो ?"—विक्रम ने प्रश्न किया।

"वह हर रोज सुबह उठकर एक लाख स्वर्ण मुद्राएं दान करता है। जब तक एक लाख मुहरें दान न कर देगा, तब तक अन्नजल भी ग्रहण नहीं करता। मैंने कई बार देखा है। हर रोज वह एक लाख स्वर्ण मुद्राएं दान करता आ रहा है। मैं तो वह राज छोड़कर यहां आ गया, पर अभी भी राजा का वही सिलसिला चालू है।"

ब्राह्मण की बात पर सब आश्चर्य कर उठे।

स्वयं विक्रम हैरान हो गया।

कुछ देर बाद वह चौपाल से उठकर चल पड़ा। राजमहल वापस आ गया। चिंता में पड़ गया। फिर रात को उसने दोनों देव याद किये।

अगिया बैताल और बैताल उपस्थित हो गये।

"हमारे लिए क्या आज्ञा है ?"

"मुझे राजा समुद्रसेन के राज्य में पहुंचा दो।"

"जो आज्ञा।"

दोनों ने मिलकर राजा विक्रम को उठा लिया। उसे राजा समुद्रसेन के राज में पहुंचा दिया।

विक्रम ने देखा। वहां की प्रजा बहुत सुखी थी। सम्पूर्ण राज्य में किसी को कोई कष्ट न था। ब्राह्मण की बात सच थी। राजा समुद्रसेन प्रतिदिन प्रातःकाल एक लाख स्वर्ण मुद्राएं लेकर बैठता था। जब तक सब दान न कर देता था, वह अन्नजल तक ग्रहण न करता था। राजा विक्रम हैरानी में पड़ गया। प्रतिदिन एक लाख स्वर्ण मुद्राएं इसके पास कहां से आती हैं ? इसका रहस्य जानने के लिये उसने राजा के पास नौकरी करना ठीक समझा।

वह एक चौराहे पर खड़ा होकर आवाज लगाने लगा, "नौकर रख लो, नौकर।"

लोग उत्सुक हो गये।

"क्या काम कर सकते हो तुम ?"

"जो कोई न कर सके, वह करूंगा।"

"क्या लोगे ?"

"एक हजार सुवर्ण मुद्रा प्रतिदिन।"

"वाहरे···तुमको तो कोई राजा ही नौकर रख सकता है।"

विक्रम ने राजा के सामने जाकर फरियाद की।

"मुझे नौकर रख लिया जाये।"

"क्या काम कर सकते हो···

जो कोई न करे सो मैं करूं।"

"क्या लोगे ?"

"एक हजार स्वर्ण मुद्रा प्रतिदिन।"

"ठीक है।"—राजा ने उसे नौकर रख लिया। अपने कमरे के बाहर पहरा देने का काम सौंप दिया।

विक्रम पहरा देने लगा। उसने देखा, राजा प्रति रात, आधी रात के बाद जाने कहां उठकर चला जाता था। यह उसका नित्य का कार्य था।

विक्रम ने उसका पीछा करने का निश्चय कर लिया। एक रात जब राजा बाहर निकला तो वह चुपचाप पीछे लग गया।

राजा समुद्रसेन एक गुप्त मार्ग से महल से बाहर निकल गया। पैदल चलता गया। कुछ देर बाद वह नदी किनारे बने मंदिर में आया।

मन्दिर में ज्योति जल रही थी। मां दुर्गा की एक भव्य मूर्ति स्थापित थी।

मूर्ति के आगे तेल का एक बड़ा कड़ाहा खौल रहा था। राजा उसमें कूद गया। जरा-सी देर में वह जल गया। तभी एक डाकनी आयी। उसने जाने क्या कड़ाहा में छिड़का कि राजा समुद्रसेन जीवित निकल आया। तभी दुर्गा की मूर्ति का रूपरंग बदल गया।

मूर्ति ने एक लाख स्वर्णमुद्राएं बढ़ा दीं।

"ले जा।"

राजा वापस आ गया।

राजा विक्रम संतुष्ट हो गया। राजा समुद्रसेन प्रतिदिन एक लाख मुद्रा कहां से लाता है? इसका पता लग गया। इस रहस्य को छिपाए रखा।

एक रात उसके मन में आया कि वह भी ऐसा करे···पर डर गया कि शायद डाकनी उसे जिंदा न करे। उसने दोनों देवों को बुलावा। उसने सब बतलाया।

"ठीक है···अगर डाकनी आपको जिंदा न करेमी, तो हम दोनों मिल-कर जिंदा कर देंगे।" अगिया बैंताल बोला। राजा आश्वस्त हो गया।

दूसरी रात वह अकेला स्वयं उस मंदिर में गया। सारा दृश्य वैसा ही था, जैसा वह पहले देख गया था। साहस कर विक्रम कूद गया। खौलती कढ़ाही में राजा भस्म हो गया पर उसी समय डाकनी आयी। उसने राजा को जिंदा कर दिया। दुर्गा की मूर्ति का रूप बदल गया।

राजा विक्रम को भी एक लाख सुवर्ण मुद्रा मिल गयी।

विक्रम ने मुद्राएं एक ओर रख दीं।

फिर वह कढ़ाही में कूद गगा।

सब कुछ पहले की तरह हुआ। सुवर्ण मुद्राएं मिल गयी। राजा ने एक तरफ रख दी। राजा विक्रम लगातार इसी काम को करता गया। बारह बार यह सब करने के बाद जब उसने तेरहवीं डुबकी मारी तो देवी ने उसका हाथ पकड़ लिया।

"तुम बार बार क्यों ऐसा कर रहे हो?"

"गरीबों को दान करना है।"

"तब यह थैली लो। इससे बराबर सुवर्ण मुद्राएं आयेंगी। गरीबों को दान करना। दूसरे काम के लिये इसमें से कुछ न निकलेगा।"

देवी अन्तर्ध्यान हो गयीं। थैली ओर स्वर्ण मुद्राएं लेकर राजा विक्रम चला आया।

तब राजा समुद्रसेन आया। वहां पर न तो वहां कढ़ाहा था और न देवी की मूर्ति···राजा समुद्रसेन सिर पकड़कर रह गया।

देवी ही चली गयीं। अब क्या होगा? कहां से स्वर्ण मद्राएं आयेंगी! गरीबों को क्या दान देगा? क्या गलती हो गयी। वह विलाप करने लगा।

देवी का कहीं कुछ पता न था।

दुःखी राजा राजमहल वापस आ गया।

वह बेहद परेशान था।

राजमहल का द्वार बंद करा दिया। घोषणा कर दी गयी। राजा बीमार है। दान नहीं होगा। दूर-दूर से आये लोग निराश हो गये। हलचल मच गयी। राजा की जनता ईश्वर से राजा के स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना करने लगी। विक्रम चुपचाप सब देख रहा था। राजा अकेला चुपचाप पड़ा लंबी-लंबी सांसें ले रहा था।

विक्रम पास गया।

"राजन्! आपका दुःख मैं जान सकता हूं।"

राजा समुद्रसेन ने घूरकर देखा, "तुम मेरा दुःख भला क्या दूर कर सकोगे।"

"मैं आपसे एक हजार स्वर्ण मुद्राएं प्रतिदिन लेता हूं। मेरा काम है, जो कोई न कर सके···आज तक आज तक आपने नहीं बतलाया। हो तो कहें।"

राजा समुद्रसेन चुप रहा कुछ देर।

फिर बोला, "काम असंभव है, कर सकोगे?"

"असंभव काम करने का ही तो धन ले रहा हूं।"

"मेरी देवी लापता हो गयी हैं। पता करो, कहां हैं?"

"उनसे क्या काम है आपको?"

"एक लाख सुवर्ण मुद्रा प्रतिदिन मिलती थी। चली गयीं जाने कहां? इन कारण दान बंद है।"

विक्रम मुस्कुराया, "बस! इतनी-सी बात। लीजिए···यह थैली··· मनचाही स्वर्ण मुद्रा प्राप्त करें गरीबों के लिये।" उसने थैली राजा समुद्रसेन को दे दी।

सब बतला दिया।

राजा समुद्रसेन कुछ देर मौन रहकर बोला, "पर तुमने ऐसा क्यों किया?"

"राजन्! आप स्वामी···मैं सेवक। आपका कार्य सरल करना मेरा

ंण्य है। प्रतिदिन आपका कढ़ाई में कूदकर मरना, जिंदा होना बड़ा
टप्रद था। इससे आपको छुटकारा मिल गया। यह थैली आपके लिए
ी ली है। बेईमानी मन में होती तो भला देता।"

राजा समुद्रसेन ने विक्रम को छाती से लगा लिया।

"शाबाश! नौकर स्वामिभक्त हो तो ऐसा···पर एक बात कहो···
ा साधारण आदमी नहीं मालूम पड़ते। सच कहना कौन हो?"

पहले तो राजा विक्रम कुछ हिचकिचा गया। अपना परिचय वह दे
त दे, पर बाद में उसने परिचय देना ठीक समझा। राजा की ओर कुछ
चुपचाप देखने के बाद उसने जवाब दिया।

"मैं राजा विक्रमादित्य हूं।"

समुद्रसेन विक्रम के पैरों गिर पड़ा। बोला, "सौभाग्य! मैं तो आपके
ों की धूल भी नहीं हूं। बड़ा नाम सुना है आपका।"

राजा विक्रम को सामने देखकर वह चकित रह गया। विश्वास न हो
ा था, पर बाद में वह विश्वास कर गया। श्रद्धा से उसका मन भर गया
र वह एकदम पास आ गया।

राजा ने विक्रम को गले लगा लिया। कहो राजा भोज···ऐसे नौकर
हारे राज्य में हैं क्या? हैं तो बैठो, वरना नहीं।"—कहकर कीर्तिवती
काश में उड़ गयी। गहरा सन्नाटा फिर फैला रह गया।



सुनयना

राजा भोज ! क्या तुम इस बात का ख्याल रखते हो कि जिस मनुष्य को जो चाहिए, वही मिले। अन्य वस्तु पर उसे अधिकार देना अन्याय है।

ऐसा तुमने कभी किया है, तो तुम अवश्य इस सिंहासन पर बैठो। अपनी बात कहकर सुनयना ने राजा भोज का रास्ता रोक लिया।

राजा भोज सिंहासन पर फिर न बैठ सका। सारा दरबार आश्चर्य से हर रोज यह दृश्य देख रहा था। सम्पूर्ण राज्य में सिंहासन चर्चा का विषय बन गया था।

जैसे ही राजा भोज सिंहासन पर बैठने के लिये आगे बढ़ा, पलक झपते एक मूर्ति बाहर आ गयी। उसने रास्ता रोक लिया। बोली, "मेरा नाम सुनयना है, राजा भोज ! क्या तुमने मनुष्य को उसकी आवश्यकतानुसार ही वस्तु देने का नियम माना है। अनावश्यक मिलने पर वह दुरुपयोग कर सकता है। क्या एक भी तुम्हारा निर्णय इस प्रकार का है ?

राजा भोज निरुत्तर था।

उसके पास कोई जवाब न था।

सुनो राजा भोज। एक बार राजा विक्रमादित्य शिकार खेलने गया। शाम हो गयी तो एक नदी किनारे डेरा डाल दिया। वह आराम करने लगे।

नदी के उस पार एक मुर्दा बहता जा रहा था। यकायक एक पिशाच दीखा। उसने मुर्दे को बाहर खींच लिया। उठाकर ले जाने लगा, पर तभी एक योगी ने झपटकर उसको रोक लिया।

"ठहर। मुर्दा मेरा है।"—योगी बोला।

"तेरा है। अरे ! इसके साथ मैं बहुत दूर से बहता चला आ रहा हूं। इस पर साधना करना चाहता हूं।"

"बकवास मत कर।"—पिशाच बोला, "इस पर मेरा हक है। मैं से खाऊंगा। सबसे पहली नजर मेरी पड़ी।"

"हरगिज नहीं।"

दोनों लड़ने लगे। न योगी मान रहा था और न ही पिशाच। दोनों रदे पर अपना-अपना अधिकार जतला रहे थे। दोनों का झगड़ा बढ़ पाता, उससे पहले ही वहां पर एक मल्लाह दीखा। दोनों की बातें सुनकर बोला, तुम लोग बेकार लड़ रहे थे। नदी के उस पर राजा विक्रमादित्य का डेरा । उनके पास जाकर फैसला करा लो। उनका न्याय जगप्रसिद्ध है।"

दोनों सहमत हो गये।

राजा विक्रमादित्य के सामने आये।

योगी बोला, "राजन ! इस मुरदे के साथ मैं बहुत दूर से चला आ हूं। इसके द्वारा मैं अपनी साधना करना चाहता था। उचित स्थान ता चला आ रहा था। तभी इस पिशाच ने इसे खींच लिया।"

पिशाच बोला, "राजन ! यह मेरा भोजन है। इसे मैंने देखा तो खींच लिया। क्या अपराध किया ? मेरा काम ही यही है।"

राजा विक्रमादित्य दोनों की बातों पर विचार करने लगा।

योगी के लिये साधना हेतु मुर्दा आवश्यक था।

पिशाच के लिये भूख मिटाने के लिये मुर्दा आवश्यक था।

किसके पक्ष में फैसला दें ?

तभी राजा विक्रमादित्य ने पूछा, "पिशाच महाराज। आप भूखे है न ?"

"हां !"

"आपको कौन-सा मांस अच्छा लगता है।"

"राजन् ! भैंसे का मांस बड़ा स्वादिष्ठ होता है।"—पिशाच बोला।

"ठीक है। मैं आपके लिये भैंसे का मांस मंगा देता हूं।"

"पर मुर्दा।"

"देखो पिशाच राज। जिस मनुष्य की जो आवश्यकता हो, उसे वही मिलना चाहिए। तुम्हारी भूख भैंसे के मांस से मिट जायेगी, पर योगी के लिए अपनी साधना में मुर्दा जरूरी है। मुर्दा आवश्यक है। जिसकी जो वास्तविक जरूरत है, उसे अवश्य मिलना चाहिए।"

पिशाच मान गया।

योगी प्रसन्न हो गया।

दोनों चले गये। पिशाच भर पेट भैंसे का मांस खा गया। योगी मुरदा उठाकर चला गया।

राजा विक्रम निश्चिन्त होकर सो गया।

नदी किनारे एक डाकनी का डेरा था। रात को वह निकली और उसने राजा विक्रम को बांध लिया। घसीटकर घोर जंगल में ले गयी।

"आज मनुष्य का मांस पकाकर खाऊंगी।"

उसने अलाव तैयार किया। राजा विक्रम को भूनकर खाने की तैयारी करने लगी, इससे पहले कि ऐसा हो राजा विक्रम ने अगिया बैताल को बुलाया यकायक एक धमाका हुआ।

राजा विक्रम ने देखा, वही पिशाच सामने था।

उसने डाकनी को एक जोरदार थप्पड़ मारा। चीख उठा, "पापिन ! क्या कर रही है। छोड़ दे इसे।"

डाकनी घबरा गयी।

उसने राजा विक्रम को मुक्त कर दिया। भाग गयी। राजा विक्रम ने , "तुमने मेरी मदद क्यों की ?"

"सज्जन की सहायता पिशाच भी करते हैं, राजन् ! आदमी को ी सज्जनता का त्याग नहीं करना चाहिए। गलत आदमी का साथ तो ान भी नहीं देता है।"

पिशाच चला गया।

राजा विक्रम वापस आ गया।

देखो, राजा भोज ! अपनी न्याय-प्रियता के कारण उसका नाम चारों फैल गया था। इसी कारण संकट के समय सब उसकी सहायता करते क्या तुमने कभी इस प्रकार का न्याय किया है ? क्या कभी कोई ाच या डाकनी ने सहायता की है ? अगर है, तो इस सिंहासन पर ।

सुनयना अपनी बात कहकर आकाश में उड़ गयी। सारा दरबार ध होकर देखता रह गया। राजा भोज फिर सिंहासन पर न बैठ सका।



मृगनयनी

तुम्हारी इस सिंहासन पर बैठने की बड़ी इच्छा है, पर क्या
बतला सकते हो, क्या गुण है तुममें ? मेरा नाम मृगनयनी
मेरे सवाल का जवाब दो।"

"मैं राजा हूं। राजा ही सिंहासन पर बैठता है।"—भोज ने क
"इस सिंहासन पर बैठने के लिये केवल राजा होना जरूरी
है। राजा के गुण भी जरूरी हैं। सुन, राजा का गुण क्या
सुनाती हूं।" मृगनयनी ने उत्तर दिया।

मृग नयनी को सब एकटक देख रहे थे। वह अनुपम सुन्दरी थी। वैसे भी प्रत्येक पुतली का रूप यौवन निराला था। एक के बाद एक खूबसूरत पुतलियां सजीव होकर बाहर आकर राजा भोज का रास्ता रोक रही थीं। दरबार में हर रोज यही तमाशा हो रहा था। हैरानी के साथ सब देख रहे थे। मृगनयनी राजा भोज से कहने लगी, "राजा विक्रम के मन में विशाल यज्ञ करने का विचार आया। उसने दूर-दूर के विद्वान ब्राह्मणों को सादर निमंत्रण दिया और सबसे विचार-विमर्श कर यज्ञ का आयोजन बनाया।

यज्ञ की प्रारंभिक तैयारियां होने लगी।

सबको निमंत्रण जाने लगे।

एक ब्राह्मण ने सुझाव दिया, "राजन् ! इस यज्ञ के लिये देवी देवताओं को भी निमंत्रण दो। हमारे यहां यह भी नियम है कि देवता गंधर्व किन्नर पिशाच सबको निमंत्रण दिया जाता है।"

"ठीक है।"

राजा ने बात मान ली।

अपने सबसे विश्वासी और चतुर दूत को उसने बुलाकर देवी देवताओं आदि को भी निमंत्रण देने का भार सौंप दिया।

दूत घूम-घमकर सबको निमंत्रण देने लगा। पारी-पारी सभी देवताओं को वह राजा विक्रम का निमंत्रण दे आया। वापस लौटने लगा तो यकायक ख्याल आया कि उसने समुद्र देवता को निमंत्रण ही नहीं दिया है। वह तुरन्त समुद्र किनारे गया और जोर-जोर से समुद्र देवता को राजा विक्रमादित्य का निमंत्रण देने लगा।

राजा विक्रमादित्य का नाम सुनते ही समुद्र देवता बाहर आ गये।

दूत ने उनको प्रणाम किया।

"राजा विक्रम का निमंत्रण पाकर प्रसन्नता हुई पर मैं नहीं आ सकता।"

"आप अवश्य पधारें, महाराज !"—दूत बोला।

"भला मैं कैसे आ सकता हूं। मेरे आने का मतलब है कि राजा विक्रम का राज और रास्ते का सब कुछ पानी में डूब जायेगा। उनको मेरी शुभकामना दे देना।"

"जैसी आज्ञा।"

दूत जाने लगा तो समुद्र ने उसे एक शंख दिया। कहा, "यह संकट हरण शंख है। इसका काम संकट हरना है। जब भी संकट पड़े, इसे फूंक दो। संकट तत्काल टल जायेगा।"

दूत समुद्र का उपहार पाकर प्रसन्न हो वापस लौट गया। उपहार में प्राप्त शंख की उसने चर्चा न की। अपने पास हर समय रखने लगा।

राजा विक्रम ने अपना यज्ञ आरंभ किया।

यज्ञ आरंभ करते ही देवलोक में सनसनी फैल गयी। यज्ञ सम्पूर्ण होने पर राजा विक्रम इन्द्र पद का अधिकारी बनने की योग्यता में आ जायेगा। अतएव इन्द्र घबरा गया। उसने अपने सेवकों को बुलाकर कहा, "राजा विक्रम के यज्ञस्थल पर और आसपास इतनी वर्षा करो कि सब कुछ जल मग्न हो जाये।"

राजा इन्द्र के सेवक मेघों की सेना लेकर राजा विक्रम के यज्ञस्थल और आसपास के क्षेत्र पर टूट पड़े।

मूसलाधार बारिश होने लगी।

यज्ञ कार्य में बाधा पड़ने लगी।

देखते-देखते सब कुछ जलमग्न होने लगा।

मूसलाधार बारिश रुकने का नाम न ले रही थी।

राजा के दूत को अपने संकटहरण शंख का ध्यान आया। उसने शं फूंक दिया। शंख के बजते ही सारे बादल हट गये। बारिश यकायक रु गयी। सब कुछ सूखकर पूर्ववत् हो गया। यज्ञ कार्य जोर-जोर से हो लगा।

इन्द्र परेशान हो गया।

उसने अपनी बहिन आंधी और अपने भाई तूफान को बुलाया। हम करने की आज्ञा दी।

आंधी ने आक्रमण कर दिया।

सब कुछ उड़ गया। तूफान आने ही वाला था कि राजा के दूत ने श बजा दिया। शंख बजते ही सब ठीक हो गया। राजा इन्द्र बहुत घबराय शंख सारा खेल बिगाड़ रहा है। उसने अपने दरबार की सबसे सु

नुपम अप्सरा तिलोत्तमा को बुलाकर कहा, "राजा के दूत के पास संकट रण शंख है। तुम अपना जादू चलाकर वह शंख ले आओ।"

तिलोत्तमा पृथ्वी लोक पर आ गयी। उसने दूत पर अपना जादू लाया। रूप यौवन देखकर दूत ठगा सा खड़ा रह गया।

वह दूत से प्रणय निवेदन करने लगी।

दूत एकदम खामोश था।

अप्सरा आगे बढ़ने लगी तो दूत ने उसको रोक दिया।

"क्या बात है ? मैं तुम्हारी हूं..."

"अरी सुभगे!" दूत बोला, "हमारा राजा इस तरह की बातें बरदाश्त हीं कर सकता। उसके राज्य में अनैतिक आचरण कोई नहीं करता।"

दूत पिघला नहीं।

तिलोत्तमा निराश होकर चली गयी।

इन्द्र अत्यन्त परेशान हो गया। वह बेहद घबरा रहा था। यकायक सके दिमाग में एकदम नयी बात आ गयी। होंठो मुस्कुराहट खेल गयी।

उसने तुरन्त ब्राह्मण का वेश बनाया। सीधे राजा विक्रम के पास या। उसने भिक्षा की आवाज दी। राजा ने बुलाया।

"महाराज...दान दें।"

"क्या लोगे दान में ?"

"अगर दे सकें तो मांगू।"

"जरूर दे सकूंगा।"—राजा ने कहा।

ब्राह्मण बोला, "इस यज्ञ का सारा फल मुझे दान कर दें।"

"अवश्य दिया।"—विक्रम ने कहा।

विक्रम की इस दानशीलता और उदारता का इन्द्र पर इतना प्रभाव कि उसने तत्काल ब्राह्मण का वेश त्याग दिया और अपने वास्तविक में आकर राजा की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगा। फिर उसने राजा क्रम को सब कुछ बतला दिया।

सारा वृत्तान्त सुनकर विक्रम ने कहा, "संकटहरण शंख किसके पास ?"

"आपके प्रिय दूत के पास है।"

"उसने बजाया था ?"

"हां।"

राजा विक्रम ने दूत को बुलाया। दूत ने स्वीकार किया, संकटहरण शंख उसके पास है !

"तुमने उसका उपयोग किया ?"

"हां अन्नदाता ! मैं आपका सेवक हूं। आपके समान राजा कहां मिलेगा ?"

स्वयं इन्द्र ने भी इस बात को स्वीकार किया। यज्ञ के फल का दान कर राजा ने इन्द्र को भय मुक्त कर दिया। इन्द्र को और क्या चाहिये था ?

राजा विक्रम को आशीर्वाद देकर इन्द्र चला गया। तब राजा विक्रम के शासन काल में कभी भी अनावृष्टि या अधिक वृष्टि नहीं हुई। अकाल कभी नहीं पड़ा। सब फसलें बराबर लाभमयी होती रहीं।

अब बोलो राजा भोज। क्या विक्रम का एक भी ऐसा गुण तुममें है ?

अगर है, तो बैठो सिंहासन पर।

मृगनयनी ने अपनी बात कही और व्यंग्य भरी दृष्टि से राजा विक्रम को देखकर आकाश में उड़ गयी।

सभी दरबारी आश्चर्य से देखते रह गये। राजा भोज किसी भी पुतली के प्रश्न का उत्तर न दे पा रहा था। हर बार वह सिंहासन पर बैठने से रोक दिया जाता था। ब्राह्मणों का विचार था कि अगर राजा एक भी पुतली के प्रश्न का उत्तर दे सका, तो वह सिंहासन पर बैठ सकता है। शायद ऐसा मौका मिल जाये।

सिंहासन इतना खूबसूरत और मनभावन था कि राजा भोज अपने को रोक न पा रहा था। वह सिंहासन पर बैठने के लिये लालायित था।

राजा भोज का प्रयास जारी था। अपनी इच्छा रोक न पा रहा था वह।



मलयवती

नक एक पुतली बाहर आ गयी और राजा भोज के सामने होकर बोली, राजा भोज बिना अच्छी तरह विचार किये फैसला करना महापाप होता है। राजा या अधिकारी का रमधर्म है कि अपराध पर खूब विचार करने के बाद दंड दे। तुममें यह गुण है, तो इस सिंहासन पर बैठो। तुम इसके कारी हो, वरना नहीं। मेरा नाम मलयवती है। सुनो, मैं ां देखी कथा सुनाती हूं।

शुभ मुहूर्त बतला कर ब्राह्मणों ने राजा भोज को सिंहासन पर बैठने
लिये कहा, पर तभी एक पुतली बाहर आ गयी। उसने राजा भोज
रोक दिया। राजा भोज उसका मुंह ताकने लगा। वह अत्यन्त रूपव
तेजस्वी युवती थी। उसका रूप श्वेत मणि के समान दमक रहा था। सा
दरबारी मुग्ध भाव से देख रहे थे। अत्यन्त मधुर स्वर में उसने कहा
उसका मीठा स्वर सारे वातावरण में मिठास घोल गया।

सब मुग्ध होकर सुनने लगे।

मलयवती कहने लगी। सुनो राजा भोज, एक बार राजा विक्रमादि
अपना राजपाट महामंत्री को सौंप कर तीर्थ यात्रा पर चले गये। राजका
का सारा भार महामंत्री पर आ गया। महामंत्री के दो रानियां थीं। सब
छोटी रानी को वह बेहद प्यार करता था। इसको वह हमेशा अपने सा
रखता था। उससे जरा भी जुदा होना उसे अच्छा न लगता था।

एक दिन दरबार में महामंत्री बैठा था। द्वारपाल ने आकर बतलाया
एक चित्रकार आया है।

"आने दो।"

चित्रकार दरबार में आया।

उसने महामंत्री को एक से एक शानदार चित्र दिखलाने शुरू किये
ऐसा लगता था कि मानो चित्र बोल पड़ेंगे। सभी चित्र एकदम सजी
लगते थे। उसके चित्रों को देखकर सारा दरबार मुग्ध हो गया।

"यह सब तुमने बनाये हैं?"

"हां, अन्नदाता।"

"तुम्हारी कला प्रशंसनीय है।"—महामंत्री बोला। यकायक उ
मन में एक विचार आया। कहा—"तुम फरमाइश पर भी चित्र ब
सकते हो।"

"हां, श्रीमान।"—चित्रकार ने विनम्रता से कहा।

"तुम मेरी रानी का चित्र बना दोगे।"

"अवश्य। बस, एक बार देख लेने की जरूरत है। उसके बाद
दूंगा।"

"ठीक है बनाओ। उचित पुरस्कार मिलेगा।"

चित्रकार मान गया। उसने महामंत्री की प्रिय रानी की एक झलक देखी और एकांत में चित्र बनाने में लग गया। उस स्थान पर दूसरा कोई न जा सकता था। तीन चार दिन में चित्रकार ने एकदम हूबहू चित्र बना दिया। लगता था, सजीव रूप में बैठी है। चित्र देखकर सब वाह-वाह कर उठे।

महामंत्री ने देखा तो मुग्ध हो गया। उसने चित्रकार की भूरी-भूरी प्रशंसा की। अगले दिन राजदरबार में उसे पुरस्कृत करने की घोषणा की।

महामंत्री अपने महल में चित्र को ले गया। ध्यान से देखने लगा। यकायक उसकी निगाह रानी की बायीं जांघ पर गयी। जांघ पर बड़ा सा तिल बना था।

वह चौंक गया।

तिल !

वास्तव में वैसा ही तिल रानी की जांघ पर ठीक उसी स्थान पर था। महामंत्री हैरान रह गया। क्या चित्रकार ने रानी की जांघ खोलकर देखी है? बिना देखे कैसे बना दिया? उसका मन शंका से भर गया। रानी के चरित्र पर शक हो गया।

उसने चित्रकार को बुलाया।

"जांघ पर क्या बना दिया है?"

"तिल है, अन्नदाता।"

"तुमको कैसे पता? कैसे बनाया तुमने?"

चित्रकार चुप रह गया।

"मेरी रानी की जांघ पर बने तिल का ज्ञान कैसे आया तुमको? पापी···चरित्रहीन···परायी स्त्री की जांघें खोलकर देखता है। चित्रकला के नाम पर।"

और महामंत्री ने आज्ञा दी। चित्रकार का सिर काटकर जंगल में फेंक दिया जाये। उसकी आंखें निकालकर मुझे दी जायें। मैं उनको जूतों से मसलूंगा। मेरी आज्ञा का पालन हो।"

चित्रकार को पकड़कर सिपाही जंगल की ओर ले चले। पुरस्कार पाने वाले चित्रकार का सरकलम करना था। वह सब चकित थे। यह

कैसा निर्णय है ? राजा विक्रम भी नहीं है। अब सब सिपाहियों ने मिलकर निर्णय किया कि राजा विक्रम के आने तक चित्रकार को दंड न दिया जाये। राजा विक्रम से सब बतला दिया जाये। फिर वह जैसा निर्णय दें। अतएव एक सिपाही ने चित्रकार को अपने घर में रखना स्वीकार कर लिया।

चित्रकार को छिपा दिया गया।

हिरण की आंखें लाकर महामंत्री को दे दी गयीं कि यह उसी चित्रकार की हैं।

महामंत्री संतुष्ट हो गया।

कुछ दिनों के बाद महामंत्री का पुत्र जंगल में शिकार खेलने गया। कुछ ऐसा संयोग बना कि वह अकेला पड़ गया। घने जंगल में रात हो गयी। तभी एक शेर दीख पड़ा। घबराकर वह भागा और एक पेड़ पर चढ़ा, तो देखता क्या है कि एक रीछ उस पर बैठा है। रीछ देखकर डर गया, पर रीछ बोला, "डरो मत। आराम से बैठो। शेर चला जाये तो उतर जाना। मैं तुमको नहीं खाऊंगा।"

नीचे से शेर दहाड़ा कि रीछ उसका शिकार नीचे गिरा दे, वरना वह उसे भी खा जायेगा।

"मैं नहीं गिराऊंगा। मेरी शरण आया है।"

"ठीक है। मैं भी यहीं रहूंगा। आखिर कब तक तुम दोनों पेड़ पर रहोगे।"

शेर पेड़ के नीचे आसन जमाकर बैठ गया। रीछ और महामंत्री का पुत्र संकट में पड़ गये। रात और हो गयी। रीछ बोला, "ऐसा करो। मैं सोता हूं। तुम पहरा दो। फिर तुम सोना, मैं पहरा दूंगा। सवेरा होने पर देखेंगे।"

रीछ सो गया।

महामंत्री का पुत्र जागता रहा। शेर नीचे बैठा था। रीछ गहरी नींद में सो गया तो शेर बोला—"तू रीछ को नीचे गिरा दे। मैं उसको खाकर चला जाऊंगा। तेरी जान बच जायेगी।"

महामंत्री का पुत्र मान गया। उसने सोये रीछ को धक्का मार दिया।

गिरा पर बीच में एक डाल पर लटक गया। वह गुर्रा उठा।

"मनुष्य जाति का कोई भरोसा नहीं। तूने मेरे साथ विश्वासघात किया इसकी सजा दूंगा।"

महामंत्री का पुत्र डर गया।

रीछ ने उसके कान में पेशाब कर दी।

उसी वक्त महामंत्री का बेटा गूंगा-बहरा हो गया। साथ ही भयानक ा कराहने लगा। रीछ की पेशाब से डरकर शेर भी भाग गया। रीछ जंगल में चला गया।

महामंत्री का पुत्र रोता-पीटता वापस आया।

हाहाकार मच गया।

बड़े-बड़े वैद्य बुलाये गये। उपचार चला, पर कोई भी ठीक न कर । तब महामंत्री ने ढिंढोरा दिया—जो उसके बेटे को ठीक कर देगा, दस लाख स्वर्ण मुद्रा मिलेगी।

सिपाही के घर में छिपे हुए चित्रकार को खबर लगी। उसने कहा— इलाज कर सकता है।"

"महामंत्री तुमको पहिचान लेगा।"

"जनाना वेश में जाऊंगा।"

"ठीक है।"

सिपाहियों ने चित्रकार को परदे वाली बहू बना दिया। महामंत्री के गये। कहा, यह बहू इलाज कर सकती है, पर एक शर्त है। इसका ोई नहीं देख सकता।"

महामंत्री ने शर्त मान ली।

चित्रकार ने अपने इलाज के द्वारा महामंत्री के पुत्र को ठीक कर महामंत्री प्रसन्न हो गया। पुरस्कार देने के साथ-साथ बोला, "और गना चाहते हो, मांग लो।"

चित्रकार ने घूंघट पलट दिया। महामंत्री चौंक गया।

"अरे···तुम···।"

"हां, अन्नदाता।"—चित्रकार बोला. "आपने बिना निर्णय किये ार डालने का आदेश दिया था। आपको सोच समझकर फैसला

करना था। जिस प्रकार मैंने अपनी साधना के बल पर आपके पुत्र को ठीक किया है, उसी प्रकार रानी का तिल भी ताड़ गया था। अगर मुझे मरवा डाला होता तो आपका पुत्र आज किस दशा में होता ?"

"भूल हो गयी चित्रकार, क्षमा करो।"

महामंत्री ने क्षमा याचना की। कहा, "महाराज विक्रमादित्य होते तो ऐसी गलती न हो पाती। उनकी गैर हाजिरी में मैंने गलत फैसला कर दिया।"

देखा राजा भोज ! बिना खूब सोच-विचार के कारण दिया गया निर्णय हमेशा गलत होता है। सब बातों पर खूब गौर कर फैसला करना चाहिए तभी सच्चा काम हो पाता है, राजन् !

मलयवती ने पूछा, "क्या तुममें यह गुण है, राजन् ?"

और वह आकाश में उड़ गयी। सारा वातावरण खुशबू से भर गया सुगंध भरी मलय बिखराकर मलयवती अन्तर्ध्यान हो गयी।



सुन्दरी

क जाओ राजा भोज ! —यकायक एक और पुतली सामने आ
ग्री, क्या कभी तुमने अपने राजमहल का कोई सामान जनता
उपभोग के लिये दिया है ? राजा वही, जो अपनी प्रजा की हर
रह से सहायता करे। अगर तुमने ऐसा एक भी काम किया है,
इस सिंहासन पर बैठो। मेरा नाम सुन्दरी है। राजा विक्रम
एक कथा सुनो।
र सुन्दरी ने कहना शुरू किया।
व सुनने लगे।

राजा विक्रम के राज में सब सुखपूर्वक रहते थे।

नगर में एक सेठ था।

सेठ का एक लड़का था।

लड़का विवाह योग्य हो गया, तो सेठ ने एक ब्राह्मण को बुलाकर उसके योग्य लड़की खोजने का भार सौंपा। ब्राह्मण इस कार्य के लिये रवाना हो गया।

कई गांवों की खाक छानता हुआ वह एक सराय में ठहरा तो एक और ब्राह्मण वहां पर ठहरा था। उसने पूछा, तो उसने बतलाया कि वह एक योग्य लड़के की तलाश के लिये निकला है। लड़की का पिता सेठ है। तब ब्राह्मण ने भी अपना सारा विवरण दिया।

संयोग कुछ ऐसा बैठा कि दोनों ने एक-दूसरे का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

रिश्ता पक्का कर ब्राह्मण लौट पड़ा।

विवाह की तिथि भी तय कर उसने कन्या पक्ष को बतला दी।

कन्या पक्ष का ब्राह्मण लौट गया। कन्या के पिता को उसने सब कुछ बतला दिया। कन्या के पिता ने विवाह की तैयारियां शुरू कर दीं?

ब्राह्मण वापस लौट रहा था। अचानक डाकुओं के एक गिरोह ने उसे पकड़ लिया। फिरौती की लालच में बन्दी बनाकर रख लिया। ब्राह्मण गिड़गिड़ाता रोता रहा, पर डाकू न माने। विवाह का समय पास आता जा रहा था। ब्राह्मण की प्रार्थना का डाकुओं पर कुछ प्रभाव न पड़ रहा था।

संयोग फिर ऐसा पड़ गया कि अचानक तूफान से बचने के लिये डाकुओं के दल में भगदड़ मच गयी। मौके का लाभ उठाकर ब्राह्मण भाग निकला। गिरता पड़ता, भूखा-प्यासा सेठ के पास गया। उसने सारा हाल बतलाया। सेठ संकट में पड़ गया।

विवाह के लिये केवल दो दिन शेष रह गये थे। मार्ग चार दिन का था।

अब क्या हो?

कन्या पक्ष ने सारी व्यवस्था कर रखी होगी। निश्चित तिथि को बारात आयेगी। बारात के न आने पर कन्या पक्ष की क्या दशा होगी

कन्या की बड़ी बदनामी होगी। सेठ बेहद घबरा गया। ब्राह्मण भी बहुत परेशान था। फिर यकायक ब्राह्मण बोला, "इस बारे में हम राजा विक्रमादित्य से सलाह लें। वह क्या कहते हैं।"

"ठीक है। चलो।"

तब ब्राह्मण और सेठ दोनों राजा विक्रमादित्य के पास आये। उनके सामने सारी समस्या रखी। विक्रमादित्य ने सब सुनकर बड़ी चिंता व्यक्त की। समय था ही कहां?

यकायक राजा को ख्याल आया कि एक बढ़ई उनको उड़नखटोला दे गया था। वह यात्रा तय करा सकता है। उसका संचालन करना केवल राजा विक्रम को आता था। वह बोले, "ठीक है। विवाह निश्चित [illegible] पर होगा। कल आ जाना।"

अगले दिन राजा विक्रम ने वह ब्राह्मण, उसके पिता को उड़न खटोले में बैठाया और थोड़ी देर में कन्यापक्ष तक पहुंचा दिया।

सेठ ने राजा के चरण पकड़ लिये। महाराज आप विवाह में शामिल होने के बाद जायें। आपने हमारा बड़ा उपकार किया है। एक निर्दोष कन्या का जीवन बनाया है।"

राजा विक्रम ने सेठ की प्रार्थना स्वीकार कर ली।

इस प्रकार राजा विक्रम वर पक्ष की बारात में शामिल हो गये। विवाह धूमधाम से सम्पन्न हो गया।

राजा विक्रम अपने उड़नखटोले में वापस लौट गये।

अब बताओ, राजा भोज, क्या तुमने अपने राज्य के किसी साधारण नागरिक की इस प्रकार सहायता की है? क्या ऐसा कोई उदाहरण है?

राजा प्रजा का सेवक होता है।

जो राजा इस प्रकार का होगा, वही इस सिंहासन पर बैठ सकता है। यह सिंहासन उनके लिये ही बना है।

सुंदरी अपनी बात कहकर उड़ने ही वाली थी कि राजा भोज ने पूछा, "क्या मुझमें कुछ भी योग्यता नहीं है?"

इसका जवाब अन्य पुतलियां देगीं। उनसे पूछ लो। शायद कोई पुतली तुमको इस सिंहासन पर बैठने की अनुमति दे दे। मैं क्या कर सकती हूं!

इतना कहकर वह आकाश में जाकर लुप्त हो गयी।

दरबार में फिर सन्नाटा छा गया। मायूस राजा भोज उस दिन फिर वापस लौट गया। सारी रात सो न सका। किसी भी पुतली के प्रश्न का उत्तर न दे पा रहा था और न किसी को संतुष्ट कर पा रहा था। फिर भी सिंहासन पर बैठने की उसकी लालसा मरी न थी। वह लालायित ही था।

उसको यह विश्वास हो गया था कि वह सिंहासन पर बैठकर रहेगा। आखिर यह जादुई पुतलियां कब तक उसका रास्ता रोकेंगी, एक दिन इनकी नाटक बाजी खत्म होगी। फिर वह इत्मीनान से बैठ सकेगा।

उसने महामंत्री से कहा, "ब्राह्मणों से कहो, कल फिर सर्वोत्तम मुहूर्त निकाल कर रखें। मैं इस सिंहासन पर बैठूंगा।"

वह अन्तःपुर में आ गया। शयन करते समय भी वह सिंहासन पर बैठने का ख्वाब देख रहा था। सिंहासन इतना प्यारा था कि उस पर बैठने का लोभ वह संवरण न कर पा रहा था।



सत्यवती

की आत्मा शुद्ध रहती है, वह हर परीक्षा में खरा उतरता है।
य को अपना अन्तःकरण निर्मल रखना चाहिए। द्वेष, लोभ,
, काम, क्रोध, मद से रहित मनुष्य ही जीवन का सच्चा सुख
है। राजा भोज, क्या तुम्हारा अन्तःकरण इतना निर्मल है?
है, तो इस सिंहासन पर बैठो।
ती ने राजा भोज को रोककर आगे जो कथा सुनायी, वह
कार है।

जैसे ही राजा भोज ने कदम उठाया, वैसे ही एक अत्यन्त स्वरूपवान युवती ने राह रोक ली। उसका दमकता चेहरा देखते ही बनता था। राजा भोज उसका रूप यौवन देखकर चकरा गया। वह सिंहासन से बाहर आ गयी।

एक पुतली ही थी वह। उसने व्यंग्य से राजा भोज की ओर देखा और कहा, "सुनो राजा भोज। राजा विक्रम के कार्यों की प्रशंसा दूर-दूर तक फैल गयी। सर्वत्र उसकी ही जयजयकार और चर्चा होती थी। चपरासियों के बीच भी उसका नाम फैल गया था :

एक वन में दो तपस्वी थे।

एक राजा का प्रशंसक था।

"राजा विक्रमादित्य के कार्यों के आगे हमारा जप-तप कुछ भी महत्व नहीं रखता है। उसने हम सबको मात दे रखी है।"

"ऐसी क्या बात है, उसमें ?"

"परखकर देख लो न।"

दोनों तपस्वी सहमत हो गये। राजा विक्रमादित्य को परखने के उद्देश्य से वह चल पड़े। घना वन पार कर रहे थे यकायक एक भयानक नाग सामने आ गया। दोनों भयभीत हों, इससे पहले ही नाग ने उन दोनों को प्रणाम किया। दोनों तपस्वियों ने उसे आशीर्वाद दिया।

फिर पूछा, "नागराज, कहां जा रहे हो ?"

"मैं शेषनाग के दर्शन करने जा रहा हूं।"

"क्या हम लोग भी दर्शन कर सकते हैं ?"—तपस्वी बोल उठे।

"आइए फिर।"

नागराज उन दोनों को अपने साथ सम्मानपूर्वक पाताल लोक ले गया। पाताल लोक का वैभव देखकर दोनों तपस्वी दंग रह गये। सारा पाताल लोक हीरे माणिक जवाहरातों से जगमगा रहा था। वहां का सौन्दर्य देखते ही बनता था। दोनों तपस्वी सब देखते रहे।

वह शेषनाग के पास गये। शेषनाग ने दोनों तपस्वियों का स्वागत किया। तपस्वियों ने अपना आशीर्वाद दिया। उस रात वह पाताल लोक में ठहरे। सुबह बिदा लेने आये, तो शेषनाग ने उनको चार लाल दिये।

मेरा विनम्र उपहार स्वीकार करें।"
इनका हम क्या करेंगे ?"
यह बड़े चमत्कारी लाल हैं। पहला लाल जिसके पास रहेगा, उसके लक्ष्मी का वास हमेशा रहेगा। दूसरा लाल रखने वाला हाथी घोड़े पाता रहेगा। तीसरा लाल रखने वाले के पास आभूषणों की कमी। चौथा लाल जिसके पास होगा, उसका परलोक बन जायेगा। न्हें रखे। किसी जरूरतमंद योग्य व्यक्ति को भेंट कर दें।"
नों तपस्वी अपना आभार प्रकट कर पाताल लोक से वापस आ

जा विक्रमादित्य से मिलने चल पड़े।
कायक मन में विचार आया, चारों लाल राजा विक्रमादित्य को फिर देखा जाये, वह उनका क्या करता है ? दोनों ने यही निश्चय या।
थासमय वह राजा के दरबार में आये।
जा विक्रमादित्य ने दोनों तपस्वियों का स्वागत किया।
आपकी क्या सेवा की जाये, विप्रगण। आज्ञा प्रदान करें।
न्यवाद राजन् ! आपको देखने की बड़ी इच्छा थी। हम तपस्वी री कोई आवश्यकता नहीं है।"
र दोनों तपस्वियों ने राजा को चारों लाल दे दिये। उनके गुण दये। राजा ने उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। फिर वह तपस्वी । गये।
जा की नगरी में दोनों रुक गये। यह देखना चाहते थे कि राजा उन चारों लाल का क्या करता है ?
जा विक्रम एक रात नगर में निकला।
ते-घूमते एक घर के सामने रुक गया।
में पति पत्नी पुत्र में विवाद चल रहा था।
सी बात पर रूठकर गृहस्वामी बाहर आ गया। तब राजा ने पूछा।
या बात है ?"
न लोगों की फरमाइशें पूरी करते-करते मेरे प्राण जा रहे हैं।"

"एक काम करो।"

"जी।"

"मेरे पास चार लाल हैं। कोई एक तुम ले लो। पहला लाल रख वाला लक्ष्मी की कृपा पायेगा। दूसरा लाल बराबर हाथी घोड़े देगा तीसरा लाल आभूषणों की कमी न होने देगा। चौथा लाल परलोक सुधार वाला है। जो पसंद हो ले लो।"

"ठहरो। मैं पूछकर आता हूं।"

गृहस्वामी भीतर आया।

परिवार से सब कहा।

"आभूषण वाला लाल ले लो।"—पत्नी बोली।

"हाथी घोड़े वाला रख लो। मैं व्यापार करूंगा।"—पुत्र बोला।

"लक्ष्मी वाला रख लो।" बहू बोली।

"मैं तो परलोक सुधारने वाला रखना चाहता हूं।" गृहस्वामी अपनी राय दी।

सबमें विवाद होने लगा। सबका विवाद देखकर वह बाहर आय राजा विक्रमादित्य से सब कहा। सुनकर राजा हंसने लगा। बोला, "तु चारों लाल रख लो।"

उसने सभी लाल दे दिये।

दोनों तपस्वियों को जब इसका पता चला तो वह हैरान रह गये राजा विक्रमादित्य वास्तव में महान हैं। वह मान गये।

देखा राजा भोज! क्या तुम इस तरह और ऐसे उदार हो सकते हो बोले।···अगर हो तो बैठो इस पर, वरना नहीं। सत्यवती ने कहा, मैं चली।

और वह आकाश में उड़ गयी। राजा और दरबारी आश्चर्य से दे रह गये। फिर दरबार में सन्नाटा छा गया। राजा भोज का वह दिन खाली गया।



रूपलेखा

क रूप से जगमगाती एक युवती सामने आ गयी।
राजा भोज! क्या तुम बता सकते हो, ज्ञान बड़ा है या

इस प्रश्न का उत्तर दे सको, तो बैठो इस सिंहासन पर,
नहीं।
भोज इस प्रश्न का उत्तर न दे सका। तब रूपलेखा कहने

भोज और उनका सारा दरबार ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

इस सिंहासन पर बैठने की इच्छा रखने वाले राजा भोज, सुनो। ए
दिन राजा विक्रमादित्य के दरबार में दो व्यक्ति आये। उनमें आपस
विवाद चल रहा था। एक का कथन था कि ज्ञान बड़ा होता है और दूस
कह रहा था कि मन ? दोनों निर्णय न कर पा रहे थे। विवाद बढ़ता ग
और अन्ततः दोनों ने राजा विक्रमादित्य के पास आये और अपना निर्ण
देने की प्रार्थना की। राजा विक्रम ने दोनों की बातें सुनी।

"राजन् ! ज्ञान के बिना भला मन क्या कर सकता है। जब लो
को ज्ञान है कि राजा विक्रम के राज में अपराध करने के लिये कड़ा द
मिलता है, तो अपराधी अपने मन का कहना नहीं मान सकता। वह अप
मन मसोसकर रह जाता है। इस प्रकार ज्ञान मन से बड़ा और प्रबल है

दूसरा व्यक्ति बोला, "मन से ज्ञान उत्पन्न होता है, अन्नदाता। अ
मन न चाहे तो भला कौन ज्ञान प्राप्त कर सकता है। आपका मन न
तो भला आप प्रजा का कल्याण कर सकते हैं। अतएव मन से ज्ञान छो
है। मन ज्ञान से बड़ा है।"

राजा विक्रमादित्य ने कोई जवाब न दिया।

कहा—"तुम सब एक सप्ताह बाद आना। फैसला तभी कर दि
जायेगा।"

दोनों जयजयकार कर चले गये।

राजा विक्रमादित्य दोनों की बात पर विचार करने लगा। वह
निर्णय न कर पा रहा था कि मन बड़ा है या ज्ञान— दोनों एक दूसरे
कहीं न कहीं बढ़चढ़कर नजर आते थे।

दो तीन दिन के बाद एक ब्राह्मण राजा के दरबार में आया। उ
राजा विक्रम की प्रशंसा की और कहा कि वह राजा को एक अद्भुत च
भेंट करना चाहता है। उसने राजा को खड़िया मिट्टी का एक टु
दिया।

"राजन् ! इससे आप जो कुछ भी दीवार पर बनाओगे, वह रा
सजीव हो जाया करेगा। प्रातः फिर यथा रूप हो जायेगा।"

वह टुकड़ा देकर ब्राह्मण चला गया।

उस रात राजा विक्रम ने अपने शयनागार की दीवार पर देव

क चित्र बनाये। वह सब सजीव हो गये। उनके दर्शन कर राजा ने अपने को धन्य माना।

अगली रात उसने अप्सरा का चित्र बनाया। गायन-वादन के चित्र बनाये।

बस क्या था!

सब सजीव होगये।

सारी रात अप्सरा का नृत्य और गायनवादन होता रहा।

अब क्या था! हर रात राजा विक्रम मनचाहे चित्र बनाता और सजीव रूप में उनका आनंद लेता था। रानियों के पास जाना बंद हो गया। इस पर सबसे छोटी रानी चिंता में पड़ गयी। एक रात उसने गुप्त रूप से सारा खेल देखा। वह समझ गयी।

सुबह वह राजा के पास आयी।

उसने राजा से खड़िया मांग ली और दीवार पर नदी का चित्र बना दिया। खड़िया उसने राजा को वापिस कर दी।

उस रात राजा को विलम्ब हो गया। वह अपने शयनागार में कुछ न बना सका, पर यकायक राजमहल में नदी बह निकली। सब कुछ जलमय हो गया। राजा नदी की भंवर में फंस गया। तब उसने दोनों देव याद किये। अगिया बैंताल और बैंताल ने भंवर से निकाला।

"इस नदी को रोको।"—राजा ने कहा।

दोनों ने मिलकर नदी को बांध दिया, तब राजमहल बच गया।

राजा ने छोटी रानी को बुलाया।

"नदी तुमने बनायी थी।"

"हां।"—वह बोली।

"क्यों?"

"मुझे आपकी खड़िया का ज्ञान हो गया तो मेरे मन ने सब कुछ मिटा ने की सोची। नदी सबसे अच्छा उपाय था। मैंने नदी बना दी।"

राजा विक्रम चुप रह गया। उसने खड़िया चूर-चूर कर दी। उसका चूर्ण जमीन में दफन कर दिया, पर यकायक मानो अपनी समस्या का हल मिल गया उसे।

एक सप्ताह बाद दोनों व्यक्ति उसके पास आये।

"अन्नदाता, अपना निर्णय दें।"

विक्रम ने कहा, "सुनो ज्ञान और मन में कौन बड़ा है? यह फैसला गलत होगा। ज्ञान ही मन है और मन ही ज्ञान है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। इनको अलग करके नहीं देखा जा सकता है। दोनों बराबर के भाई हैं।"

राजा का निर्णय एकदम ठीक था।

दोनों व्यक्ति संतुष्ट हो गये।

समझे राजा भोज। हमारा राजा विक्रमादित्य किस प्रकार प्रत्येक समस्या का सही हल करता था? क्या इस प्रकार की बुद्धि तुम्हारे पास पास है?"

राजा भोज के पास जवाब न था। वह चुप रह गया।

जिसके पास विक्रमादित्य के समान बुद्धि हो, वही इस पर बैठ सकता है। इस बात को समझ लो।"

रूपरेखा अपनी बात कहकर हंसने लगी। फिर वह उड़ी। देखते-देखते अन्तर्ध्यान हो गयी। राजा भोज चिंता में पड़ गया। क्या वह इस सिंहासन बैठ न सकेगा? फिर भी वह साहस न छोड़ रहा था। वह दिन भी चला गया, तो अगले दिन फिर उसने प्रयत्न करने का निश्चय कर लिया।



तारामती

पने शरीर लक्षणों या आकृति से ही कोई महान नहीं होता है, जा भोज ! कर्म और ज्ञान भी आवश्यक है। तुम राजा हो कते हो, पर इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी तभी होगे, व ऐसा कुछ तुममें होगा। मेरा नाम तारामती है। मेरा तुमसे ी कहना है। पहले अपने को इस योग्य बना लो। तुमको श्वास नहीं है, तो सुनो, मैं आंखों देखी एक कथा कहती हूं।

हस्त रेखा और सामुद्रिक ज्ञान में अत्यन्त पारंगत एक ब्राह्मण राजा विक्रमादित्य का नाम सुनकर उनको देखने के लिये उनके राज्य में बड़ी लम्बी यात्रा करके आया। जब वह राजधानी की ओर आ रहा था, तो रास्ते में एक गीले स्थान पर पैरों की छाप देखकर चौंक पड़ा। छाप में कमल और ऊर्ध्व रेखा बनी थी। पैरों की ऐसी छाप हमेशा चक्रवर्ती सम्राटों की होती है।

पंडित चौंक गया।

क्या राजा विक्रमादित्य इसी ओर पैदल ही गया है?

उसका ऐसा करना नयी बात न थी। दूर-दूर तक इस बात की ख्याति फैल चुकी थी कि राजा विक्रम नाना रूप धारण कर प्रजा के बीच जाकर उनके दुःख सुख का स्वयं पता करता है।

पदचिन्ह धुंधले होकर दूर तक चले गये थे।

पंडित उनका अनुसरण कर चला।

पदचिन्ह एक जंगल की ओर गये थे। पंडित जंगल में चला गया। वहां पर एक लकड़हारा मिला। वह लकड़ियां काटने में लगा था।

पंडित उसके पास रुक गया।

पूछा, "सुनो भाई···क्या तुमने किसी को यहां से जाते देखा है?"

"नहीं। मैं तो अभी आ रहा हूं।

पदचिन्ह उसी स्थान पर आकर समाप्त हो गये थे, जहां लकड़हारा लकड़ियां चीर रहा था।

उसका उत्तर पाकर पंडित असमंजस में पड़ गया। आखिर राजा किस ओर चला गया? वह कुछ निर्णय न कर पा रहा था। जंगल में क्यों चला गया?

अचानक पदचिन्ह दीखा। कमल और ऊर्ध्व रेखा।

उसी पदचिन्ह के पास लकड़हारा काम कर रहा था।

पंडित का माथा ठनका। उसने कहा, "भाई, तुम अपने तलुवे दिखलाना।"

लकड़हारा आश्चर्य से देखने लगा। तब पंडित बोला, "हैरान मत हो। मैं पंडित हूं। तुम्हारे पैरों की रेखाएं देखकर तुम्हारा भविष्य बतला

सकता हूं।"

लकड़हारे ने अपने तलुवे दिखलाए। पंडित आंखें फाड़कर देखता रह गया। कमल और ऊर्ध्व रेखा···विश्वास न आया। उसने आंखें मलीं। फिर वही सब। आश्चर्य से बोल उठा, "तुमको चक्रवर्ती सम्राट होना चाहिए···।"

लकड़हारा हंसने लगा, "महाराज! मैं तो जन्म से लकड़हारा हूं। मेरा बाप भी लकड़हारा था। मुश्किल से दो रोटी जुटा पाता हूं।"

पंडित हैरानी से देखता रह गया। अब तक पढ़े सामुद्रिक शास्त्र के सिद्धान्तों के बिलकुल विपरीत यह बात थी।

"अच्छा। ठीक है।"

वह पंडित निराश सा वापस लौट पड़ा।

कमल और ऊर्ध्व रेखा वाला व्यक्ति···लकड़हारा!

वह किसी प्रकार राजधानी आया। महाराज विक्रमादित्य के दरबार में आकर अपना परिचय दिया। राजा ने उसका अभिनंदन किया।

पंडित ने अनुरोध किया।

"राजन! मैं आपके तलुवे देखना चाहता हूं। रेखाएं देखकर भविष्य-वाणी कर सकता हूं।"

राजा मुस्कुराया।

ब्राह्मण का अनुरोध स्वीकार कर अपना तलुवा दिखलाया। ब्राह्मण चौंक गया। तलुवे की रेखाएं राजा को महादरिद्र बतला रही थीं। वह हैरानी से देखने लगा।

"क्या बात है। ब्राह्मण देवता?"—राजा ने पूछा।

"राजन्! सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार आपको अत्यन्त दरिद्र होना चाहिए। आश्चर्य आप राजा कैसे हो गये? लगता है, हमारा सामुद्रिक शास्त्र झूठा है?"

"नहीं।"—राजा ने कहा, "हमारे शास्त्र झूठे नहीं है।"

"तब यह क्या बात है?"

"ब्राह्मण देवता। रेखाएं केवल बाहरी आवरण हैं। वास्तव में कर्म और ज्ञान की रेखाएं देखें। कमल और उर्ध्व रेखा आपको मेरे कर्म

में मिलेगी। ठहरो। मैं तुमको प्रमाण दूंगा।"

राजा ने उसे अपने पास ठहरा लिया।

फिर रात को वह ब्राह्मण के साथ निकला। रास्ते में एक शराबी मिला। राजा ने उसे स्वर्ण मुद्रा दी। वह मदिरालय में फिर चला गया। और शराब पीने लगा। राजा ने एक बूढ़े को स्वर्ण मुद्रा थी। उसने सहेज कर रख ली। गाढ़े वक्त काम आयेगी। कुछ स्वर्ण मुद्राएं एक युवक को दीं।

"आपका धन्यवाद। मैं इससे व्यापार करूंगा।"

"देखो ब्राह्मण देवता। स्वर्ण मुद्रा सबको मिली। सबने अलग-अलग उपयोग किया। इसी प्रकार भाग्य सबके साथ रहता है। उनका जैसा उपयोग मनुष्य करे। रेखाएं तो केवल बाहरी आवरण है। उनके पीछे भी कुछ होता है। सामुद्रिक शास्त्र सब मिलाकर देखना पड़ता है। रेखाएं, मुखाकृति, व्यवहार सब मिलाकर विचार होता है।"

ब्राह्मण मान गया।

"आप ठीक कहते हैं।"—उसने कहा।

ब्राह्मण संतुष्ट हो गया। देखा राजा भोज। हमारे सिंहासन पर बैठने वाला विक्रमादित्य कैसा था ? किस प्रकार वह समस्याओं का समाधान करता था। अगर तुम इस योग्य हो, तो सहर्ष सिंहासन पर बैठो।

तारामती अपनी बात कहकर आकाश में उड़ गयी।

राजा भोज और तमाम दरबारी फिर मायूस हो गये। सिंहासन पर बैठने का मुहूर्त फिर टल गया।



धर्मवती

एक हल्के से विस्फोट की आवाज हुई और उसी क्षण एक पुतली साकार रूप में राजा भोज के सामने आकर खड़ी हो गयी। राजा भोज ठिठक गया।

"मेरा नाम धर्मवती है राजा भोज! क्या तुम अपने आधीन कर्मचारियों के दुःख सुख का ध्यान रखते हो, क्योंकि ऐसा करने वाले ही चाहे वह राजकाज हो या व्यापार, उसमें सफल होते हैं। है क्या तुम्हारे पास कोई उदाहरण? तब तो जरूर बैठो सिंहासन पर।"

धर्मवती की बात सुनकर राजा भोज उसका मुंह ताकता रह गया।

प्रातः काल का समय था। राजा विक्रमादित्य राजमहल के सुन्दर उद्यान में पुष्पों के सौन्दर्य का अवलोकन कर रहा था। साथ में मंत्री, महामंत्री और राजपुरोहित भी थे। राजा विक्रमादित्य ने एक कमल पुष्प की प्रशंसा की। राजपुरोहित बोला, "सब ईश्वर की कृपा है। उसके बिना तो पत्ता भी नहीं हिल सकता है, सब कुछ उसके हाथ में है। हम तो खेल खिलौने हैं।"

राजा विक्रम ने कुछ न कहा।

अचानक एक द्वारपाल आया। उसने महामंत्री ो संदेश दिया।

"आपको घर पर याद किया गया है।"

महामंत्री ने राजा की ओर देखा। राजा उसका आशय समझ गया। बोला, "जा सकते हो।"

महामंत्री चला गया।

राजा विक्रमादित्य का मन शंका से भर गया। राजपुरोहित से पूछा, "क्या कुछ बात है? महामंत्री परेशान से थे! शायद…।"

"हां राजन्! उनका पुत्री बहुत बीमार है।"

"बहुत बीमार है।"

"जी हां।"

"मुझसे बतलाया भी नहीं।"

"आपसे कहकर वह अपने कर्तव्य में बाधा नहीं डालना चाहता है। महामंत्री का हर समय राजा के साथ रहना आवश्यक है। जाने कब क्या हो जाये। क्या जरूरत पड़े?"

राजा विक्रमादित्य कुछ न कह चुप रह गया।

दोपहर के समय उसने राज वैद्य को बुलाकर पूछा, "महामंत्री की पुत्री का क्या हाल है?"

"अन्नदाता! गंभीर रूप से बीमार है। उसके जीवन का खतरा है।"

"खतरा! तुम्हें उसकी प्राण रक्षा अवश्य करनी है।"

राजवैद्य के माथे पर सिकुड़नें पड़ गयी। अपने होंठ कस लिये उसने। राजा विक्रम को शक हो गया। बोला, "कुछ कहना चाहते हो क्या?"

"हां, अन्नदाता एक बात थी।

"बोलो।"

"महामंत्री के पुत्री के जीवन की रक्षा हो सकती है। एक काम करना ड़ेगा, पर बहुत कठिन है।"

"क्या ? कहो।"

"राजन् ! नीलगिरी की घाटी में खवांग नामक एक पौधा होता है। स पौधे को पीसकर उसका रस पिला दिया जाये, तो जरूर बच जायेगी।"

"मंगवा लो तब।"

"अन्नदाता। पौधे की पहिचान तो मैं बता दूंगा, पर लायेगा कौन ?"

"कोई दूत भेज दो।"

राजवैद्य बोला, "राजन ! हर एक के वश की बात नहीं है। भयानक ीवों और सर्पों से भरा स्थान है वह। जाकर शायद ही कोई वापस आ के। मेरे पास था, पर एक रोगी को दे देना पड़ा।"

"कहां से आया था, तुम्हारे पास ?"

"एक साधु दे गया था।"

"वह साधु मिलेगा !"

"क्या ठिकाना। बहता पानी, रमता जोगी। साधु-संन्यासी का कोई ठकाना होता है। जाने कहां होगा ?"

"पौधे की पहिचान क्या है ?"

राजवैद्य ने पहिचान बतला दी।

"ठीक है।"

राजा विक्रमादित्य आगे कुछ न बोला। जब वह अकेला रह गया, तो चार करने लगा। नीलगिरी से पौधा कैसे मंगाया जाये ? एक बार उनके न में आया कि वह इस काम को अगिया बैताल या बैताल को सौंप दे र सोचा कि परोपकार का काम स्वयं करे। अतएव वहां जाने का निर्णय र लिया।

समय निकालकर सारी व्यवस्था कर वह नीलगिरी घाटी की ओर वाना हो गया।

कई दिन बाद घाटी में आया।

घाटी काफी गहरी थी। एक में एक भयानक वृक्षों, पत्थरों और ढूहों

में भरी। घाटी में स्थान-स्थान पर सघन अंधकार भी था। शायद सूरज की रोशनी सैकड़ों साल से वहां न पहुंचा रही थी। पौधे की तलाश करता राजा विक्रमादित्य घाटी में प्रवेश कर गया। एकदम निर्जन प्रांत था। आदमजाद का पता न था। सारा वातावरण इतना डरावना था कि दिन में भी दिल दहल सकता था।

अचानक सिंह गर्जना सुनायी पड़ी।

राजा सतर्क हो गया, पर जब तक तलवार संभालता सिंहराज ने छलांग मार दी। राजा विक्रम लुढ़क गया। सिंह ने विक्रम की बांह में थप्पड़ मार लोथड़ा निकाल दिया, पर तब तक तलवार के भरपूर वार से वनराज का सिर अलग जा गिरा। रक्त का फुहारा उछलने लगा। अगर एक पल की और चूक हो जाती तो राजा विक्रम के जीवन की समाप्ति निश्चित थी। राजा ने फौरन अपनी भुजा पर पत्ते बांध दिये। फिर कपड़ा लपेट दिया। वह आगे चल पड़ा। कुछ ही कदम गया था कि भयानक नागराज दीखे। एक से एक जहरीले नाग। उसका रास्ता रुक गया।

तब विक्रम ने रास्ता बदल दिया।

नाग समूह वहीं रहा।

पौधे की तलाश करता राजा विक्रम बराबर चला जा रहा था। पौधा दीख न रहा था, पर अभी नीलगिरी घाटी का बहुत भाग शेष था।

रात हो गयी। भयानक घना अंधकार छा गया। राजा विक्रम एक पेड़ पर चढ़कर सो गया। पूरी घाटी भयानक आवाजों से गूंज रही थी। जानवरों, पेड़ों और पत्थरों की आवाजें। फिर भी राजा निश्चिन्त सोया पड़ा रहा। सुबह उठकर फिर चल पड़ा। कुछ ही आगे गया था कि उसके कदम अपने आप पीछे की ओर खिचने लगे। वह घबरा गया। कौन उसको खींच रहा है, पर तभी देखा कि एक विशालकाय, छोटे-मोठे पहाड़ की तरह पड़ा अजगर सांस ले रहा था। सांस खींचकर वह उसे निगलना चाहता था। राजा विक्रम अपने को संभाल न सका। खिचा चला गया और अजगर के मुंह में सरसराकर चला गया। अजगर ने अपना जबड़ा बंद कर लिया।

जबड़ा बंद होते ही राजा विक्रम को लगा कि खौलते कढ़ाहे में आ

रा है। अजगर के विशालकाय, कोठरी के समान पेट की गरमी ने
को एकदम झुलसाना शुरू कर दिया था। राजा विक्रम को बेहोशी
ने लगी। तभी उसने अपनी तलवार बाहर कर उस विशालकाय अजगर
पेट चीरना शुरू कर दिया। विद्युत् वेग से तलवार से वार करने लगा।
ते-देखते राजा विक्रम अजगर का पेट चीरकर बाहर आ गया।

बाहर आकर बेहोश हो गया।

कुछ देर बाद होश आया तो फिर चल पड़ा।

फिर पौधे की तलाश करने में लग गया।

पौधा कहीं न दीख रहा था।

फिर भी विक्रम ने आशा न छोड़ी थी। राजवैद्य झूठ नहीं बोलेंगे।
ा अवश्य मिलेगा। राजा विक्रम कई दिन भटकता रहा।

अचानक पौधा दीख पड़ा, पर यह क्या उसके चारों ओर बड़े काले
च्छू डंक उठायें जमे थे। एक बिच्छू ने पत्थर पर डंक मारा। चटाक्
त्थर टूट गया और आग लग गयी। राजा विक्रम सिहर गया। कितना
ानक जहर था! बिच्छुओं को राजा पत्थर मार-मारकर भगाने लगा
वह हट न रहे थे।

विक्रमादित्य वहीं बैठ गया।

फिर बिच्छुओं का समूह अपने आप हटने लगा। पंक्ति बनाकर वह
चले गये। तब विक्रम आगे बढ़ा तो पौधे को अपनी लपेट में लिये
विशाल नाग पड़ा था। विक्रम ने आहट की तो नागराज फन फैलाकर
गया। अचानक विक्रम ने दूसरी दिशा में पत्थर फेंका तो नागराज
ओर सरक गया। नाग का हटना था कि राजा ने लपककर पौधा
ड़ लिया। फिर वह लौट पड़ा।

राजा ने काम पूरा कर लिया। पौधा लाकर दिया। वैद्यराज आश्चर्य
ोला, "कौन ले आया है?"

"मैं…।"

"आप।" वैद्यराज ने राजा के चरण पकड़ लिये, "आप महान है,
है, आपका राज अटल हो, अपने मातहत कर्मचारी के लिये अपने
संकट में डाल आप पौधा ले आये। भला ऐसे राजा को कौन न

चाहेगा।"

राजवैद्य ने इलाज किया।

महामंत्री की पुत्री ठीक हो गया। महामंत्री को इसका पता न था कि राजा ने क्या किया है···जब राजवैद्य ने बतलाया तो महामंत्री की आंखों में आंसू आ गये।

"बोलो राजा भोज।" धर्मवती ने पूछा, "क्या तुमने कभी किसी मातहत की इस प्रकार सेवा की है? क्या गुण है तुम्हारा जो इस सिंहासन पर बैठना चाहते हो?"

राजा भोज निरुत्तर रह गया। जवाब न दे सका। धर्मवती ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाये और वह आकाश में उड़ गयी। सिंहासन फिर खाली रखा रह गया।

राजा भोज का मन दुःखी हो गया, पर उसने आशा न छोड़ी। विश्वास था, एक दिन इस पर बैठकर रहेगा। आखिर पुतलियों का तमाशा खत्म होगा ही और एक दिन वह अवश्य बैठकर रहेगा।



अनुरोधवती

ा भोज ! अपने ज्ञान, अपनी विद्वता का अधिक प्रदर्शन करना
ट को बुलाना है। क्या तुम इस बात को जानते हो ?
ा विक्रमादित्य ने इसी बात को समझाकर माधव को सुखद
न प्रदान किया।
तुममें इस प्रकार का गुण है ? अनुरोधवती मेरा नाम है।
, मेरा अनुभव।

एक नयी पुतली साकार रूप में आकर खड़ी हो गयी। उसने राजा भोज से कहा, "राजन्! चिंता मत करो। शायद किसी पुतली की कसौटी पर तुम खरे उतर जाओ, तो बाकी पुतलियां तुमको तंग न करेंगी और तुम्हारा रास्ता खुल जायेगा। तुम सिंहासन पर बैठ सकते हो। निराश मत हो। अपनी कोशिश जारी रखो। सुनो, मैं तुमको एक कहानी आंखों देखी सुनाती हूं।

और अनुरोधवती ने कहना शुरू किया।

राजा भोज, माधव नामक अत्यन्त मेधावी और सर्वकला पारंगत युवक था। संसार का शायद ही कोई विषय उससे छूटा था। इसके साथ-साथ वह अद्‌भुत कला पारखी भी था। अत्यन्त स्पष्ट वक्ता भी था। निर्भीकता उसमें कूट-कूटकर भरी पड़ी थी। वह बेहिचक किसी भी बात को कह डालता था। इस कारण वह जहां भी जाता, आदर-सम्मान तो पाता था, पर कुछ समय बाद अपनी इस प्रकार की हेठी के कारण निकाल दिया जाता था। कई राज्यों और प्रतिष्ठित घरानों से भी उसका निष्कासन इसी कारण हो चुका था। वह एक जगह टिक न पाता था।

माधव बराबर भटकता रहता था। किसी स्थान पर जितना सम्मान वह पाता, कुछ समय बाद उतना ही अपमानित कर निकाल दिया जाता था।

इस बार भी वह विशाल नरेश द्वारा राज्य से निकाल दिया गया।

निराश माधव एक अन्य राज्य मलय देश के राजमहल में गया और द्वारपाल से कहा, "तुम राजा को सूचना दो। महापंडित माधव दर्शन करना चाहता है।"

"रुकना पड़ेगा।"

"क्यों?"

"इस समय महाराजा नर्तकी का नृत्य देख रहे हैं। नृत्य रुकने पर मिल सकते हो।"

माधव वहीं बैठ गया।

नृत्य पूरे यौवन पर था। मृदंग तथा अन्य वाद्य पूरे जोश पर थे। अद्भुत समां नृत्य-गायन का बंधा था। राजा कामसेन और सारा दरबार झूम रहा था।

यकायक माधव का चेहरा तमतमा गया। बोला, "कैसे मूर्ख अज्ञानी यहां पर हैं। एक साजिन्दा दोषपूर्ण वादन कर रहा है। पकड़ नही हे। सब गधे बैठे हैं, महफिल में।"

द्वारपाल चौंक गया। उसने माधव को घूरकर देखा, "क्या बक रहे "

"बक नहीं रहा, सत्य बोल रहा हूं। इस सभा में एक भी कला पारखी बैठा है। सब गधे हैं।"

"चुप रहो वरना सर अलग कर दिया जायेगा। हमारे महाराज सेन के बराबर कला पारखी दूसरा नहीं है। जरा संभलकर···।"

माधव और तमतमा गया। बोला कड़ककर, "क्या कला पारखी साजिंदे का दोष नहीं पकड़ रहे हैं। सोलह साजिंदे चार-चार की टुकड़ी ठे हैं। पूरब दिशा में जो टुकड़ी है, उसी में कोई एक साजिंदा दोषपूर्ण न कर रहा है।"

द्वारपाल हैरानी से देखने लगा। माधव जिस स्थान पर खड़ा था, से महफिल की एक झलक भी दिखलायी न पड़ती थी। बिना एक क देखे, मात्र ध्वनियों के आधार पर उसने कैसे इस बात को कह दिया।

"गधे, बेवकूफ हैं सब !" माधव जोर से बड़बड़ाया।

"चुप रह ! ज्यादा बकवास करेगा तो सिर कलम करवा दिया गा।"—द्वारपाल ने फटकारा।

"जा-जा ! अपने राजा से कह दे। मेरी बात झूठ हो तो सर कलम ।"

"अच्छा ठहर।"—द्वारपाल भीतर चला गया।

महफिल का एक दौर खत्म हो गया तो उसने मलय नरेश से सब ला दिया।

सुनकर मलय नरेश का चेहरा तमतमा गया।

"उस बेवकूफ को पकड़कर हमारे सामने ले आओ।" राजा ने आदेश या।

द्वारपाल माधव को अपने साथ महफिल में ले आया।

"अन्नदाता ! यही है वह !"

"क्यों ?"—मलय नरेश ने उसे क्रोध से देखा। पूछा, "क्या बक रहा था ?"

माधवराव विनम्रता के साथ बोला, "मैंने जो कुछ कहा है, अन्न-दाता; एकदम ठीक कहा है। एक तलबची का अंगूठा दोषपूर्ण है।"

मलयनरेश बोले, "झूठ निकली बात तब ?"

"सर कलम कर दें।"

मलयनरेश ने उस समूह के तबलचियों को बुलाया। सबके अंगूठे ध्यान से देखे गये। एक तबलची का अंगूठा नकली था। उसने अपना सिर झुका लिया।

माधव मुस्कुरा दिया।

मलय नरेश शर्मिंदा होकर बोले, "वास्तव में तुम गुणी आदमी हो। क्या नाम है तुम्हारा ? परिचय दो अपना।"

माधवराव ने अपना सम्पूर्ण परिचय दिया। परिचय पाकर मलयनरेश ने माधव को अपने दरबार में स्थान दे दिया। उसकी उचित व्यवस्था कर दी गयी। मलयनरेश के आश्रय में माधवराव सुखपूर्वक रहने लगा। समय-समय पर अपनी विद्वता का प्रदर्शन कर माधवराव ने और भी सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त कर लिया। हे राजा भोज ! इस प्रकार माधवराव के सुख के दिन आ गये, पर वह अपने स्वभाव के कारण विवश था।

एक दिन दरबार में अत्यन्त कुशल नर्तकी आयी। उसके नृत्य का आयोजन किया गया। महफिल सज गयी। माधवराव भी उपस्थित था।

नर्तकी अत्यन्त निपुण होने के साथ-साथ अत्यन्त सुन्दर भी थी।

माधवराव मुग्ध हो गया।

यकायक जाने कहां से एक भंवरा आ गया और उसके वक्षःस्थल पर बैठ गया।

वह घबरा गयी। नृत्य रोके कैसे ? रंग में भंग पड़ सकता था। अत-एव उसने पूरी सांस खींचकर अपनी नाक से इस प्रकार छोड़ी कि भंवरा उड़ गया। एक पल के लिये नृत्य न रुक सका। यह सब पलक झपकते हो गया। शायद कोई और न देख सका। मलय नरेश तो निश्चित रूप से न देख सके।

माधवराव यकायक "वाह! वाह!" कर उठा और उसने तत्काल
ने स्थान से उठकर अपने गले में पड़ा मोतियों का हार आगे बढ़कर
को पुरस्कार में दे दिया।

महफिल में उपस्थित सभी दरबारी दंग रह गये।

माधवराव यह कैसी अशिष्टता, धृष्टता कर बैठा।

महाराज के सामने।

मलयनरेश गरज उठे। नृत्य बंद हो गया। मलयनरेश बोले, "माधव,
ने मुझसे पहले नर्तकी को उपहार देने की हिम्मत कैसे की? यह धृष्ठता
? "

माधवराव ने बतलाया किस प्रकार नर्तकी के वक्ष पर भंवरा आकर
गया था और नृत्य रोके बिना कैसे-कौशल से उसने भगाया। इस पर
मुग्ध हो गया। इस दृश्य को मलयनरेश देख न सके थे। नर्तकी माधवराव
इस गुण पर मोहित हो गयी। मलयनरेश ने फिर भी माधवराव को
ज्य से निकाला दे दिया। नर्तकी ने माधवराव को आश्रय देना चाहा,
राजाज्ञा के कारण विवश हो गयी।

माधवराव निकाल दिया गया। वह व्याकुल हो गया। रात को ठीक
सो न पाता था। उसे बराबर नर्तकी दिखलायी पड़ती थी। उठ-उठकर
जाया करता था।

नर्तकी के प्रेम में व्याकुल वह भूखा प्यासा दुर्बल अवस्था में महाराजा
क्रमादित्य के दरबार में आया। विक्रम ने उसे सहारा दिया।

नर्तकी से उसका प्रेम देखकर मलयनरेश से अनुरोध कर उसका
ाह करा दिया।

माधवराव अपने जीवन के अंतिम समय तक राजा के पास रहा।
ा विक्रम का प्रताप कुछ ऐसा था कि वह कुछ भी बेअदबी न कर सका।

राजा भोज। अगर तुममें इस प्रकार का गुण है, तो इस सिंहासन पर
श्य बैठो अन्यथा इस पर बैठने का तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है।

अपनी बात कहकर अनुरोधवती आकाश में उड़ गयी और सभी दर-
ी मुंह ताकते रह गये।



अनूपरेखा

"रुको राजा भोज !" यकायक एक पुतली ने सिंहासन से निकल कर राजा भोज का रास्ता रोक लिया, "जन्म राजकुल में होने मात्र से ही तुम इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी नहीं हो जाते हो। इसके लिये संस्कार भी जरूरी हैं।

मनुष्य के संस्कार, उसका पालन-पोषण वातावरण ही उसे अपने अनुकूल बनाता है। जन्म या कुल मात्र से ही वह अधिकारी नहीं बनता है।

सुनो ! राजा विक्रम की एक कथा सुनो। मेरा नाम अनूपरेखा है।"

अनूपरेखा कह चली और सब सुन चले।

राजा सत्यपाल के देहावसान के उपरान्त उनका पुत्र यशपाल नरेश बन गया। परम्परा के अनुसार उसका राजतिलक कर दिया गया। राजा बनते ही वह प्रजा पर जुल्म करने लगा। भोग विलास में डूब गया। अपने पिता से ठीक विपरीत गुण उसमें थे। इसकी चर्चा राजा विक्रमादित्य के दरबार में होने लगी।

"बड़ा पापी राजा गद्दी पर बैठ गया है। कहां पिता···कहां पुत्र!"

"परम्परा से वही राजा था। इस कारण बन गया। राजकुलों की यही की रीति है···।"

"यह गलत बात है। नियम से राजा उसे ही बनाना चाहिए, जिसमें राजा के गुण हों।"

"क्या राजा बनने के लिये योग्य व्यक्ति का राजकुल से ही होना आवश्यक है?"—दूसरे ने प्रश्न किया।

"नियम तो राजकुल का है···।"

"और राजा पापी हो तो···? जैसा यशपाल है।"

सबमें बहस छिड़ गयी। क्या व्यक्ति का कुल से सम्मान होना चाहिए या कर्म से, राजा भोज? जिस समय दरबार में बहस चल रही थी, उसी समय राजा विक्रम आ गये। दरबारियों ने उनको घेर लिया और अपनी बात रखने लगे। व्यक्ति का कुल बड़ा है या गुण?

राजा विक्रम सुनते रहे।

फिर बोले। इसको प्रत्यक्ष क्यों न करके देख लिया जाये कि शेर का बच्चा शेर निकलता है या बकरी। योग्य बाप का बेटा योग्य ही हो···यह क्या जरूरी है?

सब सहमत हो गये।

तब राजा विक्रमादित्य ने एक शेर का बच्चा गड़ेरिये को दे दिया और कहा, "इसे बकरियों के साथ ले जाया करो।"

गड़ेरिया मांन गया।

वह सिंह-शावक को बकरियों के साथ चराने के लिये ले जाने लगा। सिंह-शावक बराबर बकरियों के साथ रहने लगा। ऐसा करते समय काफी समय बीत गया।

तब एक दिन राजा ने शेर मंगवाया। बकरियों का झुंड सामने लाया गया। सिंह-शावक भी साथ में था। यकायक शेर ने दहाड़ मारी। दहाड़ मारते ही बकरियां भाग खड़ी हुईं। उनके साथ सिंह-शावल थी। सिंह शावक को बकरी के समान भागते देखकर सब हंसने लगे।

राजा विक्रम ने कहा, "देखा···योग्य बाप का बेटा तब तक योग्य नहीं हो सकता है, जब तक कि उसका पालन-पोषण वैसा न हो। वातावरण का परिवार पर प्रभाव पड़ता है। सिंह शावक बकरियों के साथ रहकर बकरी ही बन गया। वह शेर का बच्चा है, इस सत्य को भूल ही गया। इसमें शेर का कोई भी गुण नहीं रह गया है।"

सब मान गये।

"कोई भी व्यक्ति कुल से नहीं कर्म और गुण से बनता है।"

अनूपरेखा ने कहा, "तुम्हारा क्या विचार है, राजा भोज? केवल राजा होने मात्र से ही तुम इस सिंहासन पर बैठने के अधिकारी नहीं बनते हो? क्या तुममें राजा के गुण हैं? तब तो इस पर बैठो, वरना नहीं।"

अपनी बात पूरी कर अनूपरेखा देखते-देखते आकाश में उड़ गयी। राजा भोज खड़ा का खड़ा रह गया। सारे दरबार में गहरा सन्नाटा खिचा रह गया। राजा भोज का चेहरा उदास, रंगहीन पड़ गया था।



करुणावती

राजा भोज, प्रत्येक मनुष्य अपने पूर्वजन्म के कर्मों का फल अपने
र्तमान जीवन में पाता है। क्या तुम अपने पूर्वजन्म के कर्म जानते
ो ? क्या उनके फलस्वरूप इस सिंहासन पर बैठ सकते हो ?
री इस बात पर विचार करना और तब सिंहासन पर बैठने की
च्छा पूरी करना।
रा नाम करुणावती है···सुनो। मैं राजा विक्रम की कथा सुनाती
ं।

आगे कदम बढ़ाते ही हलकी-सी ध्वनि के साथ एक पुतली सिंहासन के निकलकर बाहर आ गयी। उसने राजा भोज को आगे बढ़ने से रोक लिया।

"सुनो राजा भोज ! क्या तुमने पूर्वजन्म में कुछ अच्छे कर्म किये हैं ? यदि ऐसा है, तो तुम इस पर बैठ सकते हो ? मनुष्य इस जीवन में जो कुछ भी पाता है, वह उसके पूर्वजन्म के संस्कारों का फल होता है। राजा विक्रम को इतना यश और सम्मान उनके पूर्वजन्म के गुणों के फल के अनुसार ही मिला था।"

सब चुपचाप सुन रहे थे।

युवती आगे कह चली, "सुनो राजा भोज। एक समय की बात है कि राजा विक्रम के मन में आया कि वह इस बात का पता करे कि उसके दरबारी उसके बारे में कैसे, क्या विचार रखते हैं ? इसका पता तो उनके घरों में होने वाली बातचीत से लग सकता है। अतएव राजा विक्रम ने अपने दरबारियों के घरों में चुपके से प्रवेश कर परिवार में होने वाली बातचीत को सुनना शुरू कर दिया। इसी क्रम में जब वह अपने महामंत्री के परिवार में गया, तो वार्तालाप सुनने लगा।

महामंत्री की पत्नी उस पर नाराज थी।

"तुम राजा के साथ इतना समय देते हो कि तुमको घर का कुछ भी ख्याल नहीं है।"

"राजकाज देखना क्या आम बात है।"

"हमेशा राजा की पापलूसी करते होगे और काम ही क्या है।"

"राजा की बात मानकर 'हां में हां' मिलाना ही पड़ता है।"

"राजा का क्या ठिकाना।"—पत्नी बोली, "कब क्या कर बैठे। राजा कभी किसी का नहीं होता है।"

"पर अपने राजा विक्रम और ही हैं।"

पत्नी हंसने लगी, "हां ! अपने सगे भाई की हत्या कर गद्दी पर बैठे हैं। सोचो, जो आदमी अपने भाई की हत्या कर सकता है, वह क्या नहीं कर सकता।"

महामंत्री धीरे से बोला, "हां, तुम ठीक कहती हो।"

राजा विक्रम इस वार्तालाप को सुनकर चुपचाप वापस लौट आया। अगले दिन महामंत्री को बिना कुछ कहे पद से मुक्त कर दिया। महामंत्री आश्चर्य में पड़ गया। समझ न आ रहा था, यकायक राजा ने उसे क्यों हटा दिया ? कुछ भी पता न चल रहा था। राजा के इस व्यवहार पर और दरबारी भी चकित थे। किसी में भी इसका कारण पूछने का साहस न था।

महामंत्री का समय काटे न कट रहा था। वह सैर सपाटों में समय बिताने लगा। इसे दैवी संकट मानकर वह नदी किनारे जाकर पूजा-पाठ भी करने लगा।

एक दिन संध्याकाल वह तट पर पूजा-पाठ कर रहा था।

अचानक नदी में एक अत्यन्त खूबसूरत फूल तैरता नजर आया। वह फूल बेहद अद्‌भुत भी लग रहा था। महामंत्री ने उसे उठा लिया। वह उसके रूप-रंग पर मुग्ध हो गया। उसने आज तक ऐसा फूल कभी न देखा था। फूल पाकर वह प्रसन्न हो गया। यकायक उसके मन में आया कि इस फूल को वह राजा को भेंट कर दे।

शायद वह प्रसन्न होकर पद दे दें।

पूजा पाठ समाप्त कर वह राजा विक्रम के पास गया। उनको सादर अभिवादन किया। फिर आदरपूर्वक वह फूल अर्पित कर दिया।

राजा विक्रमादित्य ने उसे देखा कहा—"बड़ा प्यारा सुन्दर फूल है। अद्‌भुत भी है। तुमको कहां मिला ?"

"राजन् ! यह नदी में बह रहा था।"

राजा को प्रसन्न देखकर महामंत्री को आशा बंधी कि वह शायद अपना खोया पद प्राप्त कर सके। राजा विक्रम ने बहुत प्रशंसा की महामंत्री की।

फिर कहा, "ऐसा करो। यह फूल कहां से आया ? कहां लगता है ? इसका पता कर लाओ।"

महामंत्री चुप रह गया।

"पता करो !"

महामंत्री ने इस बात को स्वीकार कर लिया। स्वीकार तो कर लिया

तो भी वह परेशान हो गया। राजा ने तो उसे यह एक बड़ा ही मुश्किल काम दे दिया।

फिर भी महामंत्री ने साहस नहीं छोड़ा। जिस दिशा से नदी में वह फूल आया था, उसी दिशा में वह नाव द्वारा खोज में निकल गया। कई दिन तक लगातार यात्रा करने के उपरान्त भी उसे उस फूल के पौधे कहीं भी न दीखे। फिर भी उसने अपनी यात्रा जारी रखी। अन्ततः वह नदी के उद्‌गम स्थल तक पहुंच गया।

तब नाव से उतरकर तलाश शुरू कर दी।

यकायक वह चौंक पड़ा। एक वृक्ष से एक आदमी उल्टा लटका था। उनके आसपास और भी लोग वैसे ही लटके थे। उस व्यक्ति को छोड़कर बीस आदमी और लटके हुए थे। वह हैरान गया। यकायक उसने एक अजूबा देखा, पहले वाले लटके आदमी के मुंह से खून की बूंदें टपक रहीं थीं।

खून की बूंद टपकती। पानी में गिरती और फौरन वैसा ही फूल बनकर पानी में बह जाती।

डरता-डरता वह पेड़ के पास गया। उल्टे लटके आदमी को ध्यान से देखा। उसका चेहरा देखकर चौंक पड़ा। अरे! यह तो राजा विक्रमादित्य है। राजा विक्रमादित्य—और यहां···आश्चर्य से आंखें फटी रह गयी। अपने होंठ काटने लगा। विश्वास न हो रहा था। फिर उसने अन्य लोग देखे। सब दरबार के व्यक्ति लग रहे थे। राजपुरोहित को तो उसने सबसे पहले पहिचान लिया। फिर राजवैद्य को भी पहिचानने में भूल कर सकता था। उसकी पुत्री की प्राण रक्षा भी तो उसी ने की थी।

हैरान महामंत्री बड़ी देर तक देखता रहा। फिर वहां से हट गया। सारा वातावरण उसे बड़ा भयानक लग रहा था। सांय-सांय करती हवा और उलटे लटके मनुष्यों की सांसों के कारण बड़ा ही डरावना लग रहा था सब कुछ।

तब शाम भी होने जा रही थी।

वह वापस लौट पड़ा।

हैरान तो था, पर खुश हो गया। उसे फूल के उद्‌गम और उत्पत्ति का पता लग गया। अपनी नदी यात्रा समाप्त कर वह वापस आ गया।

अत्यन्त प्रसन्नता के साथ उसने राजा को यह सब समाचार दिया।

सब सुनकर राजा विक्रम मुस्कराया, "पहला लटका आदमी मैं था। महामंत्री। वह मेरा पूर्व जन्म है। उसी की तपस्या के फलस्वरूप मैंने राज्यपद, यश, सम्मान प्राप्त किया है। बाकी व्यक्ति मेरे यही बीस दरबारी हैं। तुम्हारी पत्नी कह रही थी कि मैंने भाई की हत्या कर राज्य हथिया है। इस कारण मैंने तुमको महामंत्री पद से मुक्त कर इस दृश्य को दिखलाया है। विना सोचे समझे, किसी पर कोई इल्जाम लगाना ठीक नहीं होता।"

महामंत्री खामोश रह गया।

"अब तुम महामंत्री पद को संभाल सकते हो।"—विक्रम ने कहा।

राजा भोज, महामंत्री राजा विक्रम की जयजयकार करने लगा। देखा, ऐसा था हमारा राजा विक्रम। अपने पूर्व जन्म के संस्कारों के कारण वह ऐसा तपस्वी सम्राट बना था। क्या तुममें ऐसा कोई एक भी गुण है तो इस सिंहासन पर बैठो ··।"

राजा भोज चुपचाप देखता रह गया।

तभी वह पुतली सबके देखते-देखते आकाश में उड़ गयी। सब फिर चकित और पथराये से यह सब तमाशा देखते रह गये।



जयलक्ष्मी

राजा भोज, क्या तुम जानते हो, प्रत्येक व्यक्ति के कार्य करने और सोचने का ढंग अलग-अलग होता है। हर व्यक्ति का व्यवहार एक-दूसरे से भिन्न होता है···अतः सज्जन, समझदार इसका ही लाभ उठाते हैं।

जब तक तुम आदमी के व्यवहारों का ज्ञान नहीं प्राप्त कर लेते हो, तब तक भला इस सिंहासन पर बैठकर कैसे न्याय कर सकते हो ?

आओ, इस संबंध में मैं विक्रमादित्य की एक कथा तुमको सुनाती हूं···शायद तुम भी इस गुण को प्राप्त कर सको।

हासन की ओर राजा भोज ने कदम बढ़ाया ही था कि हल्की-सी ध्वनि हुई। एक पुतली सिंहासन से बाहर आ गयी। वह बहुत सुन्दर मदमाते यौवन से पूर्ण थी। सभी दरबारी एकटक देखते रह गये। -दरबार की अप्सरा के समान वह सामने खड़ी थी। अत्यन्त मधुर ान के साथ वह बोली, "राजा भोज, यहां उपस्थित सभी दरबारियों, नाम जयलक्ष्मी है। मैं इस सिंहासन की पच्चीसवीं पुतली हूं। मेरी सुनो। शायद तुम सबके लिये यह लाभदायक हो।"

उस पुतली ने मधुर स्वर में कहना शुरू कर दिया।

"राजा भोज, किसी राज्य में एक भाट रहता था। अपना पुश्तैनी , लोगों का गुणगान कर उनसे प्राप्त धन पर अपना गुजारा करता जो भी मिलता, खा-पीकर उसी दिन खत्म कर देता और अगली फिर खाली हाथ होता था। प्रतिदिन का उसका यही हाल था। के इस व्यवहार से उसकी पत्नी अत्यन्त दुःखी रहा करती थी। वह दिन के लिये एक भी पैसा न बचने देता था। सब खर्च करने के बाद करता था, जिसने मुंह दिया है, अगले दिन वह खाने को देगा ही। ! मस्त हो जाता था वह।

भाट की पत्नी बड़ी दुःखी रहा करती थी।

उसकी एक बेटी थी। बेटी जवान हो रही थी। चिंता इस बात की रही थी कि बेटी का ब्याह कैसे होगा? भाट को इसकी फिकर न थ:

समय बीतता गया। भाट का व्यवहार न बदला। बेटी जवान, विवाह क हो गयी। भाट की पत्नी ने रो-रो कर कहना शुरू किया, "बेटी के की चिंता तो करो। जो कमाते हो, सब खा जाते हो, कैसे होगी ?"

"भागवान! फिकर न कर। इसका भी काम हो जायेगा।"

"कुछ तो करो। कब तक जवान लड़की घर में क्वॉरी बैठाये रखोगे?"

बहुत कहने-सुनने पर भाट पर प्रभाव पड़ा। वह बेटी के विवाह के रुपया जुटाने निकल गया। कई राज्यों में गया। दानी सेठ साहूकारों ाधिकारियों से सहायता प्राप्त की, पर जब तीन चार माह बाद वापस , तो राह में सब कुछ खा-पीकर बराबर कर दिया।

खाली हाथ वापस आया।

पत्नी ने पूछा, "कितना लाये ?"

भाट ने सारा हिसाब बतला दिया। किससे क्या-क्या मिला और अंत कहा, "रास्ते मे खा पीकर सब बराबर हो गया। कुछ नहीं बचा।"

भाट की पत्नी ने माथा पीट लिया, हे भगवान, अब क्या होगा ?

"घबरा मत भागवान !"—भाट बोला, "अभी एक महादानी राजा विक्रमादित्य है। उसके पास तो गया ही नहीं। वह एक बार में इतना धन देगा कि विवाह हो जायेगा।"

भाट की पत्नी खामोश रह गयी। भाट राजा विक्रमादित्य के राज्य में आया। उसने राजदरबार में फरियाद की। उसे बुलाया गया।

भाट ने अपना परिचय दिया और अपनी गरीबी का वर्णन कर राजा से सहायता की प्रार्थना की।

राजा ने कहा, "मंत्रीजी, आप अपनी कन्या के विवाह के बराबर का खर्च इस भाट को दे दें।"

भाट प्रसन्न हो गया, पर विनम्रता के साथ बोला, "अन्नदाता एक प्रार्थना है।"

"बोलो।"

"आप यह दान अपने हाथ से देने की कृपा करें।"

"मंत्री से ले लो।"

"नहीं महाराज ! आपकी कृपा चाहिए।"

"ठीक है।"

राजा विक्रमादित्य ने उसे अपने हाथ से दस लाख स्वर्ण मुद्राएं दीं। फिर पूछा, "यह बताओ। तुमने मेरे हाथ से ही लेने की जिद क्यों की ?"

"महाराज···आपने मंत्रीजी से कहा, अपनी बेटी के विवाह के बराबर धन दे दो। मंत्री अपनी हैसियत से देता। इसी कारण आपके हाथ से लेना ठीक लगा। आप अपनी हैसियत से देंगें। वही हुआ। हर आदमी के सोचने, काम करने, व्यवहार का अपना ढंग होता है। भाट होने के कारण मैं इस बात को जानता हूं।"

महाराज विक्रमादित्य उसके इस उत्तर पर अत्यन्त प्रसन्न हो गये।

भाट वापस लौट पड़ा। वह बहुत प्रसन्न था। राजा विक्रमादित्य ने
के पीछे गुप्तचर लगा दिया कि पता करे, वह धन का क्या करता है ?

भाट घर आया। उसने बड़ी धूमधाम से बेटी का विवाह किया। सारा धन उसने खर्च कर दिया। एक भी पैसा उसने नहीं बचाया। ो की विदा हो गयी तो भाट के पास अगले दिन खाने तक को न था। फिर कमाने को निकल गया।

राजा को इसका पता चला। तब प्रसन्न होकर भाट को कई गांव ाम में दे दिये ताकि वह उनसे अपना गुजारा कर सके। इस प्रकार उस ट के दिन सुखपूर्वक बीतने लगे।

देखा राजा भोज, विक्रमादित्य कैसा राजा था और दूसरों से वह स प्रकार गुण प्राप्त किया करता था। क्या ऐसी तुममें इस प्रकार की ग्यता है, तो इस सिंहासन पर बैठने का अधिकार है, अन्यथा नहीं।

जयलक्ष्मी की बात का राजा भोज कोई जवाव न दे सका। फलतः लक्ष्मी आकाश में उड़ गयी। राजा भोज सिंहासन पर न बैठ सका।



कौतुक रेखा

राजा भोज, क्या तुम स्त्री के चरित्र को जानते हो ?
त्रिया-चरित्र जाने बिना तुम सही न्याय कर सकते हो क्या ?
स्त्री के चरित्र को जानने वाला मनुष्य ही सबसे बड़ा ज्ञानी होता है।
सुनो, मैं तुमको राजा विक्रम की एक कथा सुनाती हूं ?
इसे ध्यानपूर्वक सुनकर इस बात का फैसला करना कि क्या तुम इस सिंहासन पर बैठने लायक हो ?

राजा विक्रम अपना वेश बदलकर दिन में भी अपनी राजधानी में घूमा करता था। वह अपना वेश कुछ इस प्रकार से बना लिया करता था कि उसे पहिचान पाना मुश्किल होता था। राजा भोज, इसी प्रकार अपना वेश बदलकर नगर भ्रमण कर रहा था। घूमते-घूमते वह नगर के नदी तट पर आ गया। नदी तटपर लोग स्नान कर रहे थे, कपड़े साफ कर रहे थे। अनेक युवतियां और बच्चे नदी के स्वच्छ जल में तैर रहे थे। सर्वत्र वातावरण उल्लासमय था। अपनी प्रजा को प्रसन्न देखकर राजा को बड़ा सन्तोष मिलता था। वह होंठों मुस्कान लिये लोगों की जलक्रीड़ा देख रहा था।

अचानक उसकी दृष्टि एक युवक पर गयी।

एक युवती उसके साथ तैर रही थी, पर दोनों एक दूसरे को देख-देखकर मुस्कराने भी लगते थे। उनकी आंखों और हावभाव से स्पष्ट था कि दोनों प्रेमालाप कर रहे हैं। दोनों का व्यवहार देखकर राजा बिक्रम को इतना विश्वास तो हो गया कि वह दोनों पति-पत्नी नहीं हैं। युवती बहुत सुन्दर थी, युवक भी आकर्षक था।

दोनों काफी समय तक तैरते रहे और प्रेमालाप करते रहे।

फिर बाहर आये।

साथ-साथ चल पड़े।

राजा विक्रम उनके पीछे चल पड़ा। दोनों वार्तालाप करते चल रहे थे। राजा वार्तालाप सुन न पाया।

कुछ आगे जाकर वह युवती दूसरी राह चली गयी। युवक देखता रह गया। जब वह ओझल हो गयी तो राजा विक्रम ने देखा, वह युवक ठंडी आह भरकर आगे चल पड़ा। राजा विक्रम ने एक सिपाही को हुक्म दिया कि उस युवक को पकड़ कर दरबार में ले आयें। वह वापस आ गया।

कुछ समय बाद वह सिपाही उस युवक को लेकर दरबार में आया। युवक बेतरह डर गया था, पर राजा विक्रम ने उसे ढाढ़स बंधाकर सब कुछ उससे जान लिया कि वह युवती कौन है? क्या है? क्या वार्तालाप हुआ था? सब कुछ जानकर राजा ने उसे अपने ही महल में रात रुकने का आदरपूर्वक प्रबंध कर दिया और अर्धरात्रि के उपरान्त उस युवक के समान

बेश बनाकर चल पड़ा।

उस युवक के निवास पर आया। अमावस्या की रात थी। वह युवती पिछवाड़े के द्वार पर खड़ी प्रतीक्षा कर रही थी। राजा उसके पास गया। धीरे से बोला, "चलो···?"

युवती प्रसन्न हो गयी। उसके हाथ में जेवरों की पोटली थी। कुछ कदम चलकर राजा विक्रम रुक गया। बोला, "तुम मेरे साथ भाग तो रही हो पर तुम्हारे पति का क्या होगा ?"

"छटपटा कर रह जायेगा···और क्या ?"

"नहीं, हमारे लिये खतरा कर सकता है।"

"तब क्या करना।"

"तुम एक काम करो। इस समय वह गहरी नींद से सो रहा है। तुमने उसे बेहोशी की दवा तो दे ही रखी है।"

"हां।"

"इस समय वह तुम्हारा कुछ नहीं कर सकता। तुम सरलता से उसकी गरदन धड़ से अलग कर सकती हो!"—राजा विक्रम ने तलवार दी उसे, "उसका काम तमाम कर डालो। फिर निकल चलते हैं।"

युवती कुछ हिचकिचाने लगी, तो राजा विक्रम ने उसे अपने प्यार की दुहाई दी। वह मान गयी। वापस जाकर उसने अपने पति का सर काट डाला और आ गयी।

"चलो।"

दोनों चल पड़े।

जेवर की पोटली राजा विक्रम के पास थी। वह राजा विक्रम को अपना प्रेमी युवक ही समझ रही थी। कुछ आगे जाकर राजा विक्रम बोला, "तुम यहां रुको। मैं अपना घोड़ा लेकर आता हूं। फिर जल्दी भाग चलेंगे।"

सुन्दरी मान गयी।

राजा विक्रम घोड़ा लाने का बहाना कर अपने राजमहल वापस आ गया। जेवरों की पोटली वह अपने साथ लेता आया था। इत्मीनान से राजा सो गया।

अगले दिन दरबार लगा। कुछ देर बाद एक युवती रोती-पीटती यी। विलाप करने लगी, "महाराज, कल रात मेरे घर में चोर घुस ये। मेरे पति का सिर काट गये। सारे जेवर चुराकर भाग गये। वह ती और कोई नहीं, वही सुन्दरी थी। राजा चुपचाप सब सुनता रहा।

"खैर, चोर का हम पता करेंगे।" अन्त में राजा ने पूछा, "अब तुम ा करोगी?"

"अन्नदाता, मैं अपने पति के साथ सती होऊंगी।"

राजा विक्रम मुस्कराकर बोला, ":ठीक है। तुम्हारा सती होना हम देखेंगे।"

हे राजा भोज। चिता बनायी गयी। वह सुन्दरी सती होने के लिये ता पर बैठ गयी। तब राजा विक्रम उसके पास गया। उसकी पोटली आभूषण दिखलाकर बोला, "हे महासती। यह जेवर तुम्हारे हैं?"

युवती चौंक गयी, "हां, अन्नदाता···पर···पर मिले कहां? क्या त्यारा··हत्यारा चोर पकड़ा गया आपकी जय हो महाराज।"

राजा विक्रम का चेहरा तमतमा गया। बोला, "हत्या तो तूने की है। याचरित्र दिखलाती है। तू प्रेमी के साथ भागी, पति को मारकर, प्रेमी खा कर भाग गया। अब नाटक कर सती बनती है।"

सुन्दरी का चेहरा रंगहीन हो गया। तब राजा ने उसे जीते जी जला या।

अब बोलो राजा भोज! क्या युवती अपनी फरियाद लेकर आती तो न उसकी वास्तविकता का पता कर सकते थे? क्या तुम त्रियाचरित्र को ान सकते थे। त्रियाचरित्र को जानने वाला ही सच्चा राजा और प्रजा लक होता है। क्या तुममें ऐसा गुण है? बोलो!

भला राजा भोज इस प्रश्न का क्या उत्तर दे सकता था।

चुप ही रहा आया।

तब वह पुतली हंसती हुई आकाश में उड़ गयी। सारा दरबार उसका ह दृश्य देख रहा था। तब सब हैरान थे कि पुतलियां एक से एक, ज्ञान भरपूर रोचक कहानियां सुना रही हैं। इससे सभी दरबारियों को मजा रहा था।



विद्यावती

राजा भोज, तपस्या और साधना का वही मूल्य है, जो कर्म का है। कर्म करने वाला गृहस्थ किसी तपस्वी से कम नहीं होता है। क्या तुमने इस बात को मानकर राजकर्म का पालन कर तपस्वियों के बराबर पद प्राप्त किया है ?

अगर ऐसा है, तो बैठो इस सिंहासन पर, वरना आगे न बढ़ना। मेरा नाम विद्यावती है। राजा विक्रमादित्य को कैसे महान तपस्वी माना गया, जब कि उसने जप तप कभी न किया था, मैं तुमको बतलाती हूं। सुनो, और रूप यौवन से दमकती विद्यावती ने कहना शुरू कर दिया।

जैसे ही राजा भोज ने सिंहासन की ओर रुख किया, वैसे ही तपाक् से एक पुतली सामने आ गयी। उसने राजा भोज का रास्ता रोक लिया। बोली, राजा भोज, तुम बेशक इस सिंहासन पर बैठो, पर मेरी आंखों देखी राजा विक्रमादित्य की एक घटना सुन लो।"

विद्यावती ने तब कहना शुरू किया, "एक समय की बात है, राजा भोज, इस सिंहासन पर बैठने वाले राजा विक्रमादित्य ने एक बार नगर भ्रमण के समय एक शव यात्रा देखी। शव यात्रा देखकर उनका मन टूट गया। वह वैराग्य से भर गये। यह संसार उनको असार लगा। माया मोह का बंधन भारी लगा। उन्हें लगा कि न उन्होंने तपस्या की है और न ही भगवत्भजन किया है। राज्य के लोभ में पड़कर अपना जीवन व्यर्थ ही गंवाया है। उनको अपना परलोक बनाना चाहिए। कुछ तपस्या, कुछ भगवत्नाम लेना चाहिए।

यह भावना उनके मन में बलवती होती गयी।

वह एक दिन महामंत्री को राजभार सौंपकर चले गये। अपने मन की बात किसी से न कही। किसी को न बतला, वह चुपचाप एक जंगल में चले गये। वहां पर वह कठोर तपस्या करते हुए भगवत्भजन करने लगे। उनकी तपस्या बहुत लंबे समय की थी। पहले वह एक वक्त खाया करते थे। फिर वह भी छोड़ दिया। केवल फल-फूल खाने लगे। फिर केवल जल का सहारा ले लिया।

इस कठोर तपस्या के कारण उनका शरीर बहुत दुर्बल पड़ गया। साधारण काम करने, उठने-बैठने में भी कष्ट होने लगा।

जहां राजा विक्रम तपस्या कर रहे थे, वहां और भी तपस्वी आ गये। सब नाना प्रकार से अपनी-अपनी तपस्या कर रहे थे। कोई एक पैर पर खड़ा होकर कर रहा था, तो किसी ने एक हाथ उठा रखा था। कोई कांटों पर लेटा था, तो किसी ने अपना शरीर गरदन तक बालू में दबा रखा था। आसपास के वातावरण में सर्वत्र भगवन्नाम की धूम थी। राजा ने कुछ समय बाद जल का भी त्याग कर दिया।

अब वह निराहार तपस्या करने लगा। इस कारण वह और कमजोर पड़ गया।

राजा विक्रम को इसकी चिंता न थी। वह ईश्वर का नाम जपते हुए ही अपने प्राण दे देना चाहता था। वह इस प्रकार मृत्यु के उपरान्त अपना परलोक बना लेना चाहता था। इस कारण उसको न तो अपने शरीर की परवाह न थी, न अपने जीवन की।

राजा विक्रम की दशा इस प्रकार हो गयी थी कि उसको पहिचानना मुश्किल हो रहा था। उनको देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि वही महाप्रतापी राजा विक्रम है। वह एकदम साधारण व्यक्ति के रूप में कृश काय हो गये थे।

राजा के समीप ही तपस्या करने वाले एक तपस्वी ने योग बल से जान लिया कि वह राजा विक्रम है। उसने पूछा, "राजन् ! इतनी कठोर तपस्या क्यों कर रहे हो ?"

"मुक्ति के लिये। कुछ तो परलोक सुधार कर पाऊं।"

तपस्वी बोला, "राजन् ! तपस्या करना राजाओं का कार्य नहीं है।"

"क्यों ?"

"उन्हें अपना राजकाज देखना चाहिए।"

"भगवन् ! यह सब मायाजाल है और मैं इसीसे छुटकारा पाना चाहता हूं।"

तपस्वी मुस्कुराकर चुप रह गया। उसने आगे कुछ न कहा।

राजा भोज तपस्या में लगे रह गये। सर्वथा निराहार रहकर उनका तप जारी थां ! राजा विक्रम का शरीर और दुर्बल पड़ गया था। फिर भी वह अपनी तपस्या को छोड़ न रहे थे। राजा भोज एक दिन उसी प्रकार तपस्या करते-करते बेहोश होकर गिर गये। काफी समय बाद उनकी चेतना वापस लौटी।

राजा विक्रम को इस प्रकार तपस्या करते देख, तपस्वी से न रहा गया। उसने राजा विक्रम के पास आकर कहा, "राजन् ! इस प्रकार की तपस्या आपको शोभा नहीं देती है।"

"आखिर क्यों भगवन् !"

तपस्वी बोला, "राजन् ! कर्म और तपस्या में आप क्या अंतर मानते हैं ?"

"कर्म का स्थान अपना है और तपस्या का अलग ?"

तपस्वी मुस्कुराया, "नहीं राजन् ! दोनों का मूल्य अपने स्थान पर एक है। कर्म के द्वारा भी मनुष्य अपना परलोक बना सकता है।"

राजा विक्रम देखता रह गया।

तपस्वी मुस्कुराया, "राजन् ! मनुष्य अच्छे कर्म करके भी परलोक बना सकता है। कुछ अच्छे कर्म ही कर रहे थे। तपस्या की तुम्हें क्या आवश्यकता।"

फिर उस तपस्वी ने अपने योग बल से राजा विक्रम के सामने यम-लोक का दृश्य उपस्थित कर दिया। यमराज अपने दूतों से पूछ रहे थे, "इसके कर्म कैसे थे ?"

"इसका लेखा चित्रगुप्त के पास होगा।"

"अच्छे कर्मों का लेखा हो तो स्वर्ग के द्वार खोल देना और कर्म अच्छे न हों तो नरक में धकेल देना।"

यह दृश्य देखकर राजा विक्रमादित्य ने तपस्वी के पैर पकड़ लिये और बोला, "महात्मन ! आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब मैं अच्छे कर्म ही करूंगा।"

राजा विक्रम तपस्या करना छोड़कर वापस राजमहल आ गये।

देख राजा भोज ! राजा विक्रम ने किस प्रकार अपने जीवन में स्वयं हर बात को आजमाकर देखा। तपस्या भगवन्नाम ही परलोक बनाता है, ऐसी बात नहीं है। मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा भी परलोक बना सकता है।

क्या तुम्हारे कर्म इस प्रकार के हैं ?

अगर हैं, तो राजा विक्रम के इस सिंहासन पर बैठो वरना, दूर रहो—कहकर यह पुतली भी आकाश की ओर उड़ गयी।

राजा भोज मुंह ताकता रह गया।



जयज्योति

राजा भोज जिस व्यक्ति में विनम्रता होती है, वही महान होता है। विनम्र व्यक्ति ही सबका आदर प्राप्त कर सकता है। अहंकार मनुष्य का सबसे बड़ा दुश्मन है। जब तक तुममें इस प्रकार का गुण न होगा, तुम इस सिंहासन पर नहीं बैठ सकते हो! सुनो, मैं राजा विक्रम की एक कहानी बतलाती हूं। जयज्योति कहने लगी पर राजा भोज का ध्यान उस पर न था। वह कुछ और सोच रहा था।

जयज्योति की बात समाप्त होते ही उसने दुस्साहस कर ही दिया।

सिंहासन पर बैठने का लालच राजा भोज न छोड़ पा रहा था। पुतलियों का तमाशा देखते-देखते और कहानियां सुनते-सुनते वह ऊब गया ा। वह सिंहासन पर बैठना चाहता था। उसके मन में यह इच्छा प्रबल म होती जा रही थी। ब्राह्मणों से शुभ घड़ी पूछकर वह सिंहासन की ोर बढ़ा पर यकायक एक पुतली सामने आ गयी। उसंका बदन संगमरमर ैसा था। ऐसा लगता था। मानो सांचे में ढालकर निकाली गयी है। ुस्कुराकर बोली, "राजा, विनम्रता ही मनुष्य का सबसे बड़ा आभूषण । क्या तुम्हारे पास यह गुण है? अगर है, तो तुम इस सिंहासन पर सन्नतापूर्वक बैठो।

सुनो, मेरा नाम जयज्योति है। मैं तुमको राजा विक्रम की एक कथा ुनाती हूं।

उनकी प्रशंसा करने के लिये दूर-दूर से चारण भाट आया करते थे। ब उनकी प्रशंसा करते थे और राजा इन्द्र के समान कहकर उनकी प्रशंसा रते थे।

एक दिन राजा विक्रम के मन में आया कि आखिर सब उनकी प्रशंसा इन्द्र का वर्णन करते हैं। आखिर इन्द्र कैसा है? कैसा उसका दरबार । उनमें क्या गुण है? यह जानने के लिये उनका मन उत्सुक हो गया।

एक रात अपने शयनकक्ष में उन्होंने अगिया बैताल ओर बैताल को ाद किया।

दोनों हाथ जोड़कर खड़े हो गये।

"आज्ञा महाराज।"

"मैं इन्द्रलोक देखना चाहता हूं।"

"अच्छा"—अगिया बैताल बोला—"कल बैताल आपको एक घोड़ा जायेगा। आप उस पर बैठो। वह आपको जंगल में ले जायेगा। फिर हां से वह वायुवेग से उड़कर आपको आकाश मार्ग से इन्द्र के दरबार में ुंचा देगा।"

राजा विक्रम सहमत हो गया।

अगले दिन बैताल राजा को एक घोड़ा दे गया। राजा ने जीन कसी। स पर बैठ गया। घोड़ा वायुवेग से घने जंगल में आया। हिनहिनाया।

फिर वह आकाश में उड़ गया। उसने दौड़ लगायी। राजा विक्रम सतर्कता के साथ बैठा था।

घोड़ा राजा को इन्द्रपुरी ले आया।

इन्द्रपुरी में राजा घोड़े से उतर गया।

इन्द्रपुरी की शोभा एकटक देखता रह गया। सचमुच निराली छटा थी। देवता, देवी, यश, किन्नर, गंधर्व, अप्सराएं मुग्धभाव से देखता रह गया। सर्वत्र नयनाभिराम दृश्य थे। राजा विक्रम इन्द्र के दरबार में आया।

अद्भुत शोभा थी इन्द्र दरबार की। त्रिभुवन मोहनी अप्सराएं नृत्य कर रही थीं। इन्द्र इन्द्राणी के साथ सिंहासन पर बैठा था।

राजा विक्रम को देखकर खलबली मच गयी। इन्द्रलोक में मनुष्य कैसे आ गया?

सब देवता राजा इन्द्र की ओर देखने लगे।

देखते ही आश्चर्य से भर गये।

राजा इन्द्र स्वयं अपना सिंहासन छोड़कर उस मनुष्य की ओर बढ़ते जा रहे थे। उनके चेहरे पर क्रोध के नहीं, आदर के भाव थे।

देखते-देखते राजा विक्रम के पास इन्द्र स्वयं आ गये। आदरपूर्वक उनका हाथ थामकर गले लगा लिया। बड़ी विनम्रता के साथ बोले, "आओ राजा विक्रम! बड़ा नाम सुना है, तुम्हारा? सर्वत्र तुम्हारी प्रशंसा हो रही है। हम इन्द्रलोक में तुम्हारा हार्दिक स्वागत करते हैं।"

राजा विक्रमादित्य प्रसन्न हो गये।

राजा इन्द्र विक्रम को अपने साथ सिंहासन तक ले आये। सब देवता आश्चर्य से देख रवे थे।

"बैठो राजा विक्रम।"—इन्द्र ने कहा।

राजा विक्रम हिचकिचा गये। वह इन्द्र की ओर देखने लगे। भला वह इन्द्र के सिंहासन पर कैसे बैठ सकते थे। इन्द्र की बराबरी वह न कर सकते थे।

बोले विनम्रतापूर्वक, "भगवन्। मैं आपके सिंहासन पर कैसे बैठ सकता हूं। मैं इस योग्य कहां हूं।"

राजा इन्द्र ने विक्रमादित्य को गले लगा लिया। अपनी बराबरी से ठाया और देवताओं से उनका परिचय कराया।

राजा भोज! अगर विक्रमादित्य राजा इन्द्र के सिंहासन पर बैठ गये होते तो उनका सारा पुण्य क्षीण हो जाता। राजा इन्द्र ने यही चाहा था, र अपनी विनम्रता के कारण वह बच गये। राजा इन्द्र उन पर प्रसन्न हो गये।

खूब स्वागत कर उनको एक राजमुकुट दिया और कहा, "जब तक ह राजमुकुट तुम्हारे पास रहेगा, तब तक तुम पर किसी प्रकार का संकट हीं आ सकता है।"

राजमुकुट धारण कर और इन्द्रलोक की सैर कर राजा विक्रम वापस ा गये।

देखा राजा भोज, क्या तुममें विनम्रता का यह गुण है? अगर है, तो स सिंहासन पर बैठो। मैं तो चली। अपनी बात कहकर पुतली आकाश ी ओर उड़ गयी।

राजा भोज चुपचाप खड़ा रह गया। दरबार में सन्नाटा फैल गया ।

यकायक राजा भोज का चेहरा तमतमा गया। उसके मन में दुस्साहस गया था। पुतलियों का तमाशा देखकर वह उकता गया था। उसने तपूर्वक सिंहासन पर बैठना ही पसंद किया। यह पुतलियां तो इस प्रकार तमाशा करती ही रहेंगी।

हर बार कोई न कोई पुतली अपना नाटक कर उसको सिंहासन पर ने से रोक देती है।

अब वह न मानेगा।

राजा भोज सिंहासन की ओर बढ़ गया। जैसे ही उसने सिंहासन पर रखा, उसका हाथ सिंहासन से चिपक गया। इसके साथ ही उसके ीर में भयानक पीड़ा होने लगी। वह दर्द से चीखने-चिल्लाने लगा।

राजा भोज की यह दशा देखकर दरबार में खलबली मच गयी।

राजा भोज को यह क्या हो गया?

कुछ दरबारियों ने पूरी ताकत से राजा भोज का हाथ छुड़ाना चाहा,

पर वह सफल न हो सके ?

पीड़ा के कारण राजा भोज चीखने लगा था। लग रहा था, उसके प्राण निकल रहे हैं।

तभी एक पुतली बोली, राजा भोज ! इस प्रकार का दुस्साहस करने की कोशिश मत करो। ऐसा करोगे तो जान से धो बैठोगे। जब तक हम पुतलियों में से कोई एक तुमको इस पर बैठने की आज्ञा दे, मत बैठना।"

राजा भोज का बुरा हाल था।

"अगर तुम सिंहासन से चिपक गया अपना हाथ छुड़ाना चाहते हो और पीड़ा से मुक्ति, तो राजा विक्रम का गुणगान करो। तुमको छुटकारा मिल जायेगा।"

राजा भोज ने राजा विक्रमादित्य का गुणगान किया। गुणगान समाप्त होते ही उसका हाथ छूट गया। सारी पीड़ा समाप्त हो गयी।

घबराया, भयभीत राजा भोज अपने शयनागार में आकर लेट गया। वह बड़ा परेशान था।



मनमोहिनी

जा भोज लालच पर काबू न पा सका। उसने फिर कोशिश
। ।

ब एक पुतली सामने आ गयी। बोली, "राजा भोज ! तुम इस
हासन पर बैठ सकते हो, पर क्या तुममें राजा विक्रम के समान
ण है। सुनो, मैं तुमको बताती हूं।"

जा भोज चुपचाप सुनने लगा। मनमोहिनी ने अपनी बात
हना शुरू कर दिया। सब दरबारी भी ध्यानपूर्वक सुनने लगे।

नमोहिनी बोली, "राजा भोज ! मनुष्य का धर्म है कि हर
खी मनुष्य की सहायता करे, जो ऐसा करता है, वही वास्तव
सर्वोत्तम मनुष्य है। वही लोक में प्रशंसा प्राप्त करता है।"

लालच में पड़कर मनुष्य क्या नहीं करता है।

राजा भोज सिंहासन पर बलपूर्वक बैठने का फल भोगने के बाद भी अपने को रोक न सका था। सिंहासन का आकर्षण ही कुछ ऐसा था। उसके मन में आशा थी कि शायद कोई पुतली उसे सिंहासन पर बैठने की अनुमति दे दे।

इस कारण उसने फिर प्रयास किया।

ब्राह्मणों ने शुभ समय बतलाया।

शुभ समय आने पर राजा विक्रम सिंहासन की ओर बढ़ा। तभी एक पुतली ने बाहर आकर रोक दिया उसको।

"राजा भोज। मेरा नाम मनमोहिनी है। तुम इस सिंहासन पर बैठो, पर बोलो क्या तुमने किसी का दुःख देखकर उसकी हमेशा सहायता की है। ऐसा मनुष्य ही दुनिया में यश सम्मान प्राप्त करता है। सुनो, मैं विक्रमादित्य की एक कथा सुनाती हूं।"

उसने कहना शुरू किया। राजा भोज और सारा दरबार ध्यानपूर्वक सुनने लगा।

एक समय की बात है। राजा विक्रम के राज्य के दो तपस्वी पाताल लोक गये। पाताल लोक में राजा बलि ने उनका स्वागत किया और विदाई के समय राजा बलि ने उनको एक लाल दिया।

"तपस्वीगण। यह लाल जिसके पास होगा, उसको जीवन में कभी जल दुर्घटना का सामना न करना पड़ेगा।"

तपस्वीगण वापस आ गये। उनको संसार से मोह न था। अतएव वह दोनों राजा विक्रम के पास आये। वह लाल राजा विक्रम को भेंट कर दिया। राजा विक्रम ने उनका आदर सत्कार कर उनको विदा किया।

राजा विक्रम एक दिन नदी किनारे गये।

उनके राज्य का एक जलयान खड़ा था। राजा ने देखा एक युवती उसका पूजन कर रही थी। बार-बार प्रार्थना कर रही थी। उसके पति की रक्षा करना।

राजा विक्रम पास गया।

"देवी क्या बात है?"—राजा ने पूछा।

युवती नम्रतापूर्वक बोली, "श्रीमान, मेरे पति इस जलयान द्वारा पार के लिये जा रहे हैं। मैं उनकी शुभकामना कर रही हूं।"

राजा विक्रम युवती की पतिभक्ति पर प्रसन्न हो गये।

बोले, "राजा विक्रमादित्य के राज्य में दुर्घटना नहीं होती है। तुम यह त अपने पति को दे देना। कोई भी जल दुर्घटना न होगो।"

राजा ने वह लाल दे दिया। युवती ने अपने पति को दे दिया। वह पार-यात्रा पर चला गया। इस प्रकार यात्रा से राजा विक्रम के राज्य व्यापार और बढ़ गया। राजा भोज, महाराजा विक्रमादित्य के राज्य भी कोई जल दुर्घटना नहीं हुई। क्या तुम्हारे राज्य में ऐसा हुआ है? र है, तो इस सिंहासन पर बैठो, वरना नहीं।

राजा भोज इस बात का उत्तर न दे सका। वह चुप रह गया।

राजा भोज, तुम इस सिंहासन पर तभी बैठ सकते हो, जब विक्रमा- य का एक भी गुण तुम में होगा।

अपनी बात कहकर वह पुतली भी आकाश में उड़ गयी।

राजा भोज चुपचाप खड़ा रह गया। सोचने लगा, क्या सचमुच उसमें ा विक्रमादित्य का एक भी गुण नहीं है।

उसका मन बैठ गया।

बहुत टूटा मन लेकर वह रुक गया। उस दिन भी वह सिंहासन पर न सका।



वैदेही

राजा भोज ! क्या तुमने कभी इस बात को महसूस किया है कि मनुष्य का कर्त्तव्य क्या है ? ईश्वर का सबसे प्यारा भक्त कौन हो सकता है ? अगर तुमको इस सवाल का जवाब मालूम है, तो इस सिंहासन पर बैठो, वरना नहीं।

मनुष्य का यह शरीर पाकर जो सुकर्म करते हैं, वही पुरुष धन्य है।

मेरा नाम वैदेही है। सुनो, मैं तुमको राजा भोज की एक कथा सुनाती हूं। इसे मैंने खुद अपने जीवन में अपनी आंखों से देखा है। और तब वैदेही ने कहना शुरू किया। राजा भोज और तमाम दरबारी मुग्ध होकर वैदेही की कथा सुनने लगे।

पने मन में दृढ़ निश्चय कर राजा भोज फिर राजा विक्रमादित्य के सिंहासन पर बैठने के लिये आगे बढ़ा कि तभी एक पुतली आ गयी।

उसने रास्ता रोक लिया।

राजा भोज रुक गया।

पुतली बोली, "राजा, सुनो विक्रम की एक कथा। अगर ऐसा गुण है, इस पर बैठो।"

राजा भोज सुनने लगा। वैदेही कहने लगी, "एक समय की बात है। जा विक्रम अपने शयनागार में मीठी नींद सो रहा था कि उसने सपना खा, रत्नजटित एक सुन्दर राजमहल है, उसमें शानदार सजावट है और सके द्वार पर एक अत्यन्त तेजस्वी द्वारपाल खड़ा है…

महल में सुन्दर अप्सराओं का गायन-वादन जल रहा है।

उस महल के आसपास अनेक सुन्दर किले हैं।

राजा विक्रम ने स्वयं अपने को राजा के रूप में देखा।

सुबह अचानक नींद टूट गयी।

अपने शयनागार में वह उठकर बैठ गया। वह आश्चर्य करने लगा। स प्रकार का सपना उसने पहले कभी न देखा था। राजा विक्रम विचार रने लगा। उसका मन सपने में देखे गये रत्नजड़ित राजमहल को देखने लिये करने लगा। उसने पंडितों, ज्योतिषियों को बुलाकर सपना बतलाया। फिर पूछा, "ऐसा राजमहल कहां है?"

पंडितों ने गणना की।

ज्योतिषियों ने पत्रा देखे।

सबने मिलकर बतलाया, "दक्षिण दिशा में इस प्रकार का राजमहल। वहां पर केवल वही जा सकता है, जो ईश्वर भक्त हो। हर समय श्वर का नाम लेता हो।"

राजा विक्रम असंमजस में पड़ गया। वह हर समय प्रजा की भलाई ौर राजकाज में लगा रहता है। उसको ईश्वर का नाम लेगे का अवसर कहां मिलता है!

राजा को असमंजस में पड़ा देखकर महामंत्री उनकी वात समझ या। बोला, "महाराज! मैं आपकी चिंता समझ रहा हूं। आप कृपया

राजपुरोहित को अपने साथ ले जायें। वह हर समय भगवान का नाम लेते रहते हैं। उनको साथ रखने पर आप वहां प्रवेश पा सकते हैं।

राजा विक्रम सहमत हो गया।

राजपुरोहित को साथ लेकर वह दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ा। बराबर यात्रा करता जा रहा था। तब तक राजमहल न दीख पड़े, तब तक उसको अपनी यात्रा जारी रखना था। कई सप्ताह की यात्रा के बाद राजा ने एक बस्ती में डेरा डाला। वह राजा के रूप में नहीं, एक साधारण यात्री के रूप में था। एक घर में ठहर गया। रात को पड़ोस के मकान में रोने की आवाज आयी।

वह चौंककर उठ बैठा। किसी स्त्री की आवाज थी।

देखा। एक बुढ़िया रो रही थी।

"क्या बात है, मां ? क्यों रो रही हो ?"

"मेरा जवान बेटा अभी तक जंगल से वापस नहीं आया। शायद उसको जंगली जानवर खा गये हैं।"

"जंगल क्यों गया था ?"

"बेटा, लकड़ियां काटकर उनको बेचकर हमारा गुजारा चलता है। वही मेरा एक सहारा है। जाने क्या बात हो गयी ? सबसे फरियाद कर चुकी, कोई जाने के लिये तैयार नहीं है। मैं रो रही हूं।"

"फिकर न करो मां। मैं पता करता हूं।"

राजा विक्रम जंगल में गया। रात के अंधकार में उसने बुढ़िया के लड़के की तलाश शुरू कर दी। बुढ़िया का लड़का एक पेड़ पर बैठा था। नीचे एक शेर न घात लगा रखी थी। राजा विक्रम ने शेर को मारकर बुढ़िया के लड़के को पेड़ से उतारा। अपने साथ लाकर बुढ़िया को सौंप दिया।

बुढ़िया ने राजा विक्रम को खूब आशीर्वाद दिया।

राजा विक्रम ने अपनी यात्रा जारी रखी। अन्ततः वह राजमहल, आसपास के किले, द्वारपाल सब दीख पड़ा। राजा प्रसन्न होकर बोला, "देखो, यह रहा सब।"

राजा घोड़े पर सवार राजमहल के सामने आया।

द्वारपाल ने रोक लिया।

"कौन हो तुम ?"

"राजा विक्रमादित्य। मैं इस महल में जाना चाहता हूं।"

"ठहरो। इस महल में उसे ही जाना मिलेगा, जो ईश्वर भक्त होगा। देखता हूं, सूची में तुम्हारा नाम है या नहीं ?"

वह देवदूतों की दी गयी सूची देखने लगा। खुश होकर बोला, "अरे। राजा विक्रमादित्य। आपका नाम तो सबसे ऊपर है। आइए। आइए।"

राजा खुश होकर बोला, "राजपुरोहित मेरे साथ हैं। यह हर समय ईश्वर का भजन करते रहते हैं। यह भी चलेंगे।

"देखता हूं।"—द्वारपाल ने कहा, उसने पूरी सूची देख डाली।

राजपुरोहित का नाम न था। बोला, "राजन् ! इनका नाम सूची में नहीं है। वैसे आपकी इच्छा है, तो जाने दूंगा।"

राजा विक्रम राजपुरोहित के साथ महल में चला गया। देखा राजा भोज, भगवान का बराबर जाप करने मात्र से ही कोई सबसे बड़ा ईश्वर भक्त नहीं होता है। कर्म की पूजा, कर्त्तव्य का पालन ही सबसे बड़ी ईश्वर की पूजा है। देखो, राजा विक्रम का नाम किस प्रकार सूची में सबसे ऊपर था।

क्या तुम इस प्रकार के हो ? अगर हो तो बैठो, वरना नहीं।

वैदेही अपनी बात कहकर आकाश में उड़ गयी। सब हैरानी से देखते रह गये। राजा भोज का मन फिर उदास पड़ गया।



रूपवती

राजा भोज ! अभी तक तुम एक भी पुतली की बात का जवाब नहीं दे सके हो···फिर भी तुम्हारी लगन से मैं खुश हूं। तुमसे सीधा सवाल करती हूं कि मनुष्य को अपना कर्त्तव्य और कर्म किसके द्वारा निर्धारित करना चाहिए ? कौन-सा सत्य उसका समर्थन करता है ?

पुतली की बात का जवाब राजा न दे सका। तब वह बोली, "मेरा नाम रूपवती है। मैं तुमको इसी सवाल के जवाब में एक कथा राजा विक्रम की सुनाती हूं।"

और रूपवती ने कहानी सुनाना शुरू कर दिया।

राजा विक्रमादित्य एक दिन शिकार खेलने के लिये जंगल में गया। वह शिकार खेलता-खेलता दूर तक चला गया। बड़ा घना जंगल था।

यकायक एक हिरन राजा विक्रम के सामने आकर खड़ा हो गया। राजा विक्रम ने उसे देखा तो हिरण बोला, राजा एक शेर मेरा पीछा कर रहा है। मेरे पैर में चोट लगी है। मैं भाग नहीं सकता। वह मुझे पकड़ लेगा। क्या तुम शेर को मार दोगे ? मेरी जान बचाओ।"

राजा विक्रम ने कहा, "तुम्हारी रक्षा में नहीं कर सकता !"

तब तक शेर आ गया।

वह हिरन को मारकर पकड़कर खाने के लिये ले गया।

राजा विक्रम अपने दल के लोगों के पास आ गया। अब बोलो राजा भोज, क्या राजा का यह कार्य उचित था ? राजा विक्रमादित्य को ऐसा करना था या नहीं ?

राजा भोज सोचने लगा।

"एक इसी सवाल का जवाब तुम ठीक-ठीक दे दो तो तुमको सिंहासन पर मैं बैठा दूंगी। अब केवल दो ही पुतलियां बाकी रह गयी हैं। वह कुछ न कहेगी।"

राजा भोज पुतली का सवाल सुनकर सोच विचार करने लगा। शरण में आये हिरण की रक्षा न कर क्या राजा विक्रमादित्य ने गलत काम किया था ? कर्त्तव्य उसका क्या था ? कर्म क्या था ? इसका निर्णय उसने इस आधार पर किया या नहीं ?

"बोलो, राजा भोज।"

राजा भोज पुतली के प्रश्न का कोई उतर न दे सका। तब पुतली ने कहा, "भला तुम इस सिंहासन पर किस प्रकार बैठ सकते हो !"

दरबारी भी पुतली का मुंह ताकने लगे। तब पुतली हंसकर बोली, "राजा भोज, कर्म और कर्त्तव्य का पालन धर्म के अनुसार होता है। धर्म में जैसा बतलाया गया है, उस प्रकार मनुष्य को अपना कर्म तथा कर्त्तव्य निर्धारित करना चाहिए। यही बात ध्यान में रखकर राजा विक्रमादित्य ने उस हिरण की रक्षा न की थी।"

"वह कैसे ?"—पूछा राजा भोज ने।

"हिरन शेर का भोजन था। शेर से हिरन को बचाना अर्थात् शेर को भूखा रखना था। भूखे आदमी के सामने से खाने की थाली खींचना क्या धर्म है? नहीं, इसी कारण राजा भोज, राजा विक्रम ने हिरण की रक्षा नहीं की। समझे। धर्म ही कर्म, कर्त्तव्य का निर्देशन करता है।"

अपनी बात कहकर रूपवती आकाश में उड़ गयी।

राजा भोज उदास हो गया। उसने महामंत्री को बुलाकर कहा —"इस सिंहासन को उठाकर नदी में फेंक दो।"

महामंत्री बोला, "राजन्। तीस पुतलियां तो निकल गयीं। अब केवल दो रह गयीं है। दो और निकल जायें, तो सिंहासन पर आप बैठ सकते हैं। फिर क्या झमेला रहेगा? आप इन्तजार करें। इनमें और पुतलियां जड़वा लेंगे। हमारे राज्य में एक से एक कारीगर हैं।"

महामंत्री की बात पर राजा का मन संतुष्ट हो गया। उसने मान लिया। अब केवल दो ही रह गयी हैं। उनके निकलने के बाद वह सिंहासन पर बैठने लायक हो ही जायेगा। राजा भोज, इसी आशा पर रुक गया।

वह फिर सिंहासन पर बैठने का इंतजार करने लगा।

उसने निश्चय किया। अगले दिन वह फिर बैठने का प्रयास करेगा।



मानवती

राजा भोज ! परायी स्त्री की जो कभी कुदृष्टि से नहीं देखता, उनके साथ मानवता का व्यवहार करता है, वही चरित्रवान कहा गया है। राजा का राजकर्मचारियों का चरित्रवान होना आवश्यक है।

जिस राज्य में ऐसे लोग पद पर नहीं होते, वह राष्ट्र भ्रष्ट हो जाता है।

क्या तुम्हारे राज्य कर्मचारियों में ऐसा गुण है ? अगर है, तो बैठो, वरना नहीं बैठ पाओगे। सुनो मेरा नाम मानवती है। मैं तुमको राजा विक्रम की आंखों देखी एक कथा सुनाती हूं। इसको सुन लो। फिर निर्णय करना कि यह सिंहासन तुम्हारे योग्य है या नहीं ?

अभी भी राजा भोज को विश्वास था कि वह सिंहासन पर बैठने में सफल हो जायेगा। इस कारण उसने आशा न छोड़ी थी। फिर उसने मुहूर्त निकलवाया और सिंहासन पर बैठने के लिये आगे बढ़ा, पर तभी एक पुतली सामने आ गयी। वह परीदेश की किसी राजकुमारी से कम खूबसूरत न लग रही थी। राजा भोज सहित सभी दरबारी मुग्ध भाव से देखने लगे।

वह मुस्कराकर बोली, "राजा भोज, तुम्हारी हिम्मत की मैं प्रशंसा करती हूं। बड़ा है, तुममें। मैं तो कामना करती हूं कि तुम इस सिंहासन पर बैठ सको। क्या करूं, मैं तो बैठा देती, पर यह सिंहासन ही कुछ इस प्रकार का बना है कि जब तक राजा विक्रमादित्य का एक भी गुण तुममें न होगा, तब तक तुम सिंहासन पर बैठ सकोगे ? सुनो, मैं तुमको राजा विक्रमादित्य की एक कथा सुनाती हूं। अगर तुम्हारे राज्य कर्मचारी और स्वयं तुम इस प्रकार के हो, तो इस सिंहासन पर बैठ सकते हो।"

और तब मानवती ने कहता शुरू किया।

एक समय की बात है। राजा विक्रमादित्य नदी किनारे आये। उन्होंने देखा कि तेज धाराओं में एक युवक और एक युवती बहते चले आ रहे हैं। शायद अपने प्राण बचाने, नदी किनारे लगने के लिये बेतरह हाथ पैर मार रहे थे, पर नदी की तेज लहरों के सामने उनकी एक न चल पा रही थी।

राजा विक्रम न बिना एक क्षण गंवाए, कूद पड़े और दोनों को खींचकर किनारे लगा दिया।

युवक युवती के प्राण बच गये।

राजा विक्रम ने देखा, युवती बहुत सुन्दर थी। उसके सौन्दर्य के आगे राजा विक्रम की रानियां भी फीकी थीं। शिख से नख तक उसका एक-एक अंग मानो सांचे में ढला हुआ हो। ऐसा लग रहा था कि भगवान ने उसे बड़ी लगन के साथ बनाकर अपनी सम्पूर्ण कला का प्रदर्शन किया है।

युवक ने राजा विक्रम को पहिचाने बिना बतलाया, "हम अपने परिवार के साथ नाव द्वारा यात्रा कर रहे थे। यकायक नाव भंवर में पड़ गयी और हम सब धाराओं में फंस गये। आपने हमारी बड़ी सहायता की है। आपके कारण हम अपना जीवन फिर से प्राप्त कर सके हैं। आपके हम बहुत आभारी हैं।"

युवती भी श्रद्धा और सम्मान के साथ राजा विक्रमादित्य को देख रही थी।

"तुम्हारा परिचय क्या है ?"

"मेरा नाम देवकांत है और यह मेरी बहिन देवकांता है। हम सारंग देश के निवासी हैं।"

"अच्छा। तुम्हें सकुशल अपने घर भेज दिया जायेगा। यहां रुकने का तुम्हारा समुचि प्रबन्ध भी होगा।"

और राजा विक्रम ने एक सिपाही को बुलाकर आदेश दिया। वह उन दोनों को अपने साथ ले गया।

अब देवकांत को पता चला कि उसको और उसको बहिन देवकांता को बचाने के लिये अपने प्राण भी संकट में डालने वाला कोई और नहीं, राजा विक्रमादित्य था, तो वह आश्चर्य से भर गया। फिर गद्‌गद्‌ हो गया। राजा विक्रम के प्रति वह श्रद्धा से भर गया।

राजमहल में वह सारी सुविधाओं के साथ ठहरा दिया गया।

देवकांत अपनी बहिन के विवाह के लिये बहुत चिंतित था। उसका रूप यौवन कम न था। कई राजकुमार भी उससे विवाह करने के लिये उत्सुक थे।

यकायक देवकांत के मन में आया, राजा विक्रमादित्य को क्यों न सौंप दी जाये ? यह कार्य सर्वोत्तम होगा।

अपने इसी विचार के कारण उसने राजा विक्रमादित्य के दर्शन करने की अनुमति प्राप्त कर ली।

देवकांता को अपने साथ लेकर वह राजमहल में गया। देवकांता सम्पूर्ण श्रृंगार के साथ थी। उसका रूप रंग देवलोक की अप्सरा के समान था। ऐसा लग रहा था। मानो धरती का सारा सौन्दर्य उसमें आ गया है।

"राजन्। आपकी जय हो—देवकांत बोला।

"क्या है, देवकांत !"—राजा बोले, "तुम्हारे जाने का सारा प्रबन्ध कर दिया गया है।"

"आपकी बड़ी कृपा है, अन्नदाता।"—देवकांत ने कहा, "आपके कृपा भार से हम आजीवन ऋण नहीं दे सकते हैं। मेरा एक तुच्छ उपहार आप

ग्रहण करें।"

राजा विक्रम मुस्कुराये।

"मेरी बहिन देवकांता आपकी अर्पित है।"—देवकांत ने नम्रतापूर्वक कहा।

"तुम्हारा उपहार हमें स्वीकार है।"—राजा ने कहा।

"अन्नदाता, आपकी जय हो।"—देवकांत गद्‌गद् हो गया।

"देवकांता हमारे राजमहल में रहेगी। मेरी बहिन के रूप में वह आजीवन निवास कर सकती है।"—राजा विक्रम बोले।

देवकांत आकाश से गिरा। आंखें फाड़कर देखता रह गया। राजा विक्रमादित्य उसे पत्नी रूप में नहीं, वरन् बहिन के रूप में अपना रहा है। देवकांता के रूप यौवन को देखकर भी उसके मन में कुछ न हुआ।

वह राजा के चरणों पर लौट गया वह।

राजा विक्रम ने कहा, "चरित्र हमेशा बनाकर रखना चाहिए। बिना इसके राजकाज कैसे चलेगा। जब मैं ठीक रहूंगा, तो मेरे कर्मचारी और प्रजा भी ठीक रहेगी।"

देवकांत राजा की जय-जयकार करने लगा।

देखा राजा भोज, हमारा राजा विक्रमादित्य कितना चरित्रवान था और कैसा निर्लोभी। क्या यह गुण तुममें है? क्या तुम्हारे राजकर्मचारी इस प्रकार हैं? अगर ऐसा है, तो राजन्! इस सिंहासन पर बैठो।"

राजा भोज जवाब न दे सका। उसका सिर झुका रह गया। तभी मानवती अपने कमल से सुन्दर हाथ फैला कर आकाश में उड़ गयी।



कौशल्या

जा भोज ने फिर सिंहासन पर बैठना चाहा, पर यकायक एक तली ने आकर रोक दिया, "ठहरो राजा, रुको। एक बात का वाब दो। क्या राजा विक्रमादित्य का कोई गुण तुममें है। मैं सके गुणों का वर्णन करती हूं। अगर कुछ है, तो कह और हासन पर बैठ। मेरा नाम कौशल्या है, मेरी कहानी सुन।"
र राजा भोज दरबार सहित सुनने लगा। पुतली राजा विक्रमा-त्य के गुणों का बखान करने लगी।

कौशल्या ने कहना आरम्भ किया —

'एक दिन वीर विक्रमादित्य अपने शयन कक्ष में सुख की नींद सो रहा था। आधी रात बीतने पर गहरी नींद में उसने एक अद्‌भुत स्वप्न देखा। स्वप्न के अनुसार उसके राज्य के ही एक वन में एक स्वर्ण और रत्नों सें जड़ित सुन्दर मनमोहक महल है। स्वर्ग की अप्सरायें सी सुन्दर गणिकाएं तरह-तरह के वाद्य यंत्र सम्हाले बैठी मीठे स्वरों में गा रही हैं।

उन सुन्दर गणिकाओं के बीच एक योगी बैठा गायन और संगीत का आनन्द उठा रहा है। इस स्वप्न को देखते ही राजा की आंख खुल गई। किसी तरह सो-जागकर शेष रात व्यतीत की। सुबह होते ही राज-ज्योतिषी को बुलाकर स्वप्न के बारे में बताया।

राज-ज्योतिषी की बातें सुनकर राजा विक्रमादित्य को उस महल तक पहुंचने की और भी इच्छा हो गई। उसने दोनों अगिया बैताल और बैताल को बुलाकर उन्हें स्वप्न के बारे में जानकारी देकर कहा—'मुझे उस स्थान पर पहुंचाओ जहां वह अद्‌भुत महल स्थित है···।'

दोनों ने राजा विक्रमादित्य को अपने हाथों पर बिठाया। वह उड़े। उन्हें उस घने वन में पहुंचते देर न लगी, जहां राजा ने स्वप्न में महल देखा था। महल आने से कुछ दूर पहले ही राजा को उतार कर कहा —

'बस, इससे आगे हमारा जाना उचित नहीं। योगी ने महल के चारों ओर तंत्र का घेरा बना रखा है। उस घेरे को पार कर वही आगे बढ़ सकता है, जिसने योगी से भी अधिक पुण्य अर्जित कर रखा हो।'

देवों की बात सुन, राजा इस बात को परखने के लिये कि उसका पुण्य कितना हे आगे बढ़ता रहा।

स्वर्ण का चमकता-दमकता, हीरों-रत्नों से जड़ा महल नजर आने लगा था।

राजा बढ़ता रहा। महल क द्वार पर कदम रखा।

उसे अब न लग रहा था। हां, शंका थी, शायद तंत्र घेरे के कारण रुकता पर यह कही कोई बाधा न आयी। राजा विक्रमादित्य बढ़ता गया।

यकायक आग का एक बड़ा सा गोला आया। राजा विक्रम के पास आकर रुक गया। वह थोड़ा-सा घबरा गया, पर यकायक वापस लौट गया।

क आवाज आयी, "इसे जाने दे। इसका पुण्य योगी से ज्यादा है। हमें सको नहीं रोकना है।'

और तब रास्ता साफ हो गया।

किसी मनुष्य के आगमन की आहट पाकर गायन और संगीत और त्य एक झटके से रुक गया। सुन्दरियां घबड़ाकर इधर-उधर भागीं।

योगी एकदम कुपित होकर उठ खड़ा हो गया। उसके तेवर बदल ये। उसने बड़ी कठोर आवाज में कहा—

"कौन है तू और तुझे किसने यहां तक आने दिया? जल्दी बोल, रना मैं अपने श्राप से तुझे भस्म कर दूंगा।'

'मैं राजा विक्रमादित्य हूं। मुझे किसी ने रोका नहीं, इसलिये यहां तक । गया। आपके दर्शन की उत्सुकता थी।'

'राजा विक्रमादित्य को अपने सामने पाकर मैं भी धन्य हुआ।' उसने हा।

योगी का सारा क्रोध और रोष जाता रहा। नम्र भाव में आने बढ़-र राजा का अतिथि सत्कार किया। पूछा—

'बोलो राजन् क्या चाहते हो। जो मांगो, वह तुम्हें मिलेगा।'

'मैं यह महल और यहां की समस्त सुख-सुविधाएं मांगता हूं—मुझे दो...।' राजा विक्रमादित्य ने कहा—

'अच्छा...।' योगी ने कहा और फिर सब कुछ सौंप कर उसी समय । में निकल गया।

वह योगी वन-वन भटकता रहा। काफी समय बाद अपने गुरु से जा ला। योगी को भटकते देख गुरु ने कारण पूछा। योगी के बताने पर गुरु मुस्कराकर कहा—

'तू भी किस की बातों में आ गया! वह तो स्वयं इस पृथ्वी का सबसे । दानी इन्सान है। उसे तेरे महल से क्या काम! जाकर देख, वह अपने जमहल में बैठा राज-भार सम्हाल रहा होगा। तू वापस लौटकर, ब्राह्मण रूप बनाकर जा। राजा से उसके राज्य के किसी हिस्से में कुटिया ाने लायक स्थान की जगह मांग! राजा जब तेरे पसन्द की जगह पूछे उसी महल को मांग लेना।'

गुरु का परामर्श मान वह योगी विक्रमादित्य के राज्य में आया। जानकर प्रसन्नता हुई कि राजा, राजमहल में बैठा राज भार सम्भालता है। ब्राह्मण वेश में योगी आया। राजा के पूछने पर योगी ने अपने महल को मांगा !

राजा ने मुस्कराकर कहा—

"मैंने तेरी परीक्षा ली थी, तू मेरी परीक्षा ले रहा है योगी राज ! अरे मैं तो उसी दिन उस महल को छोड़ आया था। जाकर अपना स्थान सम्भालो।'

अपना महल पाकर योगी खुशी-खुशी लौट गया।

सुन लो राजा भोज, वीर विक्रमादित्य के कर्म और त्याग की कथा। इतना कीमती महल पाया और क्षण भर में त्याग दिया। क्या ऐसा त्यागी राजा कोई दूसरा हो सकता है ?

चोरों के साथ

और सुनो—

'एक रात राजा विक्रमादित्य वेश बदलकर अपने राज्य के लोगों का कुशल क्षेम पूछने निकला। एक स्थान पर उसे चार चोर नजर आये।

एक चोर कह रहा था—'मैं ऐसा महूरत देखना जानता हूं कि जिसमें यात्रा करने में कभी खाली न जाये।'

दूसरा बोला—'मैं जानवरों की बोलियां समझता हूं।'

तीसरा बोला—'मैं जिस मकान में जाऊं, मुझको कोई नहीं देख पाये।'

चौथे ने कहा—'मैं ऐसी विद्या जानता हूं कि मुझे कोई बहुतेरा मारे पर मैं न मरूं—।'

उनकी बातें सुन वेश बदले हुए राजा भी उनके बीच उत्सुकता से भरा शामिल हुआ।

'तुम कौन हो और क्या जानते हो?'—अपने बीच पांचवे साथी को देखकर चोरों ने पूछा।

'मैं भी तुम्हारा भाई बन्धु हूं। गड़ा धन जहां हो मैं वहां का हाल जानता हूं।'

'ठीक! तुम काम के आदमी हो। हमें ले चलो उस जगह, जहां गड़ा धन हो।' चोरों ने कहा।

राजा उन चोरों को साथ ले राजमहल के एक हिस्से में ले आया, जहां समय—असमय के लिये छोटा खजाना छुपा रक्खा था। चोरों को धन का स्थान बताया। चोरों ने जगह खोदी। धन मिला। प्रसन्नता के साथ धन लेकर चल पड़े।

रास्ते में एक धोबी का घर पड़ता था, चोरों ने कहा—"चलो यहां

हाथ मारें।

धोबी के घर में घुसने को तैयार हुये।

राजा ने मन ही मन सोचा—वह धन अपना था, जो चोरों को सौंपा—अन्य के धन की चोरी के लिये वह उनका साथ देकर पाप का भागीदार बनेगा। यह सोचकर वह उनके बीच से सरक महल को आ गया।

चोरी करते थे कि मगर कोतवाल सिपाहियों के साथ पहरा देता हुआ उधर से गुजरा। चोर-चोरी करके निकल न पाये थे कि पकड़े गये।

सुबह चारों चोर राजदरबार में पेश किये गये। उन्होंने राजा को देखा तो अपने रात पांचवे साथी के रूप में उसे पहचानकर चौंक-चौंक कर देखने लगे।

राजा के पूछने पर एक चोर ने हाथ जोड़कर कहा—'जान बख्शी जाये तो हम बताएं राजन! रात आपकी शक्ल का ही एक चोर हमारे बीच पांचवे साथी के रूप में था।

राजा हंसकर बोला—

'तुम्हारी सजा है कि अपने पांचवे साथी को भी तलाश कर लाओ और जब तक वह तुम्हें न मिले लौटकर मत आना।'

राजा की बात सुन चारों चोरों की जान सस्ते में छूटी। वे उल्टे—पैरों भागे। राजकोष का धन बरामद हो गया था। उसके बाद चारों लौटकर कभी न आये। पांचवे चोर को वे तलाश न कर सके थे। इस प्रकार हमारा राजा विनोदी भी था। यदि तुमने कभी ऐसा विनोद किया हो तो इस सिंहासन पर बैठो राजा भोज।'

विक्रमादित्य की मृत्यु

कौशल्या कुछ रुककर बोली—'राजा विक्रमादित्य को चूंकि अपनी त्यु का समय ज्ञात हो चुका था अतः उसने खूब दान पुण्य कर राज पाट मोह छोड़ पूजा पाठ में मन लगाना आरम्भ कर दिया था। देवता तक जा से दान लेने आते थे।

"ब्राह्मण, भिक्षु, योगी, देवता सभी आशीष देकर राजा से विदा हुये। राजा पूजा-पाठ कर महल के झरोखे पर बैठा सूर्योदय देख रहा था अचानक सोने का हिरण बाग में नजर आया।

बाग का रखवाला हिरण को पकड़ने दौड़ा था कि राजा ने बाग के मने आकर रखवाले को रोका।

'तू अद्‌भुत हिरण कौन है, कहां से आया है?'

'मैं वैदेही राज्य का राजा हूं। एक योगी के श्राप से मैं सोने का हिरण ा। पहले जन्म में मैं ब्राह्मण था, एक भूल हुई थी। पुण्यों के फलस्वरूप जा बना, पर पिछले जन्म के एक पाप के कारण एक योगी का श्राप ा। हिरन बन जाने के बाद मैंने योगी के पूछा—'हिरण तो बन गया, मेरी मुक्ति कैसे होगी।'

योगी ने कहा था—राजा विक्रमादित्य के दर्शन करना। दर्शन पाते तेरी मुक्ति होगी। मैं इसी उद्देश्य से इधर आया हूं।'

हिरण की बात सुन, विक्रमादित्य बोला—मैं ही राजा विक्रमादित्य ।'

'धन्य भाग्य।' हिरण ने कहा—दर्शन पाकर मुक्ति को प्राप्त हुआ।' कर हिरण गिरा और देखते ही देखते प्राण त्याग दिये।

'इस प्रकार हमारा राजा, इन्सानों का मुक्ति दाता भी था। यदि तू योग्य हो तो इस सिंहासन पर बैठ।'

फिर हंसकर वह बत्तीसवीं पुतली बोली—

'सुन राजा भोज ! तेरी हस्ती क्या थी, जो इस सिंहासन पर बैठे। स्वयं विक्रमादित्य का ज्येष्ठ पुत्र भी इस सिंहासन पर न बैठ सका—'अब मैं तुमसे वीर विक्रमादित्य के अन्तिम कथा कहती हूं—।' और उसने कहना आरम्भ किया—

'राजा विक्रमादित्य का मृत्यु का समय जब पूरा हुआ तो उसने शरीर त्याग दिया। अपने दोनों वीरों को साथ लिया, इन्द्र द्वारा भेंट में दिये गये विमान पर सवार होकर इन्द्र लोक को चला गया। इस प्रकार अपने अच्छे कर्मों के फल में उसने अच्छी मृत्यु पाई।

दीवान ने राजा के शरीर का अन्तिम संस्कार करना अपना कर्त्तव्य समझ, मन को सम्भाल अन्तिम सकार किया। फिर राजा के ज्येष्ठ पुत्र जयपाल को विधिवत् सिंहानारूढ़ किया। सिंहासन पर आसीन होने वाली ही रात को जयपाल ने स्वप्न में पिता को देखा।

विक्रमादित्य उससे कह रहा था—

'जो तू मुझ सा वीर, दानी, और उपकारी हो तो देवताओं के इस सिंहासन पर बैठ···।'

जयपाल फौरन उठकर बैठ गया। रात किसी तरह कटी। सुबह दीवान से स्वप्न की बात कही। दीवान ने परामर्श दिया—'सिंहासन पर तुम्हें सममुच न बैठना चाहिये। अब मत बैठना। रात में फर्श पर बिस्तर लगाने से पूर्व पिता के स्मरण कर कहना कि अब आगे क्या आज्ञा है, सिंहासन का किया जाये ?

जयपाल ने वैसा ही किया, जैसा दीवान का परामर्श था। रात में विक्रमादित्य पुत्र के स्वप्न में आये। आकर कहा—सिंहासन को धरती को सौंप दो, इसी में तुम्हारा कल्याण है।' फिर बताया—'चूकि तुभ मुझ जैसे कर्म नहीं कर पाओगे। इसी कारण धारानगरी उज्जैन नगरी का राज्य न सम्हाल सकोगे। अम्वावती को जाकर अपना राज्य बनाओ।'

विक्रमादित्य के परामर्श के अनुसार ही जयपाल ने सिंहासन को पृथ्वी को भेंट दिया। धारा नगरी और उज्जैन नगरी छोड़ अम्वावती नगरी जाकर राज्य बनाया। अम्बावती खूब फली-फूली।

समय गुजरने के साथ-साथ धारा नगरी और उज्जैन नगरी उजड़
।

राजा भोज, जब वीर विक्रमादित्य का अपना पुत्र जयपाल जब
सन पर न आसीन हो सका, तो तुम भला क्या बैठ सकते थे।

वैसे तुम यशस्वी राजा हो। दान का पुण्य तुमने भी अर्जित किया
भी भाग्य से तुम्हें इस सिंहासन के दर्शन हुये तुम्हारा सौभाग्य था कि
बत्तीस पुतलियों ने तुम्हें वीर विक्रमादित्य की कथाएं सुनायीं। अब
परामर्श सुनो राजा। इस सिंहासन को जहां से तूने निकलवाया है
भूमिगत करा दो।

अपनी बात पूरी कर वह पुतली भी आसमान में उड़ गयी।

सब देखते रह गये।

पूरी बत्तीस पुतलियां सिंहासन से निकल गयी थीं। अब एक भी
ी न रह गयी थी। सिंहासन कुछ फीका-सा हो गया था पर चमक
क कायम थी।

राजा भोज उस दिन भी मन मसोसकर रह गया।



इति-सिंहासन

सिंहासन पुतलियों से एकदम खाली देखकर राजा भोज को विश्वास हो गया कि अब वह बैठ सकता है। सब पुतलियां निकल गयी। झंझट खत्म। अब वह इस पर बैठेगा और नयी पुतलियां लगवा देगा। इसी विश्वास के साथ राजा भोज जब सिंहासन की ओर बढ़ा तो एक और चमत्कार हो गया।

अंततः राजा भोज को समझौता करना पड़ा। इस प्रकार सिंहासन की इति हो गयी।

खाली सिंहासन

अंतिम पुतली भी सिंहासन से निकल गयी तो राजाभोज ने राहत की सांस ली। सारा झमेला खत्म। जब-जब उसने सिंहासन पर बैठने की कोशिश की, तब तब किसी न किसी पुतली ने उसका रास्ता रोक लिया और बाधा खड़ी कर दी। परेशान करती रहीं।

अब सब की सब उड़ गयीं।

कोई परेशान करने वाली न रही।

अब सिंहासन में बाधा नहीं है। पुतलियों से खाली सिंहासन पर वह सरलता से बैठ सकता है। निकल गयी पुतलियों के स्थान पर नयी पुतलियों लगवा दी जायेंगी और सिंहासन की शोभा बनी रहेगी।

उसने महामंत्री से विचार-विमर्श किया।

"आपका क्या विचार है ?"

"आप ठीक कहते हैं, राजन् !"—महामंत्री बोला, "पुतलियां गयीं। अब कौन बाधा होगी। बैठिये इस पर।"

राजा भोज ने पंडितों ब्राह्मणों से इस पर उनका मत लिया। वह भी सहमत हो गये। फिर सिंहासन पर बैठने का मुहूर्त निकाला गया।

ठीक समय पर सज-धजकर राजा भोज सिंहासन पर बैठने के इरादे से आये। पंडितों ने सिंहासन की पूजा की। पुष्प वर्षा की। मंत्रोच्चारण होने लगा और तब राजा भोज ने सिंहासन पर बैठने के लिये कदम उठाये। सिंहासन के पास गया। एकदम पास आ गया। किसी प्रकार की कोई हलचल न हुई। इससे पहले तो कोई न कोई पुतली तुरन्त हंगामा करने लगती थी, पर कुछ भी हरकत न होने के कारण विश्वास हो गया कि अब आराम से बैठ सकता है।

पुष्प वर्षा के बीच राजा भोज सिंहासन पर बैठने ही वाला था कि

यकायक सिंहासन बेतरह हिलने लगा। भंवर में फंसी नाव की तरह वह डगमग डगमग होने लगा।

यह दृश्य देखकर दरबारी दंग रह गये।

राजा भोज चौंक गया।

फिर नया तमाशा हो गया।

सिंहासन हिलने से रुकने का नाम न ले रहा था। बराबर बेतरह डगमग हो रहा था कि उस पर बैठ जाना मुश्किल।

राजा भोज पीछे हट गया। कुछ और पीछे हटा, तो पलंग का डगमगाना एकदम रुक गया।

कुछ देर रुककर राजा भोज फिर बढ़ा पर जैसे ही पास गया, पलंग की तरह वह सिंहासन लंबा हो गया और ऊपर नीचे, नीचे ऊपर उठने गिरने लगा।

हैरानी से सब इस दृश्य को देख रहे थे। राजा भोज सिंहासन से और दूर हट गया। उसके और दूर होते ही सिंहासन फिर पहले जैसी अवस्था में आ गया।

राजा भोज महामंत्री की ओर देखने लगा। महामंत्री धीरे से बोला, "राजन् ! क्षमा करें। इस सिंहासन पर बैठने का सुख आपके भाग्य में नहीं है।"

राजा भोज के चेहरे पर उदासी छा गयी। माथे पर सिकुड़नें पड़ गयीं। लगातार बत्तीस दिन के प्रयास के बाद की वह सिंहासन पर बैठने का सुख नहीं पा सका।

पुतलियां गयीं।

अब सिंहासन तंग करने लगा।

"हां, लगता यही है।"

राजा भोज भी मान गया कि वह अब इस सिंहासन पर बैठ नहीं सकता है। उसको सिंहासन ही बैठने न देगा। वह उदास सा खड़ा रहा।

फिर बोला, "महामंत्री..."

"आज्ञा महाराज।"

"अब इस सिंहासन का क्या करना ?"—राजा भोज ने पूछा।

"इसे एक तरफ रख दिया जाये महाराज। इसके अलावा और क्या हो सकता है।"—महामंत्री ने कहा।

"कहां रखवा दिया जाये ?"

"शाही खजाने में रख दें। हीरे जवाहरात जड़ें हैं ही।"

"ठीक है, पर इसके हीरे जवाहरात भी हमारे किस काम के ? इनको निकालने पर हम संकट में पड़ सकते हैं।"—राजा भोज ने कहा। वह एकदम निराश हो गया था।

"हमें करना क्या है ! एक तरफ खजाने में पड़ा रहेगा।

"ठीक है।"

राजा भोज ने स्वीकार कर लिया। वह अपने महल में चला गया और सिंहासन राजघराने के शाही तलघर में रखवा दिया गया।

सिंहासन पर न बैठ पाने के कारण राजा भोज का मन उदास पड़ गया था। उसकी इच्छा अधूरी रह गयी थी। इसी चिंता के कारण उसको सारी रात नींद न आयी। वह करवटें बदलता रहा। सवेरा होने से पहले उसने एक स्वप्न देखा। एक साधु बार-बार उससे कह रहा था, इस सिंहासन को जहां से तूने निकाला है, वहीं पर इसको दफना दो—फिर से रखवा दो। इसी में तेरी भलाई है। यह स्वप्न देखकर राजा भोज ने ब्राह्मणों को बुलाया। उनको सारा स्वप्न बतलाकर उनकी सलाह मांगी।

वह बोले, "राजन् ! आप स्वप्न में दी गयी आज्ञा का पालन करें।"

राजा भोज सहमत हो गया।

उसने शाही तलघर से सिंहासन निकलवाकर उसी स्थान पर फिर से रख देने की आज्ञा दी। अतएव सब राजकर्मचारी वहां गये और उस सिंहासन को दफना आये। सिंहासन की यह बात दूर-दूर तक फैल गयी। गडेरिये के लड़के को जब पता चला कि वहां पर सिंहासन फिर रख दिया गया है, तो उसने उस ओर जाना भी छोड़ दिया। उसके पिता ने एकदम मना कर दिया।

अंतिम संस्कार

रत्नजटित सिंहासन के दफन होने की बात चारों ओर फैल गयी थी। दूर-दूर तक के लोग इस बात को जान गये थे।

कुछ चोरों को इसका पता चला। उन सबके मनमें आया कि सिंहासन निकालकर उसको टुकड़े-टुकड़े कर वह बेच डालें तो अच्छी कमाई हो सकती है। इसी लालच में आकर चोरों का एक गिरोह रात में वहां आया और सबने मिलकर खुदाई शुरू कर दी।

दनादन खुदाई कर सिंहासन निकाला गया और उसे लेकर चोरों का गिरोह भाग खड़ा हुआ।

वह सब एक घने जंगल में आ गये।

सिंहासन रात के अंधकार में चमक रहा था। उसमें जड़े हीरे जवाहरात दमक रहे थे। चोरों के मुंह में पानी आ रहा था। विश्वास था, हीरे जवाहरातों और सिंहासन के टूटे टुकड़ों की अच्छी कीमत मिलेगी। सिंहासन ठोस सोने का बना प्रतीत हो रहा था।

"तोड़ो इसको।"

तीन चार चोर तोड़ने पर लग गये।

कुछ ही हथौड़ों की चोट लगी थी कि यकायक सिंहासन से चिंगारियां सी निकलने लगी। सिंहासन का हथौड़ों की चोटों से कुछ भी न बिगड़ा।

चिंगारियां निकलती देखकर चोर घबरा से गये।

"यह क्या हो रहा है।"

"अरे! इसमें से तो आग निकल रही है।"

"हां! यह है क्या।"

हथौड़ा मारने वाले चोर सिंहासन के पास से हट गये। वह भयभीत हो गये। जाने क्या गड़बड़ है? फिर सब बैठकर विचार करने लगे।

"इसका क्या करना। यह तो टूटता ही नहीं है।"

"हीरे जवाहरात भी नहीं निकल सकते।"

"हां! यही तो मुश्किल है।"—मुखिया बोला—"पूरा का पूरा सिंहासन कौन खरीदेगा?"

सब सोच में पड़ गये।

फिर मुखिया बोला—"एक बात मेरे दिमाग में आयी है। हम सब जौहरियों के वेश में श्रावस्ती चलें। श्रावस्ती बहुत दूर है। वहां तक इस सिंहासन की खबर न गयी होगी। वहां के राजा को यह सिंहासन समूचा का समूचा हम बेच सकते हैं।"

"ठीक है।"—सब मान गये।

उस सिंहासन को अच्छी तरह से ढांककर हाथी पर रखकर चोरों का गिरोह व्यापारी के वेश में श्रावस्ती की ओर चल पड़ा। श्रावस्ती काफी दूरी पर था। बड़ी लम्बी राह थी। चोरों का गिरोह चलता गया और अपनी यात्रा समाप्त कर डेढ़ माह बाद वह श्रावस्ती आया। राजकीय अतिथि गृह में वह सब व्यापारी बनकर ठहर गये। उन्होंने घोषणा की। वह सब जौहरी हैं। श्रावस्ती नरेश से मिलने का आवेदन भी लगा दिया।

अनुमति मिल गयी।

सबके सब श्रावस्ती नरेश के सामने आये।

"अन्नदाता की जय हो।"

"व्यापारियों, तुम्हारा हम स्वागत करते हैं। हमारे लिये क्या लाये हो?"

चोरों के मुखिया ने अत्यन्त आदर और श्रद्धा के साथ कहा, "राजन्! हम आपके लिये एक अत्यन्त सुन्दर सिंहासन लाये है। हम सब जौहरियों ने मिलकर अमूल्य दुर्लभ रत्नों को जड़कर कई सालों की मेहनत के बाद बनाया है। आप जैसे ऐश्वर्यशाली राजाओं के लिये ही हमने उसका निर्माण किया है।

राजा जौहरियों की इस बात पर मुस्कुराकर बोला, "हम सिंहासन देखना चाहेंगे।"

"अवश्य।"

सिंहासन दिखलाने की व्यवस्था दरबार आम में की गयी। जब सिंहासन के आगे लगा परदा हटाया गया, तो सबके मुंह से एक साथ वाह-वाह निकल गया और सबके सब एकटक देखते रह गये। सिंहासन की कला, छटा, अद्भुत निराली थी। सारा दरबार जगमगा रहा था।

श्रावस्ती नरेश मुग्ध हो गये।

"वाह! सुन्दर सिंहासन है।"

"आपके सर्वथा उपयुक्त है।"—चोरों का मुखिया बोला।

"ठीक है। महामंत्री से वार्ता करना।"

मुखिया प्रसन्न हो गया। राजा को सिंहासन पसंद आ गया। मुखिया से सौदा पटाया जाने लगा। पचास लाख स्वर्ण मुद्राओं पर सौदा पक्का हो गया। स्वर्ण मुद्राएं लेकर चोर चले गये। बंटबारा होने के बाद उनका गिरोह टूट गया। श्रावस्ती नरेश ने मुहूर्त निकलवाया और अत्यन्त धूमधाम के साथ वह सिंहासन पर बैठने की तैयारी करने लगे।

ठीक समय पर वह आये।

सिंहासन पर बैठ गये।

सभी दरबारी जयजयकार करने लगे। श्रावस्ती नरेश का सिंहासन चर्चा का विषय बन गया। जब राजा भोज को पता चला तो खुदवाकर देखा। सिंहासन अपनी जगह पर न था। उनको पूरा विश्वास हो गया कि वह सिंहासन उनका ही है, पर श्रावस्ती नरेश किस प्रकार बैठ गये? आश्चर्य के साथ दुःख भी लगा।

ब्राह्मणों ज्योतिषियों से पूछा।

सबने विचार किया।

बोलो, "राजन्! सिंहासन चूंकि बिक गया इस कारण उसका सारा चमत्कार चला गया। सिंहासन भी सोने के बदले पीतल का हो गया हैं। हीरे जवाहरात भी साधारण पत्थर से हो गये हैं। राजा भोज को इस बात से संतोष मिला। उधर श्रावस्ती नरेश जब सिंहासन पर बैठने लगे तो सिंहासन की चमक-दमक कुछ ही दिनों में फीकी पड़ गयी। हीरे जवाहरात भी आभाहीन हो गये। उसकी जांच की गयी तो सब पीतल का निकला। हीरे जवाहरात नकली पत्थर हो गये।

श्रावस्ती नरेश इस चमत्कार पर हैरान हो गये। पूरा परख लेने के बाद ही सिंहासन खरीदा गया था। उनके पारखी झूठे कैसे हो सकते हैं।

फिर ज्योतिषियों से पूछा। गणनाकर ज्योतिषी बोले, "राजन्! यह सिंहासन मुर्दा हो गया है। इसका सत्य चला गया। यह राजा विक्रमादित्य का सिंहासन है, अपवित्र हो गया है। इसका अंतिम संस्कार दें।"

इस सलाह को मानकर श्रावस्ती नरेश ने सिंहासन की जल-समाधि कर दी।

कावेरी नदी में अर्पित कर दिये गये इस सिंहासन की बाद के राजाओं ने खोज करने के बड़े प्रयास किये, पर आज तक नहीं मिला है। पवित्र कावेरी की गोद में शायद आज भी छिपा पड़ा हो।

○

रोचक कथाओं द्वारा ज्ञान नीति की शिक्षा देने की भारत की प्राचीन परम्परा सबमें अनूठी और लोकप्रिय विद्या है। राजा विक्रमादित्य के माध्यम से ३२ पुतलियों ने ऐसी ही कहानियां सुनायी हैं। यह कहानियां काल्पनिक और फंतासी होने के बावजूद अत्यन्त शिक्षाप्रद हैं। संसार की प्रमुख भाषाओं में इनका अनुवाद बड़ा लोकप्रिय हुआ है।

बिना किसी तोड़मरोड़ या संक्षिप्तीकरण के पहली बार इनका सम्पूर्ण रूप से प्रकाशन किया जा रहा है।

पूरेपरिवार का मनोरंजन करने के साथ साथ यह कहानियां अच्छी सीख भी देती हैं। एक बार पढ़कर देखिए तो...

साधना पॉकेट बुक्स